## समाचार दर्पण




website : www.grpgcrampur.com Mail Id : grpg.rmp@gmail.com
Contact No. : 8954391244 / 8954392249

मुद्रक : शंकर प्रेस, रामपुर मो० : 9412251355

सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । असतो मा सद्गमय

# ज्ञान-ज्योति

(संयुक्तांक 2020-2021 एवं 2021-2022)

G20 भारत 2023 INDIA






## राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
## रामपुर (उ०प्र०)

स्थापना वर्ष : 16 जुलाई 1949

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा B श्रेणी (तृतीय चरण) प्रदत्त दिनांक : 8 फरवरी 2019

नीचे से प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) : प्रो० (डॉ०) सहदेव, डॉ० अरुण कुमार, प्रो० (डॉ०) एस. एस. यादव, प्रो० (डॉ०) सीमा तेवतिया, डॉ० जागृति मदान धींगड़ा, प्रो०(डॉ०) दीपा अग्रवाल (प्राचार्य), प्रो० (डॉ०) सै० मो० अरशद रिज़वी, डॉ० जहाँगीर अहमद खान, डॉ० कुसुमलता, डॉ० अजीता रानी, प्रो० (डॉ०) मीनाक्षी गुप्ता।

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) : डॉ० अब्दुल लतीफ़, डॉ०कैश मियाँ, डॉ० हितेन्द्र कुमार सिंह, डॉ० मुदित सिंघल, डॉ० नरेश कुमार, श्री आयुष कुमार, डॉ० ललित कुमार, डॉ० रेखा रानी, श्री घनश्याम सरोज, श्रीमती खुशबू, डॉ० रेशमा परवीन, डॉ० ज़ेबी नाज़, सुश्री इरम नईम, डॉ० माया भारती, श्रीमती आकांक्षा देवी, डॉ० साक्षी त्यागी, श्रीमती दीक्षा, डॉ० दीपमाला सिंह, डॉ० सुमनलता, डॉ० प्रतिभा श्रीवास्तव, डॉ० राजीव पाल।

तृतीय पंक्ति : डॉ० विजेन्द्र सिंह, डॉ० माणिक रस्तोगी, डॉ० प्रदीप कुमार, डॉ० सोमेन्द्र सिंह, डॉ० शैलेन्द्र कुमार, श्री मो० नासिर, डॉ० जुबैर अनीस, डॉ० सुरेन्द्र कुमार गौतम, डॉ० मीनू चौधरी, डॉ० श्याम सिंह।

चतुर्थ पंक्ति : डॉ० राजेश कुमार, डॉ० राजकुमार, डॉ० दुर्गेश सिंह यादव, डॉ० शकील अहमद, डॉ० संजीव कुमार, डॉ० राहुल कुमार

पंचम पंक्ति : डॉ० सुरजीत सिंह, डॉ० प्रमोद कुमार, डॉ० अमजद खान, डॉ० ब्रह्म सिंह।

षष्ट पंक्ति : श्री राजू, डॉ० उपदेश छिम्बाल, डॉ० प्रशान्त द्विवेदी, डॉ० लोकेश कुमार, डॉ० विनय कुमार शर्मा ।

# महाविद्यालय के गौरव



**विवेचना सागर**
विश्वविद्यालय स्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त (स्वर्ण पदक) (बी.एड. 2022)



**अम्बरीन खान**
विश्वविद्यालय स्तर पर सर्वोच्च अंक प्राप्त (स्वर्ण पदक) (बी.एससी. 2022)



**फैजिल खान**
अन्तर्महाविद्यालय स्तरीय वार्षिक क्रीड़ा में पावर लिफ्टिंग प्रतियोगिता में रजत पदक



**शाहबाज अली खान**
अन्तर्महाविद्यालय स्तरीय वार्षिक क्रीड़ा में बेस्ट फिजिक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक एवं राष्ट्रीय स्तर पर पंचम स्थान



**मो. मसरूफ रज़ा**
नेट-जून 2021 (शोधार्थी-हिन्दी)



**विक्रम सैनी**
चयनित-पी.ए.सी 9-07-2021 (हिन्दी विभाग)



**शाहीन बी**
नेट-जून 2021 (शोधार्थी-उर्दू)



**यासीन**
नेट-जून 2022 (शोधार्थी-उर्दू)



**निज़ामुल हसन**
नेट-जून 2022 (शोधार्थी-उर्दू)



**आकाश**
नेट-जून 2021 (हिन्दी विभाग)



**स्नेहा शर्मा**
चयनित-हाईकोर्ट (ग्रुप सी) (बी.एड. विभाग)



**मो. सलमान**
चयनित-मेडिकल एजूकेशन (ग्रुप सी) (बी.एड. विभाग)



**अभिषेक कुमार**
चयनित-रेलवे (बी.एड. विभाग)



**पंकज कुमार**
चयनित-हाईकोर्ट (ग्रुप सी) (बी.एड. विभाग)



**रोहित कुमार**
चयनित-रेलवे (बी.एड. विभाग)



**प्रदीप कुमार**
चयनित-रेलवे (बी.एड. विभाग)

**आनंदीबेन पटेल**
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ – 226 027

9 दिसम्बर 2021

# सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि **राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश** द्वारा वार्षिक पत्रिका **'ज्ञान ज्योति'** के अंक 2020–2021 एवं 2021–2022 का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका छात्र–छात्राओं की प्रतिभा को प्रखरित करने का एक सशक्त माध्यम है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका में ऐसी ज्ञानवर्द्धक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ उन्हें एक नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

**डॉ0 दिनेश शर्मा**

उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

99–100 विधान भवन
लखनऊ

दिनांक : 25/12/2021

## सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर** अपनी वार्षिक पत्रिका **'ज्ञान ज्योति'** के संयुक्तांक 2020–2021 एवं 2021–2022 को प्रकाशित करने जा रहा है।

शिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे निर्धारित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के उदात्त मूल्यों द्वारा संस्कारित करें, जिससे वह देश प्रेम, अनुशासन, सद्भाव, सेवा, त्याग आदि गुणों से परिपूर्ण नागरिक बन सकें।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास से सम्बन्धित पठनीय सामग्री एवं महाविद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की रचनात्मक उपलब्धियों का समावेश होगा।

'ज्ञान ज्योति' के सफल प्रकाशन के लिए कृपया मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

भवदीय

(डॉ0 दिनेश शर्मा)

**राजबाला सिंह**
विधायक (भाजपा)

विधानसभा क्षेत्र–38 मिलक–शाहबाद
रामपुर–244901

ब्लाक–अ, आवास सं0 31, दारूलसफा,
लखनऊ (उ0प्र0)
ब-6 No 675416

कार्यालय : डी–9, औद्योगिक आस्थान,
अजीतपुर, रामपुर (उ0प्र0)
ई–मेल : rajbalabjp@gmail.com
Ph. : 0595-2330121 Mob. : 9759609100, 8887150838

पत्रांक 2549

दिनांक 27-12-21

अत्यंत हर्ष का विषय है कि **राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश** द्वारा वार्षिक पत्रिका **'ज्ञान ज्योति'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने एवं ज्ञान संवर्धन करने का एक सशक्त माध्यम है, मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र–छात्राओं एवं समाज के सुधी पाठकों को ज्ञान की नई दिशा देने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' के सफल प्रकाशन हेतु मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादक मंडल, महाविद्यालय के अन्य स्टाफ एवं छात्र–छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

(राजबाला सिंह)
विधायक

डा० अमित भारद्वाज
निदेशक, उच्च शिक्षा, उ.प्र.

उच्च शिक्षा निदेशालय उ.प्र.
सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001
0532-2623874 (का०)
0532-2423919 (फैक्स)
ई-मेल : infodheup21@gmail.com

## सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान-ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास हेतु आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नई उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका "ज्ञान-ज्योति" में छात्र-छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने वाले ज्ञानोपयोगी लेख प्रकाशित होंगे। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकानाएँ।

(डॉ० अमित भारद्वाज)

प्रो० (डॉ०) संध्या रानी शाक्य

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी,
बरेली एवं मुरादाबाद मण्डल
बरेली
दूरभाष 0581-2510128
941029915
दिनांक 09.06.2023

# सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि **राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर** अपनी पत्रिका **'ज्ञान ज्योति'** का संयुक्तांक 2020-21 एवं 2021-22 का प्रकाशन करने जा रहा है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसे तथ्यों व लेखों को स्थान दिया जायेगा, जो सभी पाठकों के लिये उपयोगी होंगे। इस दिशा में महाविद्यालय तथा सम्पादक मण्डल का उत्साहवर्धक प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवनिष्ठ

संध्या रानी 28/01/2023

प्रो० (डॉ० संध्या रानी शाक्य)

**प्रोफेसर (डॉ०) पी० के० वार्ष्णेय**
प्राचार्य (निवर्तमान)
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामपुर (उ०प्र०)

## सन्देश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर ज्ञान-ज्योति पत्रिका का संयुक्तांक (2020-2021 एवं 2021-2022) प्रकाशित करने जा रहा है।

शिक्षक, शिक्षार्थी अभिभावक और संस्था शिक्षा के चार महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं। शिक्षक की कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुशासन, शिक्षार्थी का परिश्रम व लगन, अभिभावक का सहयोग तथा संस्था की शुचिता एवं पारदर्शिता पर ही शिक्षा की गरिमा और प्रगति निर्भर करती है। जिस देश की शिक्षा में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों को विकसित करने और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की क्षमता होती है, वहीं राष्ट्र सच्चे अर्थ में विश्व गुरु बनने के पथ पर अग्रसर होता है।

वैश्विक स्तर पर वर्तमान में बदलते परिवेश के अनुरूप ही भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शुरुआत हो चुकी है। यह कटु सत्य है कि हमारे देश का वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक ताना-बाना बदल रहा है। शिक्षा, साहित्य व विज्ञान की प्रगति किसी भी समाज व राष्ट्र को गहराई से प्रभावित करती है। यह उसके विकास की दशा व दिशा को तय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संगीत, खेल, योग एवं व्यावसायिक शिक्षा को न केवल सहगामी पाठयचर्या में सम्मिलित किया गया है, अपितु इसे मुख्य पाठयक्रम का हिस्सा बनाते हुए समसामयिक परिवेश के अनुकूल बनाने का प्रयास भी किया गया है। बालकों के लिए प्राथमिक स्तर की शिक्षा का माध्यम स्थानीय एवं मातृभाषा में होना और उच्च शिक्षा में मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई का माध्यम हिंदी को बनाना हमारे देश के विद्यार्थियों के लिए भविष्य का पथ प्रशस्त करेगा। इससे हिंदी भाषा में गहरी समझ रखने वाले विद्यार्थी चिकित्सा, विज्ञान-प्रौद्योगिकी एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकेंगे। भारत के 70 प्रतिशत भाग में निवास करने वाले विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का सुअवसर प्राप्त होगा। भारत और इंडिया के बीच की सामाजिक, आर्थिक व वैचारिक दूरी कम होगी। कौशल विकास केंद्रित शिक्षा युवाओं को प्रदान करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अहम हिस्सा है, इससे प्रत्येक विद्यार्थी अपने रोजगारपरक कौशल को प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर होगा। मेरा प्रिय विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों से आह्वान है कि वे कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण, ईमानदारी एवं सेवा भाव से एक दूसरे से ज्ञानार्जन कर इस सुअवसर का लाभ उठाएँ और समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में सहयोग प्रदान करें।

**प्रोफेसर (डॉ०) पी० के० वार्ष्णेय**

## प्राचार्य की कलम से...

गुरु कुम्हार सिसु कुंभ है, गढ़ि- गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

इसी संकल्प, साधना एवं संवेदना से संपृक्त होकर राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर की स्थापना 16 जुलाई, 1949 ई० में हुई थी। यह उत्तर प्रदेश का प्रथम राजकीय महाविद्यालय है। तब से लेकर अब तक यह महाविद्यालय न जाने कितने प्रतिभाशाली अमूल्य रत्न समाज व राष्ट्र को सेवार्थ समर्पित कर चुका है, जो यत्र-तत्र अपनी ज्ञान-रश्मियों से समाज व राष्ट्र को उद्दीप्त कर रहे हैं एवं शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, खेल, प्रशासन, राजनीति एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने कहा था - शिक्षा ही किसी व्यक्ति, राष्ट्र व समाज का सम्बल होती है। इसी पर उसकी उन्नति और अवनति निर्भर करती है। अतः शिक्षा को ऐसे ज्ञान एवं कौशल से युक्त होना चाहिए जो मनुष्य को भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से समुन्नत कर सके। चारित्रिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सुदृढ़ कर स्वावलंबी बना सके। सार्थक शिक्षा वही है जो आदर्शवाद, यथार्थवाद एवं समन्वयवाद की स्थापना करने में पूर्ण रूप से समर्थ हो सके। इसमें विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास एवं राष्ट्र के नवनिर्माण की संकल्पना सन्निहित होनी चाहिए।

जन्म के समय बालक का मन एवं मस्तिष्क कोरे कागज की भाँति होता है। इसमें मानवीय प्रेम, समाज सेवा, वैश्विक चेतना, नैतिक मूल्य एवं विश्व बंधुत्व का चित्र शिक्षा के बहुरंगी विचारों द्वारा ही उकेरा जाता है। बालकों में आत्म-विकास, आत्म-त्याग की भावना, आत्म-नियंत्रण, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान एवं अलौकिक सद्गुणों को विकसित करने का दायित्व श्रेष्ठ शिक्षा व शिक्षक पर ही निर्भर करता है।

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर "उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" की पुनीत संकल्पना के साथ समाज व राष्ट्र की अनवरत सेवा हेतु प्रतिबद्ध है।

प्रो० (डॉ०) दीपा अग्रवाल
प्राचार्य
राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामपुर, उ०प्र०

## सम्पादकीय

मनुष्य के जीवन में शिक्षा एवं ज्ञान ऐसे तत्त्व हैं जो बुद्धि, विवेक एवं कर्तव्य का बोध कराते हैं जिससे मनुष्य भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से विकास के पथ पर अग्रसर होता है। यही वह तत्त्व है जिससे मनुष्य सृष्टि की सर्वोत्तम रचना कहलाता है। ज्ञान और विज्ञान को जीवन में समाहित करके सफलता की नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

शौक्षिक संस्थाएँ छात्र/छात्राओं के हित के लिये पत्रिकाओं का प्रकाशन करती हैं ताकि उनमें छिपी हुयी प्रतिभा उभर सके। चन्द्रमा के साउथ पोल पर भारत ने चन्द्रयान-3 उतार कर खगोल शास्त्र एवं अन्तरिक्ष को अपनी मुट्ठी में करके इतिहास रच दिया। पूरे विश्व में इसरो के वैज्ञानिकों की इस सफलता ने विश्व पटल पर भारत के ज्ञान-विज्ञान की उपस्थिति दर्ज कराई है। जिससे भारत के हर युवा छात्र/छात्राओं के मन में विज्ञान के क्षेत्र में बहुत आगे तक जाने का सपना जागृत हुआ है क्योंकि हम चन्द्रमापर ही नहीं रुके, सूर्य की ओर भी हमारी यात्रा प्रारम्भ हो चुकी है।

इस समय विश्व के बहुत से देश युद्ध में लिप्त हैं तो विश्व शान्ति दूत के रूप में भारत ने G-20 का सफल आयोजन एवं इसकी अध्यक्षता करके भारत ने विश्व गुरु बनने की ओर भी कदम बढ़ा दिया है और यह संदेश दिया है कि यदि दृढ़ निश्चय एवं परस्पर प्रयास किया जाये तो सफलता का शीर्ष छुआ जा सकता है क्यूँकि...

सितारों से आगे जहाँ और भी है।

अभी इश्क़ के इम्तिहाँ और भी हैं।

छात्र/छात्राओं के इन्हीं सपनों को साकार करके धरातल पर उतारने का प्रयास राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' का यह संयुक्तांक 2020-21 एवं 2021-2022 करेगी। इस संयुक्तांक में छात्र/छात्राओं के चहुमुखी विकास हेतु उन्हीं की रचनाओं एवं लेखों को मौलिक रूप से प्रकाशित किया गया है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के रचनाकारों अर्थात छात्र/छात्राओं को बधाई के साथ प्राचार्य प्रो० (डॉ०) दीपा अग्रवाल का आभार पूरे सम्पादक मण्डल की ओर से व्यक्त करता हूँ क्योंकि उनके कुशल निर्देशन एवं प्रेरणा से यह प्रकाशन कार्य सफल हो पाया। साथ ही सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से यह कार्य सम्भव हो सका।

प्रोफेसर (डॉ०) सैय्यद मो० अरशद रिज़वी
प्रधान सम्पादक

## मुख्य शास्ता की कलम से...

अनुशासन वह नियम तथा संयम है जो प्रकृति के कण-कण में व्याप्त है। यदि सूर्य अपना अनुशासन छोड़ दे, वायु अपनी शीतलता त्याग दे, जल अपनी संतृप्तता त्याग दे और प्रकृति अपना नियम एवं संयम छोड़ दे तो न केवल मानव जीवन अपितु सृष्टि का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा । विद्यार्थी जीवन में भी सफल होने का सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र अनुशासन ही है। अनुशासन के अभाव में विद्यार्थी जीवन बिना पतवार के नाव की भाँति है जो सदैव दिशाहीन रहती है और बीच भँवर में कहीं भी डूब सकती है अथवा उसे कोई सुनिश्चित किनारा नहीं मिल सकता। अनुशासन विद्यार्थियों के उत्तम आचरण को जीवन में उतारने का सर्वोत्तम माध्यम है। यह विद्यार्थी को मनुष्यता की ओर ले जाने का सहज एवं सरल मार्ग है। व्यक्तिगत सामाजिक एवं प्राकृतिक उन्नति का एकमात्र साधन है।

अनुशासन एक आत्मिक प्रक्रिया है, इसे किसी बाहरी दबाव अथवा दंड से उत्पन्न नहीं किया जा सकता। क्योंकि दमनात्मक अथवा दंडात्मक अनुशासन स्थाई नहीं हो सकता और न ही वह लोक कल्याणकारी हो सकता है।

वर्तमान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, इंटरनेट तथा मोबाइल के परिवेश में विद्यार्थियों को और अधिक आत्मानुशासन की आवश्यकता है। वर्तमान व्यावसायिक शिक्षा के परिवेश में मूल्यपरक शिक्षा का ह्रास हो रहा है। इंटरनेट, मीडिया, यू-ट्यूब , फेसबुक, इंस्टाग्राम के द्वारा अनेक प्रकार के उपयोगी एवं अनुपयोगी तथ्य हमारे समक्ष परोसे जा रहे हैं। संयुक्त परिवार एकल परिवार की ओर तेजी से बिखर रहे हैं। समाज में जाति-पाँति, अमीर-गरीब, उच्च-निम्न , धार्मिक एवं सांप्रदायिकता का वातावरण चारों ओर व्याप्त है। ऐसे परिवेश में विद्यार्थी को आत्मानुशासन के द्वारा विवेक से सही तथ्यों का चुनाव करना बेहद चुनौती पूर्ण है। उन्हें संत कबीर की यह सूक्ति कि-''सार-सार को गहि रहै, थोथा देय उड़ाय" को सदैव स्मरण रखना होगा ।

समस्त मंगलयी शुभकामनाओं के साथ।

डॉ० जागृति मदान धींगड़ा
मुख्य शास्ता
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

# संयुक्त सम्पादक के विचार....

प्रेरणादायक लेखकों में से एक शिव खेड़ा का यह कथन पूर्णतः सत्य है कि 'महान व्यक्ति कोई अलग कार्य नहीं करते अपितु अलग तरह से करते हैं ।' सफलता और असफलता के बीच का अंतर बहुत अधिक नहीं होता, इस बात की महत्ता को सफल अथवा असफल दो धावकों के कुछ सेकेंड के क्षणिक समय के अन्तराल से अथवा प्रतियोगिता में सफल अथवा असफल विद्यार्थियों के बीच के कुछ अंकों के अंतराल से समझा जा सकता है । विशेष बात यह भी है कि जिस काम में सफल होने की संभावना अधिक होती है, उसमें हम सफल होते हैं किंतु जिस काम में असफलता की संभावना अधिक होती है उसको करने पर हम श्रेष्ठ होते हैं । दृढ़ आत्मविश्वास, असीम धैर्य के साथ गहन अध्ययन-अध्यापन की असाधारण रणनीति, लक्ष्य के प्रति सकारात्मक सोच एवं समर्पण, कुशल और कठिन परिश्रम, आत्म-अनुशासन, लक्ष्य-केंद्रित प्रयास एवं तैयारी की निरंतरता ही वह सूत्र है जो विद्यार्थियों को न केवल सफल बनाते हैं अपितु महानता के उत्तुंग शिखर पर ले जाकर बैठा देते हैं ।

विद्यार्थी का जीवन केवल फूलों की सेज नहीं अपितु यह कांटों की सेज है । विद्यार्थी जीवन में संघर्ष ही संघर्ष है । जो इन संघर्षों से दो-दो हाथ करता है वही विजेता होता है । समसामयिक संदर्भ में संघर्ष का स्वरूप बदल रहा है । अब बदलते युग एवं परिवेश के अनुकूल विद्यार्थियों को अपने अध्ययन, प्राध्यापकों को अपने अध्यापन, संस्थाओं को अपने पाठ्यक्रम एवं व्यवस्था को पाठ्यक्रम के तौर तरीकों में परिवर्तन करना अत्यंत आवश्यक है । इतिहास साक्षी है कि जिसने युग एवं परिवेश के अनुकूल स्वयं को नहीं बदला, स्वयं में समयानुकूल सामर्थ्य विकसित नहीं किया, बदली हुई परिस्थितियों में वह विनष्ट हो गया और इतिहास का अंधकारमय अतीत बनकर रह गया ।

एक बात पूर्णतः सत्य है कि दिन-रात मिलाकर सभी को 24 घंटे ही मिलते हैं , इन्हीं में से जो यथा समय अपने कार्य को कुशलता से संपादित करते हैं उनके पास पर्याप्त समय होता है और जो व्यक्ति अपने समय का व्यवस्थित सदुपयोग नहीं करते, उन्हें सदैव समय की कमी लगी रहती है । वे समाज व राष्ट्र का हित तो क्या, स्वयं के हित के लिए भी समय नहीं निकाल सकते ।

अंततः सुधी विद्यार्थियों से मेरा यही आह्वान है कि सहस्रों मील की सफलता की यात्रा को पूरा करने के लिए पहला कदम तो बढ़ाना ही पड़ता है । इसलिए भूत के अनुभव से सीख एवं भविष्य की कल्पना से अभिप्रेरणा लेकर वर्तमान पर पूर्णतः ध्यान केंद्रित करें और महत्त्वाकांक्षा का पंख लगा कर सफलता के शिखर की ओर प्रस्थान करें ।

ज्ञान ज्योति-पत्रिका में संकलित कविता, लेख, महत्त्वपूर्ण विचार तथा सूक्तियाँ आदि विद्यार्थियों के महत्त्वाकांक्षा रूपी पंख को मजबूत बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम है । उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ .....

डॉ० अरुण कुमार
संयुक्त सम्पादक

# कार्यालय स्टॉफ

नीचे से प्रथम पंक्ति : श्री राजकुमार, श्रीमती अज़ीज़ा बानो, श्रीमती कौसर जहाँ, श्री पी० एस० आनन्द (कार्यालय अधीक्षक), प्रो० (डॉ०) दीपा अग्रवाल (प्राचार्य), श्री श्याम सिंह (उप पुस्तकालयाध्यक्ष), इन्दुबाला, महजबीं।

द्वितीय पंक्ति : श्री क़लन्दर, श्री लाल सिंह, अम्मान शाकिर, श्री विक्की सैनी, श्री विनीत कुमार सक्सेना, श्री सुधीर कुमार, श्री भागमल सैनी, श्री अशोक कुमार (द्वितीय), श्री जय किशन, श्री अशोक कुमार (प्रथम), श्री राम अवतार, श्री फरीद, श्री उपदेश।

तृतीय पंक्ति : श्री उमेश।

# फोटो गैलेरी– संकाय/समितियाँ

## सम्पादक मण्डल

## वाणिज्य संकाय

## समस्त विभागाध्यक्ष

## बी.एड. संकाय

## कला संकाय

## आई.क्यू.ए.सी. समिति

## विज्ञान संकाय

## शास्ता मण्डल

## राजभाषा परिषद्

## क्रीड़ा समिति

## रेमिडियल कोचिंग (नेट-स्लैट) समिति

## छात्र-छात्रा उत्पीड़न (रैगिंग) उन्मूलन समिति

## राष्ट्रीय सेवा योजना समिति

## पुरातन छात्र समिति

## रोवर्स/रेंजर्स समिति

## एन.सी.सी.

# वार्षिक गतिविधियाँ–2020–2021 एवं 2021–2022

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

## युवा महोत्सव (उमंग)

## तमसीली मुशायरा

## वार्षिकोत्सव

## राजभाषा परिषद्

## एन. सी. सी.

## राष्ट्रीय सेवा योजना

## रोवर्स–रेंजर्स

## वार्षिक क्रीड़ा

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

# ज्ञान ज्योति पत्रिका

संयुक्तांक 2020–2021 एवं 2021–2022

## अनुक्रमणिका


| क्रम सं० | विषय | पृष्ठ सं |
|---|---|---|
| 1. | नैक सर्टिफिकेट | I |
| 2. | विकास के क्रमिक चरण – स्थापना वर्ष | 1 |
| 3. | परीक्षाफल (संकायवार) | 2 |
| 4. | गौरवमीय प्राचार्यों का कार्यकाल | 8 |
| 5. | वार्षिक आख्या | 10 |
| 6. | महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएँ | 19 |
| 7. | परिषदीय (विभागीय) प्रतियोगिताएँ | 27 |
| 8. | प्राध्यापकों की अकादमिक उपलब्धियाँ | 34 |
| 9. | महाविद्यालय में कार्यरत् प्राध्यापकों की सूची – विभागवार | 40 |
| 10. | महाविद्यालय में कार्यरत् शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की सूची | 41 |
| 11. | खण्ड – ● हिन्दी | 42 |
| | ● अंग्रेजी | 83 |
| | ● उर्दू | |

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

**NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL**

*An Autonomous Institution of the University Grants Commission*

# Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Government Raza Post Graduate College
Khushro Bagh Road, Rampur,
affiliated to Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Uttar Pradesh as
Accredited
with CGPA of 2.44 on seven point scale
at B grade
valid up to February 07, 2024

Date : February 08, 2019

S. C. Sharma
Director

EC(SC)/35/RAR/UPCOGN12046

NAAC 3rd Cycle B Grade

# राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

विकास के क्रमिक चरण

स्थापना तिथि – 16 जुलाई 1949

परिसर क्षेत्रफल – 52,000 वर्ग मी., आच्छादित क्षेत्रफल – 11,412 वर्ग मी.

प्लिंथ क्षेत्रफल – 12,721 वर्ग. मी., चारदीवारी परिमाप – 855.60 मी.

| | विषय (पद) | स्नातक | परास्नातक | विषय (पद) | स्नातक | परास्नातक |
|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रम | कला संकाय | | | (ख) वाणिज्य संकाय | | |
| 1 | हिन्दी (6) | 1949 | 1969 | वाणिज्य (6) | 1942 | 1973 |
| 2 | अंग्रेज़ी (7) | 1949 | 1968 | (ग) विज्ञान संकाय | | |
| 3 | उर्दू (3) | 1949 | 1968 | 1 भौतिक वि. (6) | 1949 | 1968 |
| 4 | फारसी (1) | 1949 | – | 2 रसायन वि. (10) | 1949 | 1968 |
| 5 | अर्थशास्त्र (5) | 1949 | 1968 | 3 गणित (4) | 1949 | 1973 |
| 6 | भूगोल (3) | 1949 | 1978 | 4 वनस्पति वि. (8) | 1958 | 1973 |
| 7 | इतिहास (3) | 1949 | 1969 | 5 जन्तु वि. (8) | 1958 | 1973 |
| 8 | राज. शा. (4) | 1949 | 1969 | 6 औद्यो. रसायन (–) | 1999 | – |
| 9 | मनोविज्ञान (7) | 1964 | – | (घ) शिक्षा संकाय | | |
| 10 | संस्कृत (1) | 1981 | – | बी.एड. (8) | 1973 | – |
| 11 | दर्शन शा. (1) | 1981 | – | | | |
| 12 | समाज शा. (1) | 1979 | – | | | |
| 13 | शा. शिक्षा (1) | 2018 | – | | | |

| | |
|---|---|
| • यू.जी.सी, द्वारा 2(F) /12(B) में सम्बद्धता | 1972 से पूर्व |
| • नैक द्वारा प्रत्यायन | 8 फरवरी 2019, B श्रेणी (तृतीय चरण) |
| • योजना राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाईयों की स्थापना | |
| • एन.सी.सी. यूनिट की स्थापना | 1967 |
| • रोवर्स–रेंजर्स यूनिट की स्थापना | 1992 |
| • "इग्नू अध्ययन" – केन्द्र की स्थापना | 2007 |

## राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

### संकायवार परीक्षाफल (प्रारूप –1)

### परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के नाम

### परास्नातक स्तर (कला संकाय)

### सत्र 2020–21

किसी भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम छात्र, छात्राओं एवं अभिभावकों को गर्व का अनुभव कराता है। यह परीक्षा परिणाम उनकी अद्‌भुत प्रतिभा, लगन एवं कठिन परिश्रम का प्रतिफल होता है। महाविद्यालय के प्राध्यापकों का समुचित मार्गदर्शन विद्यार्थियों का भविष्य निर्धारित करता है।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **समग्र सर्वोच्च** | | | | |
| **हिन्दी** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | आकाश | श्री रामलाल | 659/1000 | 65.90% |
| **अंग्रेज़ी** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | आयुषी तोमर | श्री रामेन्द्र तोमर | 384/600 | 64.00% |
| **उर्दू** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | कु. हिफ़्ज़ा | श्री परवेज खान | 706/900 | 78.44% |
| **अर्थशास्त्र** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | कु. इकरा अतहर | श्री अतहर खान | 649/1000 | 64.90% |
| **इतिहास** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | कु. अंकिता सिंह | श्री बलराम सिंह | 605/900 | 67.20% |
| **मनोविज्ञान** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | शाहीन | श्री अनीस अहमद | 665/1000 | 66.50% |
| **भूगोल** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | कु. रूपाली राय | श्री अश्विनी राय | 695/1000 | 69.50% |

### सत्र् 2021–22

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **समग्र सर्वोच्च** | | | | |
| **हिन्दी** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | उज़्मा | शहिद अली | 646/1000 | 64.6% |
| **उर्दू** | – | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **अंग्रेजी** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | रुबीना बी | नाथू अहमद | 613/1000 | 61.3% |
| **इतिहास** | – | | | |
| **भूगोल** | – | | | |
| **अर्थशास्त्र** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | कु. सोनाली नेगी | | 687/1000 | 68.7% |
| **मनोविज्ञान** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | महरीन मंसूर | मंसूर अली | 762/1000 | 76.2% |
| **राजनीति विज्ञान** | | | | |
| एम.ए. उत्तरार्द्ध | जितेन्द्र कुमार | सुखलाल | 559/900 | 62.11% |
| स्नातक स्तर | बी.ए. प्रथम वर्ष | प्रोन्नत | | |

## विज्ञान संकाय (2020–21)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **समग्र सर्वोच्च** | | | | |
| **रसायन विज्ञान** | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | अली | श्री ज़मीरुद्दीन | 813/1200 | 67.75% |
| **भौतिक विज्ञान** | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | अमनदीप सिंह | श्री ओमप्रकाश | 931/1200 | 77ण्58: |
| **जन्तु विज्ञान** | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | निलोफर खान | श्री शाकिर खान | 867/1200 | 72ण्25: |
| **वनस्पति विज्ञान** | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | महक खान | श्री फिरोज मोहम्मद खान | 1074/1400 | 76.71% |
| **गणित विज्ञान** | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | सोनल अरोरा | श्री महेन्द्र कुमार अरोरा | 633/1000 | 63.30% |
| **वाणिज्य विज्ञान** | | | | |
| एम. कॉम उत्तरार्द्ध | दीक्षा शर्मा | श्री प्रकाश चन्द्र शर्मा | 903/1300 | 69.46% |



☞ सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है। – पं. मोतीलाल नेहरू

## विज्ञान संकाय (2021–22)

**रसायन विज्ञान**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | रिफा खान | श्री अत्तन खान | 872/1200 | 72.66% |

**भौतिक विज्ञान**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | अलीमा खान | श्री उबेद खान | 876/1200 | 73.00% |

**गणित**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | सहर मेहदी | श्री यावर हुसैन | 820/1200 | 82.00% |

**जन्तु विज्ञान**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | मलीहा खान | श्री अजहर हसन खान | 926/1400 | 77.16% |

**वनस्पति विज्ञान**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | अनुप्रिया श्रीवास्तव | श्री मुकेश श्रीवास्तव | 981/1400 | 70.00% |

**गणित**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | सहर मेहदी | श्री यावर हुसैन | 820/1200 | 82.00% |

## स्नातकोत्तर स्तर (कला संकाय)
## सत्र 2020–21 (प्रारूप–2)

| कक्षा | विभाग | कुल छात्र | सम्मिलित छात्र | उत्तीर्ण | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| एम.ए. द्वितीय | हिन्दी | 17 | 16 | 16 | 100% |
| एम.ए. द्वितीय | अंग्रेजी | 78 | 65 | 65 | 100% |
| एम.ए. द्वितीय | उर्दू | – | | | |
| एम.ए. द्वितीय | राजनीति विज्ञान | 39 | 39 | 39 | 100% |
| एम.ए. द्वितीय | इतिहास | – | – | | |
| एम.ए. द्वितीय | अर्थशास्त्र | 28 | 28 | 28 | 100% |
| एम.ए. द्वितीय | भूगोल | 14 | 12 | 12 | 100% |
| एम.ए. द्वितीय | मनोविज्ञान | 10 | 10 | 10 | 100% |



☞ स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम अपने आप कर लेता है। – विनोबा

## स्नातकोत्तर स्तर (कला संकाय)
## सत्र 2021–22 (प्रारूप–2)

| कक्षा | विभाग | कुल छात्र | सम्मिलित छात्र | उत्तीर्ण | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| एम.ए. प्रथम | हिन्दी | 28 | 28 | 28 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | हिन्दी | 26 | 26 | 26 | 100 |
| एम.ए. प्रथम | अंग्रेज़ी | 81 | 79 | 76 | 96.26 |
| एम.ए. द्वितीय | अंग्रेज़ी | 70 | 69 | 69 | 100 |
| एम.ए. प्रथम | उर्दू | अप्राप्त | | | |
| एम.ए. द्वितीय | उर्दू | 83 | 83 | 83 | 100 |
| एम.ए. प्रथम | राजनीति विज्ञान | 69 | 58 | 58 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | राजनीति विज्ञान | 37 | 37 | 36 | 97.29 |
| एम.ए. प्रथम | इतिहास | 56 | 55 | 55 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | इतिहास | 55 | 54 | 53 | 98.15 |
| एम.ए. प्रथम | अर्थशास्त्र | 21 | 18 | 18 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | अर्थशास्त्र | 20 | 16 | 16 | 100 |
| एम.ए. प्रथम | भूगोल | 13 | 13 | 13 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | भूगोल | 12 | 12 | 12 | 100 |
| एम.ए. प्रथम | मनोविज्ञान | 14 | 14 | 14 | 100 |
| एम.ए. द्वितीय | मनोविज्ञान | 06 | 06 | 06 | 100 |

## विज्ञान संकाय (2020–2021)

| कक्षा | विभाग | कुल छात्र संख्या | सम्मिलित छात्र संख्या | उर्त्तीण संख्या | अनुत्तीर्ण | उर्त्तीण प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | रसायन विज्ञान | 26 | 26 | 16 | 10 | 61.54% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | भौतिक विज्ञान | 20 | 20 | 20 | 00 | 100% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | गणित | 31 | 30 | 18 | 12 | 60% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | जन्तु विज्ञान | | | | | |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | वनस्पति विज्ञान | | | | | |

(2021–22)

| कक्षा | विभाग | कुल छात्र संख्या | सम्मिलित छात्र संख्या | उर्त्तीण संख्या | अनुत्तीर्ण | उर्त्तीण प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|
| एम.एससी. पूर्वार्द्ध | रसायन विज्ञान | 30 | 28 | 26 | 02 | 92.8% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | रसायान विज्ञान | 33 | 32 | 32 | 00 | 100% |
| एम.एससी. पूर्वार्द्ध | भौतिक विज्ञान | 30 | 26 | 25 | 01 | 96.15% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | भौतिक विज्ञान | 32 | 29 | 28 | 01 | 96.55% |
| एम.एससी. पूर्वार्द्ध | गणित | 32 | 31 | 24 | 07 | 77.42% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | गणित | 35 | 34 | 34 | 00 | 100% |
| एम.एससी. पूर्वार्द्ध | जन्तु विज्ञान | 29 | 29 | 28 | 01 | 96.55% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | जन्तु विज्ञान | 27 | 27 | 27 | 00 | 100% |
| एम.एससी. पूर्वार्द्ध | वनस्पति विज्ञान | 32 | 30 | 30 | 00 | 100% |
| एम.एससी. उत्तरार्द्ध | वनस्पति विज्ञान | 32 | 30 | 30 | 00 | 100% |

## वाणिज्य संकाय (प्रारूप–2) 2021–22

| कक्षा | कुल छात्र संख्या | सम्मिलित छात्र संख्या | उर्त्तीण संख्या | अनुत्तीर्ण | उर्त्तीण प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| एम.कॉम द्वितीय | 80 | 79 | 75 | 4 | 94.95% |

## स्नातक स्तर (प्रारूप–1)

### कला संकाय

### सत्र 2020–21

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.ए. प्रथम वर्ष | – | | | |
| बी.ए. द्वितीय वर्ष | हिफ़्ज़ा | श्री महफूज अली खान | 289/400 | 72.25% |
| बी.ए. तृतीय वर्ष | – | | | |

### वाणिज्य संकाय

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.कॉम. प्रथम वर्ष | – | | | |
| बी. कॉम द्वितीय वर्ष | – | | | |
| बी.कॉम तृतीय वर्ष | अदीला परवीन | आकिल अहमद | 1339/2000 | 66.95% |



☞ जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते। – वेदव्यास

## विज्ञान संकाय

**विज्ञान संकाय (गणित वर्ग)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एससी. द्वितीय | मो. साक़िब | | 332/450 | 73.77% |
| बी.एससी. तृतीय | दीपाली सागर | | 326/450 | 72.4% |

**विज्ञान संकाय (जीव विज्ञान)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एससी. द्वितीय | फरहा बी | | 367/450 | 81.5% |
| बी.एससी. तृतीय | मुस्कान खान | श्री जाफ़र खान | 366/450 | 81.33% |

**समग्र सर्वोच्च**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विश्वविद्यालय टॉपर | अंबरीन खान | श्री दिल्लन ख़ान | 1109/1350 | 82.19% |

**बी.एड. (2020–21)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एड्. प्रथम वर्ष | विवेचना सागर | श्री प्रेमदास सागर | 216/220 | 98.1% |
| बी.एड्. द्वितीय वर्ष | रोहित सिंह तोमर | श्री तिलकराज सिंह तोमर | 574/700 | 82% |

**समग्र सर्वोच्च**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एड्. द्वितीय वर्ष | प्रशान्त राघव | श्री वीरेन्द्र सिंह राघव | 1149/1400 | 82% |

**बी.एड. (2021–22)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एड्. प्रथम वर्ष | कु. स्नेहा शर्मा | श्री आर.के. शर्मा | 551/700 | 78.7% |
| बी.एड्. द्वितीय वर्ष | कु. विवेचना सागर | श्री प्रेमदास सागर | 598/700 | 85.42% |

**समग्र सर्वोच्च**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.एड्. द्वितीय वर्ष | कु. विवेचना सागर | श्री प्रेमदास सागर | 1219/1400 | 87.42% |

**कला संकाय प्रारूप – 2 (2021–22)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बी.ए. प्रथम वर्ष | प्रोन्नत | | | |
| बी.ए. द्वितीय वर्ष | **कुल छात्र संख्या** 784 | **सम्मिलित छात्र संख्या** 784 | **उत्तीर्ण छात्र** 757 | **उत्तीर्ण प्रतिशत** 96.55 |
| बी.ए. तृतीय वर्ष | **कुछ छात्र संख्या** 792 | **सम्मिलित छात्र संख्या** 760 | **उत्तीर्ण छात्र** 719 | **उत्तीर्ण प्रतिशत** 94.60% |

**विज्ञान संकाय (गणित वर्ग) प्रारूप– 2 (2021–22)**

| कक्षा | कुल छात्र संख्या | सम्मिलित छात्र संख्या | उत्तीर्ण संख्या | अनुत्तीर्ण | उत्तीर्ण प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| बी.एससी. द्वितीय (गणित वर्ग) | 145 | 143 | 139 | 04 | 97.2% |
| बी.एससी. तृतीय (गणित वर्ग) | 79 | 79 | 79 | 01 | 98.7% |
| बी..एससी. द्वितीय (जीव विज्ञान) | 322 | 318 | 307 | 11 | 96.5% |
| बी.एससी. द्वितीय (जीव विज्ञान) | 233 | 232 | 231 | 01 | 99.5% |

**वाणिज्य संकाय (गणित वर्ग) प्रारूप– 2 (2021–22)**

| कक्षा | कुल छात्र संख्या | सम्मिलित छात्र संख्या | उत्तीर्ण संख्या | अनुत्तीर्ण | उत्तीर्ण प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| बी.कॉम तृतीय | 297 | 295 | 284 | 11 | 95.62% |

# राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

## महाविद्यालय के गौरवमयी प्राचार्यों का कार्यकाल

| क्रम | नाम | कार्यालय |
|---|---|---|
| 1 | श्री अब्दुल शकूर | 1949 – 1955 |
| 2 | डॉ. पी. एन. कुलश्रेष्ठ | 1955 – 1958 |
| 3 | श्री जे. पी. अग्रवाल | 1958 – 1963 |
| 4 | डॉ. ओ. बी. एल. कपूर | 1963 – 1967 |
| 5 | डॉ. के. डी. उपाध्याय | 1967 –1968 |
| 6 | डॉ. के. एन. श्रीवास्तव | 1968 – 1969 |
| 7 | डॉ. बी. एन. गांगुली | 1969 – 1970 |
| 8 | डॉ. माया राम | 1970 – 1971 |
| 9 | डॉ. बी. एन. गिगरस | 1971 – 1972 |
| 10 | डॉ. माया राम | 1972 – 1977 |
| 11 | डॉ. ओंकार नाथ श्रीवास्तव | 1977 – 1979 |
| 12 | डॉ. चौधरी जे. एन. सक्सेना | 1979 – 1983 |
| 13 | डॉ. ओ. पी. शर्मा | 1983 – 1986 |
| 14 | डॉ. सतीश बाबू अग्रवाल | 1986 – 1987 |
| 15 | डॉ. बी. बी. एस. रायज़ादा | 1987 – 1987 |
| 16 | प्रो. आर. के. रस्तोगी | 1987 – 1989 |
| 17 | प्रो. एस. आर प्रजापति – (कार्यवाहक) | 1989 – 1991 |
| 18 | प्रो. आर. के. कोहली | 1991 – 1993 |
| 19 | प्रो. जी. बी. उप्रेती | 1993 – 1998 |
| 20 | डॉ. आर. के. बसलस | 1998 – 2000 |
| 21 | डॉ. सतीश कुमार | 2000 – 2004 |
| 22 | प्रो. आई. सी. गुप्ता – (कार्यवाहक) | 2004 – 2005 |
| 23 | डॉ. एन. पी. तिवारी | 2005 – 2005 |
| 24 | डॉ. एम. ए. सिद्दीक़ी – (कार्यवाहक) | 2005 – 2005 |
| 25 | डॉ. एल. एन. द्विवेदी | 2005 – 06 (05 मार्च) |
| 26 | डॉ. एम. ए. सिद्दीक़ी – (कार्यवाहक) | 06.03.06 – 30.06.07 |
| 27 | प्रो. एन. के. बेरी – (कार्यवाहक) | 01.07.07 – 26.02.09 |



☞ जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं। – अमृतलाल नागर

# राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

## महाविद्यालय के गौरवमयी प्राचार्यों का कार्यकाल

| क्रम | नाम | कार्यालय |
|---|---|---|
| 28 | डॉ. जे. डी. मित्रा | 26.02.09 – 07.09.10 |
| 29 | डॉ. श्रीमती माधुरी रस्तोगी – (कार्यवाहक) | 07.09.10– 30.06.12 |
| 30 | डॉ. मोहम्मद जावेद – (कार्यवाहक) | 30.06.12 – 22.09.12 |
| 31 | डॉ. जे. पी. सिंह – (कार्यवाहक) | 22.09.12 – 31.07.13 |
| 32 | डॉ. परमात्मा सिंह | 01.08.13 – 31.07.15 |
| 33 | डॉ. सईदा बेगम रिज़वी | 01.08.15 – 30.06.17 |
| 34 | डॉ. राकेश अग्रवाल – (कार्यवाहक) | 07.07.17 – 15.08.17 |
| 35 | डॉ. पी. के. वार्ष्णेय | 16.08.17 – 31.05.18 |
| 36 | डॉ. एस. एस. यादव – (कार्यवाहक) | 01.06.18 – 06.06.18 |
| 37 | डॉ. आर. पी. यादव | 07.06.18 – 28.06.19 |
| 38 | डॉ. पी. के. वार्ष्णेय | 29.06.19 – 16.07.22 |
| 39 | डॉ. दीपा अग्रवाल | 16.07.22 – |

किसी विद्यार्थी की सबसे
जरूरी एवम् महत्वपूर्ण
विशेषताओं में से एक विशेषता
है प्रश्न पूछना।
इसलिए विद्यार्थियों को प्रश्न
पूछने में कोई संकोच नहीं
करना चाहिए।

**डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

# वार्षिक आख्या

(सत्र 2020–2022)

**ऐतिहासिक परिचय :**

उत्तर प्रदेश के दो विख्यात नगरों बरेली एवं मुरादाबाद के मध्य स्थित रामपुर शहर अपनी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रखता है। ज्ञान, विज्ञान, कला के क्षेत्र में रामपुर अग्रणी रहा है। रामपुर गंगा–जमुनी तहज़ीब और कौमी एकता के सबब अपनी विशेष पहचान रखता है। साहित्य एवं कला के रूप में रामपुर को अदबी स्कूल का दर्जा प्राप्त है, साहित्य और संगीत प्रेमियों तथा शायरों के द्वारा इसे विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त है। वहीं संगीत के क्षेत्र में भी रामपुर घराना देश–विदेश में जाना जाता है। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी पूरे विश्व में विख्यात है। रामपुर की इस सरज़मीन पर इल्मों अदब, ज्ञान–विज्ञान के केन्द्र राजकीय रज़ा पी.जी. कॉलेज की स्थापना 1949 में हुई थी। इस महाविद्यालय को उत्तर प्रदेश का प्राचीन राजकीय महाविद्यालय होने का ऐतिहासिक गौरव भी प्राप्त है।

**संकाय और विषय :**

वर्तमान सत्र में महाविद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य और शिक्षा संकाय के अन्तर्गत लगभग 6500 छात्र–छात्राएँ अध्ययनरत् हैं। कला संकाय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी, समाजशास्त्र, शारीरिक शिक्षा, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र एवं भूगोल विषयों का अध्ययन कराया जाता है।

विज्ञान संकाय में स्नातक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले विषयों में से गणित, रसायन विज्ञान, भौतिकी, जन्तु विज्ञान और वनस्पति विज्ञान का अध्यापन स्नातकोत्तर स्तर पर भी कराया जाता है। रसायन विज्ञान विभाग में औद्योगिक रसायन का दो वर्षीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी चल रहा है।

वाणिज्य संकाय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षाएँ संचालित की जा रही हैं। शिक्षा संकाय में बी०एड्० की कक्षाओं के संचालन की उचित व्यवस्था है।

महाविद्यालय में 06 जुलाई, 2007 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई। जिसके अन्तर्गत एम०ए०, पी०जी० डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स आदि के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है। दिनांक 8 फरवरी 2019 को महाविद्यालय ने नैक की तृतीय चक्र पूरा करने का गौरव प्राप्त किया तथा "B" श्रेणी प्राप्त की। NAAC+News Bulletin, Seminar, Alumni meet, PTM आदि सामाजिक जुड़ाव के कार्य किये जाते हैं। विगत कई वर्षों से मौलाना आज़ाद मुक्त विश्वविद्यालय का अध्ययन केन्द्र भी संचालित है।

**स्टाफ**

महाविद्यालय में प्राचार्य एवं प्राध्यापकों के 94 पद हैं परन्तु 51 कार्यरत् हैं, जो अध्यापन के अतिरिक्त महाविद्यालय की विभिन्न समितियों के अन्तर्गत कार्य कर अपने दायित्वों को निर्वहन पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ

कर रहे हैं। लगभग 28 शिक्षणेत्तर कर्मचारी कार्यालय, पुस्तकालय, तकनीकी लैब एवं चतुर्थ श्रेणी में कार्य कर रहे है। कार्यालय का समस्त स्टाफ महाविद्यालय की प्रगति हेतु अपना पूरा सहयोग एवं योगदान प्रदान करता है।

**पुस्तकालय एवं वाचनालय :**

महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु एक समृद्ध केन्द्रीय पुस्तकालय की व्यवस्था है। जिसमें विभिन्न विषयों की लगभग एक लाख पुस्तकें और रिसर्च जर्नल्स उपलब्ध है। नवीनतम घटनाओं से छात्र–छात्राओं को अवगत कराने के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के विभिन्न समाचार पत्र–पत्रिकाएं भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। स्नातकोत्तर विषयों के लिए प्रत्येक विभाग में विभागीय पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है।

**शिक्षणेत्तर एवं पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियाँ :**

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिक्षण के साथ–साथ शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी छात्र/छात्राओं के भविष्य को संजो रहा है, जिनमें–

**राष्ट्रीय सेवा योजना** (N.S.S.)

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० पी० के० वार्ष्णेय जी के संरक्षण में राष्ट्रीय सेवा योजना की 4 ईकाइयाँ डॉ० राम कुमार, डॉ० वी० के० राय, डॉ० ब्रहम सिंह एवं छात्रा इकाई डॉ० निधि गुप्ता के दिशा निर्देशन में कार्य कर रही हैं। सत्र 2020–21 में राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाइयों के चार एक दिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया तथा सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 09–03–2021 से 15–03–2021 तक किया गया।

महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के दो कार्यक्रम अधिकारी डॉ० राम कुमार एवं डॉ० वी० के० राय ने ईटी आई एम० जे०पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित की गयी ट्रेनिंग में प्रतिभाग किया।

वर्षभर की गतिविधियों को दृष्टिगत रखते हुए चारों दलों से निम्नलिखित स्वयंसेवक सेविकाओं को बेस्ट कैंपर के रूप में चयनित किया गया।

1. **अम्बेडकर दल–अभिषेक चौहान, मोहम्मद जीशान**
2. **आजाद दल–गुलरेज़**
3. **राधाकृष्णन दल – बृजेश कुमार**
4. **रानी लक्ष्मीबाई दल – अफ़ीफ़ा खानम, कृतिका सक्सेना**

**रोवर्स–रेंजर्स :**

उत्तर प्रदेश भारत स्काउट गाईड के तत्त्वावधान में सत्र 2021–22 में महाविद्यालयों में रोवर्स–रेंजर्स त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। उक्त त्रिदिवसीय विशेष शिविर में रोवर्स रेंजर्स ने ध्वज शिष्टाचार, मार्चपास्ट, अतिथि माल्यार्पण, बैज अलंकरण, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, पोस्टर एवं नारा–लेखन प्रतियोगिता

यूथ–फोरम (वाद–विवाद प्रतियोगिता) टेन्ट पुल, पेपर–वेट, पाक कला आदि प्रतियोगिता में सहभागिता की तथा सुधा सैनी बी०ए० द्वितीय वर्ष को सर्वश्रेष्ठ रेंजर्स एवं अमित दिवाकर बी०ए० तृतीय वर्ष को सर्वश्रेष्ठ रोवर को चुना गया।

**एन.सी.सी.**

महाविद्यालय में एन.सी.सी. सन् 1967 से चल रही है। महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र/छात्रा इसका लाभ उठाकर विभिन्न विभागों में अपनी सेवा दे रहे हैं। इसके साथ–साथ बहुत से छात्र एन.सी.सी. "C" एवं "B" उप प्रमाण पत्र प्राप्त कर देश की सेवा में जुटे हैं। महाविद्यालय में एन.सी.सी. 105 स्थान हैं जिसमें प्रथम वर्ष में 34 द्वितीय वर्ष में 35 तथा तृतीय वर्ष में 36 छात्र/छात्राओं का नामांकन है। एन.सी.सी. "B" तथा "C" परीक्षा 19, 20 फरवरी 2021 तथा 28–1 मार्च 2021 को सम्पन्न हो चुकी है। सत्र 2020 का परिश्रम "B" प्रमाण पत्र का 97 प्रतिशत तथा "C" का 85 प्रतिशत रहा।

**क्रीड़ा**

महाविद्यालय क्रीड़ागन में 04–05 मार्च 2021 को क्रीड़ा समारोह आयोजित किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ० आर० पी० यादव, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर, रामपुर व डॉ० पी० के० वार्ष्णेय प्राचार्य राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर ने संयुक्त रूप से किया।

समापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० पी० के० वार्ष्णेय ने किया इस समारोह में मुकेश बी०ए० प्रथम वर्ष दीपा बी०ए० प्रथम वर्ष को छात्र एवं छात्रा चैम्पियन घोषित किया गया। अंत में सचिव क्रीड़ा परिषद् डॉ० मुजाहिद अली ने सभी का आभार व्यक्त किया।

**छात्रवृत्ति :**

महाविद्यालय में अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/अल्पसंख्यक/सामान्य निर्धन वर्ग/दिव्यांग और बीड़ी मजदूरों के बच्चों को केन्द्र सरकार/उ०प्र०सरकार की ओर से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उर्दू विषय के छात्र/छात्राओं को उर्दू एकेडमी, लखनऊ उत्तर प्रदेश द्वारा विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। डॉ० सुरेन्द्र कुमार एवं डॉ० जहाँगीर अहमद ख़ान (समन्वयक) के नेतृत्व में महाविद्यालय द्वारा वर्ष 3755 छात्रवृत्ति फार्म अग्रसारित किए गए तथा सरकार द्वारा कन्या सुमंगला योजना के अन्तर्गत भी छात्राओं के फार्म भरवाये गये।

**अन्य सुविधाएँ :**

महाविद्यालय द्वारा छात्र/छात्राओं के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए कुछ अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं। जैसे पुस्तकालय, वाचनालय, गर्ल्स कॉमन रूप, साईकिल स्टैण्ड, कम्प्यूटर कक्षा और शीतल जल व्यवस्था आदि एवं ऑनलाइन कंटेन्ट एवं लाइब्रेरी ऑटोमेशन की जानकारी तथा उसका प्रयोग किये जाने हेतु गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय में विगत वर्षों में एक पुरातन छात्र परिषद् का विधिवत् गठन भी किया गया था। जिसके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया प्रगति पर है। साथ ही अभिभावक–प्राध्यापक परिषद् और महिला शिकायत निवारण

प्रकोष्ठ भी गठित किया गया है।

महाविद्यालय में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने तथा छात्र/छात्राओं की समस्याओं के निदान के लिए मुख्य शास्ता डॉ० विनीता सिंह के नेतृत्व में गठित शास्ता मण्डल लगन और मेहनत से अपने कार्यों को अंजाम दे रहा है।

महाविद्यालय प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' का भी प्रकाशन कराता है। पत्रिका में छात्र/छात्राएँ अपने सृजनात्मक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे है। महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों द्वारा रचित हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत एवं फारसी के महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते है जो कि उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक कलाधर्मिता को प्रोत्साहित करता है।

**युवा महोत्सव एवं अन्य कार्यक्रम**

महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की नैसर्गिक प्रतिभाओं को उचित पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए युवा महोत्सव (उमंग), कौमी एकता सप्ताह आदि कार्यक्रमों का आयोजन समारोहक डॉ० सै० मो० अरशद रिज़वी समन्वयक डॉ० जागृति मदान एवं समारोह समिति व अन्य समस्त प्राध्यापकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के सहयोग से किया गया। जिसके अन्तर्गत वाद–विवाद, चार्ट पोस्टर, निबन्ध, कार्टून रचना, नारा लेखन, कहानी लेखन, संस्मरण लेखन, आशुभाषण, स्वरचित कविता पाठ, बाल पेन्टिग, फैन्शी ड्रेस सामूहिक परिचर्चा, सुगम गायन और नुक्कड़–नाटक आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस एवं गांधी जयन्ती जैसे राष्ट्रीय पर्वों पर राष्ट्र–प्रेम और स्वतन्त्रता संग्राम के संघर्षपूर्ण इतिहास पर चर्चा–परिचर्चा की गई तथा भारत रत्न माननीय स्व० श्री अटल बिहारी वाजपेयी, सरदार पटेल तथा बी०आर० अम्बेडकर/महाराजा सुहेल देव आदि महापुरुषों के त्याग एवं बलिदान से छात्र–छात्राओं को अवगत कराया गया। भाषा किसी राष्ट्र व समाज की उन्नति का आधार है भाषा में ही इसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं शैक्षिक प्रगति सन्निहित होती है। इसी को दृष्टिगत रखते हुये राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए महाविद्यालय में राजभाषा परिषद का गठन किया गया है, जिसके तत्त्वावधान में प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में हिन्दी सप्ताह बनाया जाताा है।

**प्राध्यापकों की उपलब्धियाँ**

महाविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की प्राध्यापक डॉ० बेबी तबस्सुम को NEP 2020 की स्टेट लेवल कमेटी में Structural Committee का साइंस स्ट्रीम का ऐंकर नियुक्त किया गया तथा डॉ० बेबी तबस्सुम के 3 Inter National Research Paper पीयर रिब्यू जर्नल में प्रकाशित हुये तथा डिस्कवरी पब्लिकेशन, दिल्ली द्वारा अमेज़न पर एक पुस्तक प्रकाशित हुई।

# एन.सी.सी. की वार्षिक आख्या

(सत्र 2020–2022)

कैप्टन (डॉ०) प्रवेश कुमार एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर में एनसीसी वर्ष 1967 से संचालित है 1967 से लेकर के आज तक एनसीसी के कैडेट्स विभिन्न विभागों में चयनित होकर अपनी सेवा दे रहे हैं, बहुत से कैडेट्स महाविद्यालय से एनसीसी ''बी''प्रमाण पत्र एवं ''सी'' प्रमाण पत्र प्राप्त कर भारतीय सेना ,जल सेना , वायु सेना एवं अन्य सेनाओं में भर्ती होकर अपना कर्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं। महाविद्यालय उत्तर प्रदेश का उत्कृष्ट महाविद्यालय है महाविद्यालय के अंतर्गत एनसीसी अध्यनरत छात्र एवं छात्राओं को एनसीसी में प्रत्येक वर्ष नामांकन किया जाता है । नामांकन पश्चात कैडेट्स को सेनाओ का प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण देने हेतु 23 उत्तर प्रदेश बटालियन एनसीसी मुरादाबाद से समय–समय पर ड्रिल इंस्ट्रक्टर एवं अन्य प्रशिक्षण अधिकारी उपस्थित होकर कैडेट्स को प्रशिक्षण देते हैं, जिसमें सेना संबंधी प्रशिक्षण दिया जाता है जैसे राइफल चलाना, ड्रिल प्रशिक्षण , बाधा प्रशिक्षण मैप रीडिंग, जजिंग डिस्टेंस, विभिन्न प्रकार की राइफल्स की जानकारी, फायर फाइटिंग आदि का प्रशिक्षण देकर कैडेट्स को इस योग्य बनाया जाता है, जिससे आपातकाल परिस्थिति में देश की सेवा के लिए उनकी जरूरत पड़ने पर कैडेट्स को लगाया जाता है।महाविद्यालय के कैडेट्स ने समय समय पर सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाते हैं, कैडेट्स ने ए डी जी सीसी लखनऊ तथा 23 उत्तर प्रदेश बटालियन एनसीसी मुरादाबाद की तत्वाधान में नदियों के तट की सफाई कर नदियों को सुरक्षा प्रदान की इसी प्रकार महाविद्यालय में डीजी एनसीसी नई दिल्ली से चलकर अमर शहीद जवान ज्योति का विशाल कार्यक्रम किया गया और अमर शहीद जवान ज्योति पर रीथ चढ़ाकर उनको श्रृद्धांजलि अर्पित की गई, जिसमें बरेली कैंट से आए कमान अधिकारी, ग्रुप कमांडर तथा बटालियन के कमांडिंग ऑफिसर के साथ–साथ सेना के अन्य पदाधिकारी एवं एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर, महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ० पी० के० वार्ष्णेय अन्य उपस्थित प्रोफेसर्स के द्वारा श्रृद्धाजलि अर्पित की गई। महाविद्यालय में महाविद्यालय के कैडेट्स द्वारा लखनऊ से साइकिल रैली अभियान जो स्वच्छता का एक प्रतीक था रामपुर में अभियान चलाया गया, डॉ० भीमराव अंबेडकर पार्क से मुरादाबाद के लिए हरी झंडी दिखा कर रवाना किया गया।

## कैडेट्स द्वारा किए कार्य

महाविद्यालय की कैडेट्स द्वारा प्रत्येक वर्ष ब्लड डोनेशन का कार्यक्रम किया जाता है जिसमें कैडेट्स स्वेच्छा से रक्तदान कर अन्य को स्वच्छ भाव से ब्लड अर्पित करते हैं और जरूरतमंदों को ब्लड देकर उनको सुरक्षा प्रदान करते हैं ऐसे ही अन्य कार्यक्रमों में कैडेट्स द्वारा बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया जाता है, जैसे सड़क सुरक्षा अभियान, जल संरक्षण अभियान, वृक्षारोपण अभियान, ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण एवं साफ सफाई, सार्वजनिक स्थलों की साफ सफाई, एड्स जागरूकता अभियान आदि ऐसे कार्यक्रम जिन पर कैडेट्स पूर्ण मनोंयोग से कार्य करते हैं। कैडेट्स द्वारा पॉलिथीन की रोकथाम अभियान चलाए, प्रदूषण रोकथाम, प्लास्टिक निस्तारण अभियान आदि ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए गए।

## एन.सी.सी. की उपलब्धियां

महाविद्यालय सी महाविद्यालय से कैडेट्स प्रतिवर्ष विभिन्न विभागों में चयनित होते हैं इस आख्यागत वर्ष में में 6 कैरेट्स अग्नि वीर में चयनित हुए और सी में देश की सेवा कर रहे हैं जिनमे

1 .सीनियर अंडर ऑफिसर स्कीम 2 .कैडेट् राजू मौर्य 3 .कैडेट राजकुमार 4 .कैडेट विष्णु

5 .कैडेट ललित सागर 6 .कैडेट सुभाष कुमार

**अन्य**

1 .कैडेट मंजीत यादव आर बी आई आदि

**अवार्ड**

– सीनियर अंडर ऑफिसर सिद्धांत श्रीवास्तव को वेस्ट कैडेट का अवार्ड ★3000 की धनराशि के रूप में प्राप्त हुआ।

– कैप्टन (डॉ०) प्रवेश कुमार को बटालियन द्वारा कमान अधिकारी के माध्यम से अप्रिशिएशन प्रशस्ति पत्र दिया गया।

**परिणाम**

– महाविद्यालय में एन सी सी का B प्रमाण पत्र एवं C प्रमाण पत्र का परिणाम 90% से ऊपर रहता है।

आखिया गत वर्ष में एन सी सी विभिन्न उपलब्धियां के साथ एकता एवं अनुशासन के साथ कैडेट्स के चरित्र एवं शारीरिक विकास का एक केंद्र बिंदु है।

**एन.सी.सी. से छात्रों के लिये अवसर एवं रोजगार की सम्भावनाएँ :**

– भारतीय सेना में जाने का अवसर।

– परिवहन विभाग में जाने का अवसर।

– राज्य एवं केन्द्रीय पुलिस में जाने का अवसर।

– व्यासायिक शिक्षा में प्रवेश के लिए भारांक।

– आर. डी. सी. के माध्यम राजपथ पर प्रतिभा का प्रदार्शन करने का अवसर।

– विभिन्न प्रकार के शिविर में प्रतिभाग करने का अवसर।

# रोवर्स-रेंजर्स की वार्षिक आख्या (2020-22)

दिनांक 01–03–2021 को राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में रोवर्स/रेंजर्स शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी. के. वार्ष्णेय जी ने ध्वजारोहरण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। ध्वजारोहण के उपरान्त रोवर्स/रेंजर्स झण्डा गीत छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा मुख्य अतिथि एवं सभी अतिथियों का स्वागत डॉ. रेनू रेंजर्स लीडर एवं डॉ. आर. के. सागर रोवर्स लीडर ने स्कार्फ पहनाकर किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी. के. वार्ष्णेय जी ने कहा कि इस कैंप के द्वारा छात्र/छात्राऐं अपने जीवन को अनुशासित व संयमित कर जीवन की ऊँचाइयों को छू सकते हैं। भारत स्काउट गाइड, रामपुर से आये प्रशिक्षक पीयूष राठौर व जमाल फात्मा जी ने शिविर के प्रथम दिन छात्र/छात्राओं को ध्वज शिष्टाचार, प्रार्थना, मार्च पास्ट, झंडा गीत, नियम प्रतिज्ञा के बारे में प्रशिक्षित किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक एवं छात्र/छात्राएँ उपस्थित रहे।

दिनांक 02 मार्च 2021 को राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में आयोजित किये जा रहे रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर के द्वितीय दिवस का शुभारम्भ रोवर्स/रेंजर्स झंडा गीत के साथ किया। शिविर के द्वितीय दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। जिसमें नारा लेखन प्रतियोगिता में अभिषेक चौहान, बी.एस.सी अंतिम वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सुधा सैनी बी.ए. द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। याचना रानी बी.एस.सी द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया और कमलेश बी.ए. अंतिम वर्ष ने भी तृतीय स्थान प्राप्त किया। मास्क सज्जा प्रतियोगिता में साहब खान एम.एस.सी. प्रथम वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अमित दिवाकर बी.ए. अंतिम वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया और स्नेहा प्रथम वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा डायरी प्रतियोगिता में अभिषेक चौहान बी.एस.सी तृतीय वर्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, सुधा सैनी बी.ए. द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान एवं शहजल कश्यप बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान एवं खुशबू निशा बी.ए. द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिविर के द्वितीय दिवस में प्रशिक्षक पियूष राठौर ने छात्र/छात्राओं को रोवर्स/रेंजर्स के उद्देश्य से अवगत कराया और उन्हें गांठे बांधना, बिना बर्तन के भोजन बनाना आदि बताया। इस अवसर पर रोवर्स लीडर डॉ. आर. के. सागर एवं रेंजर्स लीडर डॉ. रेनू ने छात्रों को प्रशिक्षण देने में सहयोग किया।

दिनांक 03 मार्च 2021 को राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में आयोजित किये जा रहे रोवर्स/रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर के तृतीय एवं अंतिम दिवस का शुभारम्भ रोवर्स/रेंजर्स के झंडा गीत के साथ किया। रोवर्स लीडर डॉ. आर. के. सागर जी ने मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी. के. वार्ष्णेय जी का वोगल पहनाकर स्वागत किया। शिविर के तृतीय दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें रंगोली/टेंट प्रतियोगिता मं टोली नं० 02 ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, टोली नं० 05 ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं टोली नं० 01 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पाक कला में प्रतियोगिता मं टोली नं० 04 ने प्रथम स्थान टोली नं० 02 ने द्वितीय स्थान एवं टोली नं० 05 ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिविर के तृतीय दिवस में वेस्ट रोवर अमित दिवाकर बी.ए. तृतीय वर्ष एवं वेस्ट रेंजर सुधा सैनी बी.ए. द्वितीय वर्ष घोषित किया गयां प्रशिक्षक पीयूष राठौर ने छात्र/छात्राओं को टेंट बनाना, पुल बनाना, बिना बर्तन के भोजन कैसे बनाया जाता है आदि सिखाया।

1. दिनांक 20–4–2020 को रोवर्स/रेंजर्स के छात्रों ने कोरोना के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाया एवं रामपुर शहर के सार्वजनिक स्थलों पर लोगों को जागरूक किया तथा प्रशासन के द्वारा इन छात्रों को कोरोना योद्धा नियुक्त किया गया।
2. दिनांक 14 जून से 13 जुलाई 2020 तक चलाये गये **'विश्व रक्तदाता'** दिवस के तहत हमारे रोवर्स/रेंजर्स ने भावी रक्तदाता के रूप में पंजीकरण कराया।
3. दिनांक 10 अक्टूबर 2020 से 16 अक्टूबर 2020 तक चलाये जा रहे विशेष सफाई अभियान के दौरान रोवर्स/रेंजर्स के छात्रों ने लोगों को सफाई के प्रति जागरुक किया।
4. दिनांक 15–10–2020 को 'विश्व हाथ धुलाई दिवस' पर कोविड–19 रोग के संक्रमण के दृष्टिगत विशेष सावधनियाँ अपनाते हुए दो गज की दूरी, 'सोशल डिस्टेंसिंग' मास्क लगाना व साबुन से हाथों की सफाई के प्रति हमारे छात्रों ने लोगों को जागरुक करने का कार्य किया।
5. दिनांक 19–10–2020 से 23–10–2020 तक रोवर्स/रेंजर्स प्रभारियों ने मिशन शक्ति अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक दिन सायं 5 से 6 बजे तक छात्राओं को आपातकाल में आत्मसुरक्षा हेतु प्रशिक्षण ऑनलाइन प्रदान कराने में सहयोग किया।
6. दिनांक 24–10–2020 से 25–10–2020 तक रोवर्स/रेंजर्स के छात्र/छात्राओं द्वारा **'मिशन शक्ति अभियान'** के तहत कॉलेज के छात्र/छात्राओं को साइबर सुरक्षा एवं लैंगिक हिंसा की रोकथाम के प्रति जागरुक किया।
7. **'सड़क सुरक्षा माह'** के दौरान दिनांक 26 जनवरी, 31 जनवरी एवं 07 फरवरी 2021 को रोवर्स/रेंजर्स के स्वयं सेवकों द्वारा अपराह्न 02 बजे से 04 बजे तक चौराहों पर आम जनता को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक किया एवं सड़क सुरक्षा माह के तहत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे वाद–विवाद, नाटक, स्लोगन राइटिंग, रंगोली एवं मास्काट डिजाइन आदि प्रतियोगिताओं में बढ़ाचढ़कर भाग लिया।
8. दिनांक 16–02–2021 को **'महाराजा सुहेलदेव जयन्ती'** पर रोवर्स/रेंजर्स के छात्रों ने प्रातः 9:30 बजे गाँधी समाधि पर कार्यक्रम एवं रैली का आयोजन किया।
9. दिनांक 20–01–2021 को प्रातः 10 बजे हमारे रोवर्स/रेंजर्स द्वारा पार्क से गाँधी समाधि तक रैली का आयोजन किया गया एवं वन्देमातरम् का गान गांधी समाधि स्थित शहीद स्मारक पर किया गया।

# राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक आख्या

(सत्र 2020–2022)

सत्र 2020–21 का राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाईयों द्वारा चार एक दिवसीय शिविर लगाए गए तथा सात दिवसीय विशेष शिविर लगाया गया। सात दिवसीय विशेष शिविर एनएसएस की चारों इकाइयों द्वारा दिनांक 9–3–2021 से 15–3–2021 तक ग्राम सैंजनी, नानकार, भुर्जी की मढैया तथा अजयपुर में लगाए गए जिसका शुभारंभ प्राचार्य डॉक्टर पी. के. वार्ष्णेय जी द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस शिविर के अंतर्गत हस्ताक्षर अभियान, पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, नारा लेखन, नारी शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता अभियान चलाए गए। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर ब्रह्म सिंह, डॉक्टर वी. के. राय, डॉक्टर राजकुमार तथा डॉक्टर निधि गुप्ता ने अपने अपने इकाइयों के स्वयंसेवक और सेविकाओं के साथ मिलकर पूर्ण मनोयोग से विभिन्न अभियानों को सम्पन्न कराया तथा शिविर के अंतिम दिवस पर एन. एस.एस. के चारों इकाइयों के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का चयन किया गया तथा वार्षिक समारोह में पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

सत्र 2021–22 का सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 22–2–2022 से 28–02–2022 तक ग्राम पैगा, जगतपुर का मझरा और शौकत नगर में राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाइयों अम्बेडकर दल, आजाद दल, राधाकृष्णन दल तथा रानी लक्ष्मीबाई दल द्वारा लगाया गया। शिविर का उद्घाघाटन प्राचार्य डॉक्टर पी. के. वार्ष्णेय द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ आरंभ हुआ। सात दिवसीय विशेष शिविर का विषय कौशल विकास हेतु युवा रहा। जिसके अंतर्गत स्वयं सेवक तथा स्वयं सेविकाओं ने गांव के लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य से लकर नारी शिक्षा, कुपोषण मुक्त भारत, हस्ताक्षर अभियान तथा विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम और रैली संपन्न कराई। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डा० ब्रह्मसिंह, डा० निधि गुप्ता, डा० राजकुमार तथा डा० नरेश कुमार ने अपने–अपने इकाइयों के स्वयंसेवक और सेविकाओं के साथ मिलकर पूर्ण मनोयोग से विभिन्न अभियानों को सम्पन्न कराया। सात दिवसीय शिविर के अंतिम दिन एन.एस.एस. की चारों इकाइयों के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थियों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

# महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएँ

## राजभाषा परिषद : (हिन्दी सप्ताह) 2020-21

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मौ० यासिर खान | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | कामरान अहमद | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | रुचि | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**पोस्टर प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | संयम अग्रवाल | बी.एस–सी. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | तनु रस्तोगी | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | रुचि | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**कविता लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | वैष्णवी गुप्ता | बी.एस–सी. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | रुचि | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | फुरकान अली | बी.ए. तृतीय वर्ष |

**कहानी लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | तनु रस्तोगी | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | अनीता | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | रुबी | बी.ए. तृतीय वर्ष |

**अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस**

**नारा लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | शहाब खान | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | वैष्णवी गुप्ता | बी.एस–सी. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | अभिषेक चौहान | बी.एस–सी. तृतीय वर्ष |

**पोस्टर प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | शहाब खान | एम.एस–सी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | अभिषेक चौहान | बी.एस–सी. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | अतूफा बी | बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष |

**भाषण प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | स्वाति शर्मा | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | सौन्दर्या सक्सैना | एम. कॉम पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | सन्तोष कुमार | बी.एड. |

**अटल बिहारी वाजपेयी जन्मदिवस पर आयोजित ऑनलाइन कविता पाठ (22–12–2020)**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | वैष्णवी गुप्ता | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | निशरा | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | रुचि | एम.ए. पूर्वार्द्ध |

**रोवर्स/रेंजर्स (2021)**

| | | |
|---|---|---|
| सर्वश्रेष्ठ रोवर | दिवाकर | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| सर्वश्रेष्ठ रेंजर | सुधा सैनी | बी.ए. द्वितीय वर्ष |

**वार्षिक क्रीड़ा समारोह (2021)**

| | | |
|---|---|---|
| छात्र चैम्पियन | मुकेश | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| छात्रा चैम्पियन | दीपा | बी.ए. प्रथम वर्ष |

**अमृत महोत्सव**

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | अभिषेक चौहान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | खुशबू निशा | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | सुधा सैनी | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | अदीबा | बी.ए. द्वितीय वर्ष |

**सड़क सुरक्षा माह (प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता)**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | महिमा सिंह | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | आसिया कामिल | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | संजीव कुमार | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| सांत्वना | महेन्द्र सिंह | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| | कामरान अली | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| | विनोद | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| | चन्द्र प्रकाश | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| | मो. शरीक | बी.ए. द्वितीय वर्ष |



☞ धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता व दृढ़ निश्चय) से बढ़ता है, चतुराई से फलता फूलता है और संयम से सुरक्षित होता है। – विदुर

# युवा महोत्सव (उमंग) 2020-2022

**चार्ट/पोस्टर**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | शहाब खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | मारिया खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | मरयम फैजान शम्सी | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**स्वरचित कविता पाठ**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | वैष्णवी गुप्ता | एम.एससी. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | स्नेहा शर्मा | बी.एड. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | इकरा शाहिद | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**सामूहिक परिचर्चा**

**टीम–एफ**

**प्रथम स्थान**

| | |
|---|---|
| अफ्शा आफरीन | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| इल्मा ज़ाहिद | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| उम्मे हबीबा | एम.एससी. द्वितीय वर्ष |
| मलीहा खान | एम.एससी. द्वितीय वर्ष |
| तय्यबा | एम.एससी. द्वितीय वर्ष |

**टीम–डी**

**द्वितीय स्थान**

| | |
|---|---|
| इकरा शाहिद | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| सिदरा शाहिद | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| शहाब खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| मरियम खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| मरयम फैज़ान शम्सी | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |

**टीम–बी**

**द्वितीय स्थान**

| | | |
|---|---|---|
| | गुलफिज़ा | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| | मरियम इकबाल | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| | गुरविंदर सिंह गिल | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| | सौरभ | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| | मो० सोहराब | बी.एड. द्वितीय वर्ष |

**आशुभाषण**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | इकरा शाहिद | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | शुमाएला शुएब | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | मोइन खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**नारा लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मास खान | बी.एससी. प्रथम |
| द्वितीय स्थान | मुस्कान खान | बी.एससी. द्वितीय |
| तृतीय स्थान | तरफिया कौसर | बी.काम. तृतीय वर्ष |

**प्रश्नोत्तरी (लिखित)**

**विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | फराज़ खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | समरीन | बी.कॉम द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | गुलाब सिंह | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**बी.एड.**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मुनेश कुमार | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | गुरबेन्दर सिंह | बी.एड़ द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | ओसपाल सिंह | बी.एड. प्रथम वर्ष |

**कार्टून रचना**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | ज़ैनब दानिश | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | तरफिया कौसर | बी.कॉम तृतीय वर्ष |

| | | |
|---|---|---|
| द्वितीय स्थान | इलमास खान | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | शहाना | एम.एससी. प्रथम वर्ष |

**भित्ति चित्रण**

**ग्रुप–3 प्रथम स्थान**

| | |
|---|---|
| उमम खान | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| आमना सादाब | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| हुदेबिया खान | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| इलमा जाहिद | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| दीक्षा अरोड़ा | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |

**ग्रुप–8 द्वितीय स्थान**

| | |
|---|---|
| अंशिका सक्सेना | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| उंजला अमीर | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| मुनीबा परवीन | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| नेहा जमीर | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| रूताब जिया | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |

**ग्रुप–4 तृतीय स्थान**

| | |
|---|---|
| मरियम | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| करम फातिमा | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| मुस्कान खान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| अमरीन खान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| संजय कुमार | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |

**मेंहदी रचना**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मा अलीम | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | आयशा | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | अमरीन | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | मन्तशा | बी.ए. तृतीय वर्ष |

**पुष्प सज्जा/बुके**

**टीम–1 प्रथम स्थान**

| | |
|---|---|
| ज्योति सैनी | बी.एससी तृतीय वर्ष |
| मुस्कान खान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| हुदा खान | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |

**टीम–2 द्वितीय खान**

| | |
|---|---|
| इकरा नवाब | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| अजीमा | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| जेबा नवाज | बी.ए. तृतीय वर्ष |

**टीम–4 तृतीय स्थान**

| | |
|---|---|
| मरयम | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| संजय कुमार | एम.एससी. द्वितीय वर्ष |
| हुदैबिया खान | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |

**फैन्सी ड्रेस**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | शहाब खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | अंकिता | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | गुल तैय्यबा | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**एकल गायन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | रउफ अहमद | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | उंजला | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | रमशा सौलत | बी.एस.सी प्रथम वर्ष |

**नुक्कड़ नाटक**

**प्रथम स्थान**

| | |
|---|---|
| नायाब खान | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| आमना शादाब | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| इलमा जाहिद | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| सैय्यद रोहन अली | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |

| | |
|---|---|
| मौ० शावेज़ | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| मलीहा खान | बी.एससी. उत्तरार्द्ध |
| अदनान खान | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| शहाब खान | एम.एससी. द्वितीय |
| विवेचना सागर | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| यशपाल | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| मो० सोहराब | बी.एड. द्वितीय वर्ष |
| मो० सलमान | बी.एड. प्रथम वर्ष |
| इकरा आज़म | बी.एड. प्रथम वर्ष |
| सेबी आफरीन | बी.एड. प्रथम वर्ष |
| आदर्श सिंह | बी.एड. प्रथम वर्ष |
| गायत्री दोहरे | बी.एड. प्रथम वर्ष |

**द्वितीय स्थान**

| | |
|---|---|
| फिज़ा | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| शहनाज़ | एम.ए. प्रथम पूर्वार्द्ध |
| मिस्बा | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| अलीना | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| आँचल | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| रूबी | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| रजनी | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| सत्यम | बी.ए. तृतीय वर्ष |

**तृतीय स्थान**

| | |
|---|---|
| अज़मी खान | बी.कॉम द्वितीय वर्ष |
| अब्दुल्ला परेवज | बी.कॉम प्रथम |
| चेल्सी कटारिया | बी.कॉम प्रथम |
| हिबा | बी.कॉम द्वितीय |
| जहाँजेब | बी.कॉम द्वितीय |

| | | |
|---|---|---|
| | आतिफ | बी.कॉम. द्वितीय |
| | मामून | बी.कॉम. द्वितीय |
| | मुनज़्ज़ा | बी.कॉम. द्वितीय |

**कहानी लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | अमित दिवाकर | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | तरन्नुम | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | जैनब दानिश | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**निबन्ध लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | तरफिया कौसर | बी.कॉम. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | सिदरा शाहिद | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | फिरदौस फातिमा | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**संस्मरण लेखन**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | लायबा नूर | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | मरियम फैजान शम्सी | बी.एससी. द्वितीय |
| तृतीय स्थान | शगुन शर्मा | बी.ए. प्रथम वर्ष |

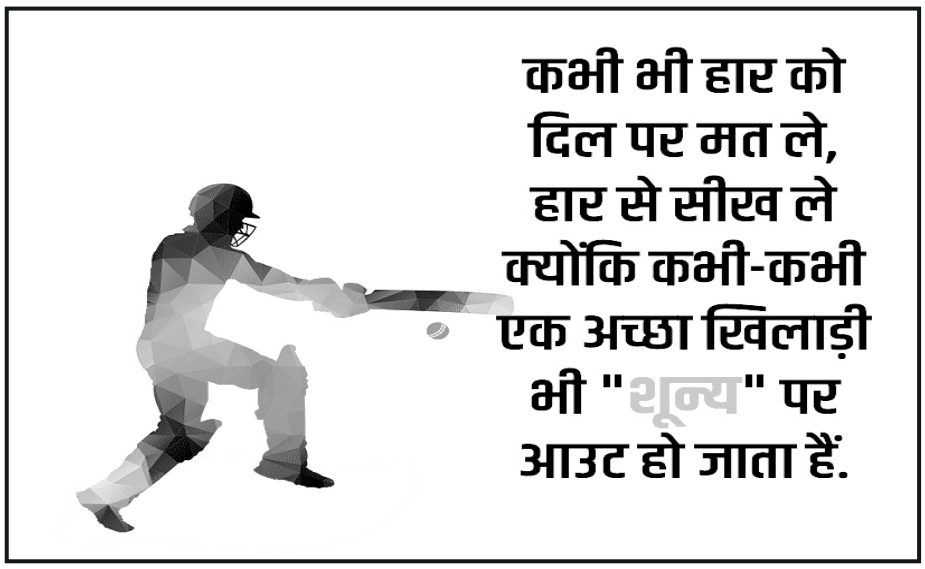

# परिषदीय (विभागीय) प्रतियोगिताएँ

## हिन्दी विभाग (2021–22)

**निबन्ध प्रतियोगिता (स्नातक स्तर)**

**विषय : 'समाज सुधार में सन्त कवियों की भूमिका'**

| स्थान | छात्र/छात्रा का नाम | कक्षा |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | सचिन कुमार | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | चन्द्र प्रकाश | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | कुलदीप | बी.ए. प्रथम वर्ष |

**आशुभाषण प्रतियोगिता (परास्नातक स्तर)**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | अमन सैनी | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | नरेश | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | मनीषा | बी.ए. द्वितीय |

## अंग्रेजी विभाग (2021–22)

**प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (स्नातक स्तर)**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मामून शाह खान | बी.ए. प्रथम वर्ष प्रथम |
| द्वितीय स्थान | शगुन शर्मा | बी.ए. प्रथम वर्ष द्वितीय |
| तृतीय स्थान | असबाव तौफीक अल नबी | बी.ए. प्रथम वर्ष द्वितीय |
| तृतीय स्थान | मुसरा बी | बी.ए. प्रथम वर्ष तृतीय |

**निबन्ध प्रतियोगिता : (परास्नातक)**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | अनस अली | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | इस्मत | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | हिन्नू गुलाटी | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | राहेमीन | एम.ए. तृतीय |

## अर्थशास्त्र विभाग (2020–21)

**निबन्ध प्रतियोगिता**

**विषय : 'भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान'**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मोहम्मद यासर खाँ | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | गुलअफशा | बी.ए. तृतीय वर्ष |

| | | |
|---|---|---|
| द्वितीय स्थान | फौजिया | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | युसरा राहत | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**चार्ट प्रतियोगिता**

**विषय : 'कृषि के विकास में अक्षत ऊर्जा की भूमिका'**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | युसरा राहत | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | गुलफशां | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| द्वितीय तृतीय | फौज़िया | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | निशरा | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | उरुज | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**प्रश्नोतरी प्रतियोगिता :–**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | ज़ैनी खान | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| | फैज़ कामरान | एम.ए. उत्तर्रार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | शगुन शर्मा | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | फैज़ान शाकिर | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| | एजाज़ अमीर | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| **सांत्वना पुरस्कार** | ज़ैबुन निशा | बी.ए. प्रथम वर्ष |

**निबंध प्रतियोगिता –**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | शगुन शर्मा | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | मुंतहा नदीम | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | हुस्ना | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | तरुण श्रीवास्तव | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| सांत्वना पुरस्कार | ज़ैबुन निशा | बी.ए. प्रथम वर्ष |

## मनोविज्ञान विभाग (2020–21)

**चार्ट प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | रूमायशा | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | महरीन मंसूर | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | इकरा नवाब | बी.ए. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | फिज़ा बी | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

**निबन्ध प्रतियोगिता –**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मा सिराज | बी.ए. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | रूमायसा | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | महरीन मंसूर | एम.ए. उत्तरार्द्ध |

## मनोविज्ञान विभाग (2021–22)

**चार्ट प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | समरा जमील | एम.ए. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | हुस्ना | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | फिज़ा बी. | एम.ए. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | इल्मा सिराज | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| सांत्वना पुरस्कार | इकरा नवाब | एम.ए. पूर्वार्द्ध |

**आशु भाषण**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मा सिराज | बी.ए. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | इकरा नवाब | एम.ए. पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | अमन सैनी | बी.ए. द्वितीय वर्ष |

## जन्तु विज्ञान

**चार्ट प्रतियोगिता (बी.एससी. प्रथम वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | फिरदौस फात्मा |
| द्वितीय स्थान | रुबिया नाज़ |
| तृतीय स्थान | मो. साद |

**मॉडल प्रतियोगिता (बी.एससी. प्रथम वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | आमना शादाब |
| द्वितीय स्थान | मंसूर अहमद |
| तृतीय स्थान | तैयबा |

**चार्ट प्रतियोगिता (बी.एससी. द्वितीय वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | मुस्कान खान |
| द्वितीय स्थान | ज़ैनब दानिश |
| तृतीय स्थान | फातिमा साजिद |

**मॉडल प्रतियोगिता (बी.एससी. द्वितीय वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | फिज़ा अहमद |
| द्वितीय स्थान | अंबरीन खान |
| तृतीय स्थान | अरीबा बी |

**चार्ट प्रतियोगिता (बी.एससी. तृतीय वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | शन्नो बी |
| द्वितीय स्थान | मरियम बी |
| तृतीय स्थान | निशा |

**मॉडल प्रतियोगिता (बी.एससी. तृतीय वर्ष)**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | नायाब खान/वरदा सईद |
| द्वितीय स्थान | अंजना वर्मा |
| तृतीय स्थान | युसरा खान |

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | नायाब खान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| प्रथम स्थान | मुस्कान खान | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | अरीबा बी | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |
| प्रथम स्थान | तैयबा | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | सिदरा | बी.एससी द्वितीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | मरियम | बी.एससी तृतीय वर्ष |

**क्विज़ प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | तैयबा | बी.एससी प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | मरियम बी | बी.एससी प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | युसरा खान | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**सेमिनार**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मलीहा | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | तैयबा | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | उम्मे हबीबा | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |

**सेमिनार**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | फहमीना | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | तैयबा | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | आसिफ सैदी | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**गणित विभाग (2021–22)**

**भाषण प्रतियोगिता**

Subject : On the spot speech

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | पारूल सक्सैना | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | मुस्कान सक्सैना | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | वरीशा नाज़ | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | पारुल सक्सैना | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | मुस्कान सक्सैना | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | वैशाली | बी.एससी. पूवार्द्ध |
| तृतीय स्थान | हिबा आसिफ | बी.एससी. तृतीय वर्ष |

**चार्ट प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | सना मकसूद | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | पारूल सक्सैना | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | वैशाली | बी.एससी. प्रथम वर्ष |
| तृतीय स्थान | मुस्कान सक्सैना | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**रसायन विज्ञान (2021–22)**

**पॉवर प्वाइन्ट प्रेजेन्टेशन**

**एम.एससी. पूर्वार्द्ध**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मास अमीर |
| प्रथम स्थान | लायबा नूर |
| द्वितीय स्थान | शानू बी |
| द्वितीय स्थान | लायबा जमील |

| | |
|---|---|
| तृतीय स्थान | सारिया फहीम |
| तृतीय स्थान | अलीज़ खान |

**एम.एससी. द्वितीय वर्ष**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | रुफैयादा खालिद |
| प्रथम स्थान | मारिया खान |
| द्वितीय स्थान | बरीरा शाह |
| द्वितीय स्थान | हुदा खान |
| तृतीय स्थान | हुमा |
| तृतीय स्थान | फराज़ |

**निबन्ध प्रतियोगिता**

**बी.एससी. प्रथम वर्ष**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | इल्मास खान |
| प्रथम स्थान | इल्मा |
| द्वितीय स्थान | गुलसान बी |
| तृतीय स्थान | साहिबा अन्सारी |

**बी.एससी. द्वितीय वर्ष**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | सुमैय्या |
| प्रथम स्थान | सिदरा शाहिद |
| द्वितीय स्थान | गुलाम मुइनुद्दीन |
| तृतीय स्थान | मन्सूर अहमद |

**बी.एससी. तृतीय वर्ष**

| | |
|---|---|
| प्रथम स्थान | क़रम फातिमा |
| द्वितीय स्थान | अम्बरीन खान |
| तृतीय स्थान | फिजा बी |

## भौतिक विज्ञान (2021–22)

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | प्रणव अग्रवाल | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | तजमीन अंजुम | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

| | | |
|---|---|---|
| तृतीय स्थान | ऋषि यादव | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |

**भाषण प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | सिमरा खान | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | निशिता चौरसिया | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | राधिका | बी.एससी. द्वितीय वर्ष |

**2021–21**

**निबन्ध प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | ऋषि यादव | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | दीपाली सागर | बी.एससी. तृतीय वर्ष |
| तृतीय स्थान | निशिता चौरसिया | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |

**भाषण प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | प्रणव अग्रवाल | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |
| द्वितीय स्थान | सैय्यद कोकाब अहमद | एम.एससी. पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | फबेहा खानम | एम.एससी. उत्तरार्द्ध |

**वाणिज्य संकाय (2021–22)**

**डिजिटल पोस्टर प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | समरीन खुशनूद | बी.कॉम प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | रविन्द्र सिंह | बी.कॉम प्रथम वर्ष |

**हस्तनिर्मित पोस्टर प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | मुस्कान गुप्ता | बी.कॉम प्रथम वर्ष |
| द्वितीय स्थान | वरीशा दानिश | एम. कॉम उत्तरार्द्ध |
| तृतीय स्थान | साहिबा मुसर्रत | बी.कॉम तृतीय वर्ष |

**ऑन लाइन क्विज़ प्रतियोगिता**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम स्थान | रमशा फातिमा | बी.कॉम. द्वितीय वर्ष |
| द्वितीय स्थान | सैयदा जमाल | एम.कॉम पूर्वार्द्ध |
| तृतीय स्थान | अमीशा समीर | बी.कॉम द्वितीय वर्ष |

# प्राध्यापकों की अकादमिक उपलब्धियाँ

## हिन्दी विभाग

### डॉ0 अरुण कुमार

### असि0 प्रोफेसर

पुस्तक– 'सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत: सरहपा और कबीर'

शोध उपाधि–(पी०एच०डी०)

शोध उपाधि प्राप्त शोधार्थी–02

शोध प्रबन्ध जमा–01

शोधरत शोधार्थी–03

**शोध पत्र–**

1– अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका पेरियाडिक रिसर्च में ''जनसंचार में हिन्दी की भूमिका'' विषय पर शोधपत्र प्रकाशित–vol-9, issue-4 मई 2021

2– अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका शोध दृष्टि में मुक्तिबोध के काव्य में प्रतीक विधान' विषय पर शोधपत्र प्रकाशित– vol-12, issue-6.1, जून 2021।

### डॉ० अब्दुल लतीफ़

### असिस्टेन्ट प्रोफेसर

1. एक आलोचनात्मक पुस्तक "भारतेन्दु के अनूदित साहित्य का पुनर्मूल्यांकन" साहित्य संस्थान गाजियाबाद से प्रकाशित।
2. दो संपादित पुस्तकें
   1. भारत के समग्र विकास में भारतीय भाषाओं की भूमिका।
   2. समृद्धता की ओर भारत : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

**पुरस्कार**

विलक्षण एक सार्थक पहल समिति (हरियाणा) द्वारा शैक्षिक, सामाजिक एवं साहित्यिक उपलब्धियों हेतु – 'आचार्य चाणक्य सम्मान 2021' से सम्मानित।

**शोध–पत्र**

1. हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार एंव भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के विचार बोहल शोध मंजूषा, हरियाणा, ISSN No. 2395 & 7115 Impact Factor & 3.811 दिसम्बर 2020
2. भारतेन्दु कृत अनूदित साहित्य का मूल्यांकन – भावक पत्रिका केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, अक्टूबर, दिसम्बर 2020 ISSN-NO-2582-2624
3. भारतेन्दु के अनुवाद सम्बन्धी विचार एवं प्रक्रिया विश्लेषण अक्षर वार्ता, मई–2021, ISSN No 2349-7521

**डॉ० ज़ेबी नाज़**

**असिस्टेन्ट प्रोफेसर**

1. 'स्वाधीनता आन्दोलन और खड़ी बोली हिन्दी का साहित्य' शीर्षक शोधपत्र ' स्वाधीनता आन्दोलन और खड़ी बोली हिन्दी' सम्पादित पुस्तक ISBN No. 978-93-95669-27-6 में पृष्ठ संख्या : 98–106 पर प्रकाशित।
2. 'स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी कविता' शीर्षक शोध पत्र 'स्वाधीनता आन्दोलन और खड़ी बोली हिन्दी' शीर्षक सम्पादित पुस्तक ISBN No. 978-93-95669-27-6 में पृष्ठ संख्या 59.–67 पर प्रकाशित।

**डॉ० राजीव पाल**

**असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग**

शिक्षा एवं मानवीय मूल्य शीर्षक शोध पत्र शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता सम्पादित पुस्तक में पृष्ठ संख्या 123 से 130 पर प्रकाशित।

कोरोना संक्रमण : जन जागरूकता में साहित्य की भूमिका शीर्षक लेख "अपरिहार्य साहित्यिक त्रैमासिकी पत्रिका" ISSN 24548855 में पृष्ठ संख्या 37–38 पर प्रकाशित।

**प्रो० सै० मो० अरशद रिज़वी**

सत्र 2021 में बुहचर्चित पुस्तक "सिक्कों पर अशआर" का हिन्दी अनुवाद "मुद्राओं पर काव्य पंक्तियाँ" शीर्षक से मेरे द्वारा किया उक्त प्रकाशित पुस्तक का विमोचन जिलाधिकारी, रामपुर श्री रवीन्द्र कुमार मांदड द्वारा किया गया। वर्ष 2022 में "बसन्त पंचमी" के अवसर पर रामपुर रज़ा लाइब्रेरी द्वारा मुख्य व्याखान दाता के रूप में आमंत्रित किया गया। उक्त अवसर पर कार्यक्रम का अतिथि के रूप में उद्घाटन करने के उपरान्त बसन्त पर एक व्याखान दिया गया जिससे कॉलेज के मान सम्मान में वृद्धि का भागी बना। 2022 से प्रोफेसर के पद पर प्रोन्नति मिली, उ०प्र० में राजकीय महाविद्यालय में इकलौते उर्दू के प्रोफेसर होने का गौरव प्राप्त हुआ।

उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा दिनाँक 6–9–2021 एवं 13–9–2021 को बाह्य विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। जहाँ सेवाएँ प्रस्तुत की।

**बी०एड्० विभाग**

**Dr. Pravesh Kumar**

**Associate Professor,**

Edited Books-2022

1. मूल्यों के विविध आयाम, नील कमल प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली–32

   ISBN-978-93-93248-08-4

2. वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवीय मूल्य, नील कमल प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली–32

   ISBN-978-93-93248-09-1

3. Human Values नील कमल प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली–32
ISBN-978-93-93248-02-2

**Chapter In Edited Book-2020-21**

1. उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं NEP–2020 के परिप्रेक्ष्य में इसके परिणाम Chapt-9 "नई शिक्षा नीति–2020 के सदंर्भ में विभिन्न आयामों का अवलोकन एवं चुनौतियां पेज 45–61 ISBN-978-93-85270-35-2 SRS पब्लिशर्स, नई दिल्ली–02
2. Emerging Trends and Issues in Higher Education Chapt-10. "ICT Teacher Education : A conduit for globalization (Page 114-120) ABS Books, Delhi-06, ISBN-978-93-87229-26-6
3. Pollution and population-chapt-10 बढ़ते हुए शहरीकरण से बिगड़ता हुआ पर्यावरण (Page-51-56) K.G. Publications Modinagar (U.P.) ISBN-978-81-939741-4-8.
4. Human Valus and Professional Ethics-Chapt-64 Business Ethics and Human Values : An Overview in Indian Context (Page-426-435) ISBN-978-81943559-8-4 Ocean Publication Miston Ganj, Rampur.
5. शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसयिक नैतिकता Chapt-50, – समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास से मानवता का अन्त : एक नजर (Page 353-357) ISBN-978-81-943559-9-1 ओशन पब्लिकेशन, रामपुर
6. Development and Problems of Secondary Education Chapt-18, Professional Ethics of Teacher (Page-221-228) ABS Book Delhi-86 ISBN-978-93-87229-83-9
7. Privatization of Education Issues and Challenges-chapt-10, Advantage and Disadvantage of Privatization of Education (Page 128-138) Sunrise Publication, New Delhi ISBN 978-81-952361-3-8.
8. Educations of Deprived sections : Issues and Challenges - Chapt-16" Role of RTE in The Eradication of Educational Deprivation." G. S. Publisher, Delhi ISBN-978-81-953108-5-2.

**Research Journal (Research Papers) Session - 2020-21**

1. 'भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका' ISSN-0970-7603 A peer Reviewed Journal Vol-39, No.-1, January-June-2020, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, लखनऊ–20 Topic-Innovation in Teaching and learning (Page 18-23).
2. IJRHS (International Journal of Research in Humanities and Social Sciences) Vol-8, Sp-Issue-1 July, 2020 ISSN online-2320-77IX ISSN (Print) 2347-5404 Topic-Environmental Factors Leading to Emerging Diseases Page 324-338.
3. JRHS (International Journal of Research in Humanities and Social Sciences) Vol-8, Sp-Issue-1 July, 2020 ISSN online-2320-77IX ISSN (Print) 2347-5404

Topic- विज्ञानवर्ग के किशोरों में कोविड–19 के कारण बढ़ता तनाव Page-308-323. Vol-8, Sp-Issue-1 July, 2020 ISSN online-2320-77IX ISSN (Print) 2347-5404 Topic-Environmental Factors Leading to Emerging Diseases

**Session-2021-2022**

Chapters in Edited Books

1. ISBN-978-93-93248-02-2

   Values and Educations - Chapter-27 "Relevance of Economic values on professional ethics (142-148) Neel Kamla Prakashan, Shahdra Delhi-32

2. As above chapt-35 "Education and human Values Page -216-217

3. As above Chapter-42, "Value Education in Today's youth (Page No-252-255)

4. ISBN-978-93-93248-01-5

   Human Values Chapter-39 Reflecting Human Values during a pandemic Covid-19 (Page- 277-282)

5. ISBN-978-93-93248-09-1 ″वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवीय मूल्य″ Chapt-18 शिक्षा के व्यावसायिक मूल्य (Page-105-110) अन्य उपर्युक्त

6. Chapt-41 ″वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों का बदलता स्वरूप (Page 227-239)

7. ISBN-978-93-93248-08-4 ″वर्तमान समय में मानव मूल्यों की स्थिति″ (Page 79-83), अन्य उपर्युक्त

8. Chept-42 ″मानवीय मूल्यों पर वातावरण का प्रभाव (Page 230-239), अन्य उपर्युक्त

## प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान

1. शिक्षक सम्मान पत्र– 05 सितम्बर 2021 माननीय कुलपति एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्व विद्यालय, बरेली।

### Dr. Bijender Singh
**Asst. Professor**

1. Published Book entitled " Home Environment of Adolescents (Impact on emotional intelligence and academic stress). ISBN : 978-93-5668-197-2

2. Published book entitled " Professional Development of Teacher Educators in Current Perspective" ISBN : 978-93-5668-367-9

## DEPARTMENT OF PHYSICS

### (Prof.) Dr Seema Teotia (HOD)

(1) Published a paper "A Review Paper on Cadmium Telluride Films" in International Journal of Physical and Social Science (ISSN 2249-5894) Dec 2020, 10(12), pp. 35-39.

(2) Published a Paper "An Article on Study of Nano Structure-Based Metal Oxide Gas Sensor" in International Journal of Engineering & Scientific Research (ISSN 2347-6532) Feb. 2021, 9(2), pp. 16-27.

(3) Invited lecture on "MAHILA SURAKSHA ABHIYAN" in Seminar On MAHILA SURAKSHA ABHIYAN in MAJU University on 28 Nov 2020

## DEPARTMENT OF MATHEMATICS

### Dr. Rekha Kumari, Assistant Professor

**Research Paper**

a) Rekha Kumari , A note to machine Repair Model: Operational Analysis and Numerical Investigation in Journal of emerging Technologies and innovative research September 2022,vol 9:9 page 689-692.

## DEPARTMENT OF COMMERCE

### Dr. Mahendra Pal Singh Yadav

### Assistant Professor

**Research Paper:**

1. "A Study of Financial Performance ICICI Bank:Comparative study with other private Banks" Our Heritage UGC Care Listed Journal (ISSN No.0474-9030)vol.68 Issue Jan 1-2020 page no. 2166 to 2174.
2. "A Study of Financial Performance: A Comparative Analysis of SBI Bank and HDFC Bank" Studies in Indian Place Names UGC Care Listed Journal(ISSN No.2394-3114) vol.40 ,issue 3,Feburary 2020 Page no.1218 to 1227.

**Research Paper:**

1. "A Study of Financial Performance: A Comparative Analysis of Icici Bank And Hdfc Bank" Anvesak UGC Care Listed Journal (ISSN No.0378-4568) vol.51, issue July to dec. 2021 page no.174 to 181.
2. "A Study of Non- Perfoming Assets: A Comparative Analysis of Sbi Bank And Hdfc Bank." Journal of education: Rabindra Bharati University(ISSN No.0972-7175)Vol.XXIII No. 10,2021 issue July to December 2021 page no 18 to 27.

3. "An Analysis of Human Development Index of India"NIU International journal of Human Rights (ISSN No.2394-0298)Vol .8(XXI) issue July to December 2021page no.166 to 171.

## DEPARTMENT OF ECONOMICS

### Ameen Uddin Ansari

**Assistant Professor**

1. Paper published entitled as "Post Merger Challenges before State Bank of India" in The International Journal of Analytical and Experimental Modal Analysis Vol XIII Issue VII July 2021 ISSN No. 0886-9367 pg 543-556
2. Paper published entitled as "Individual Digital Earnings and Taxation in India: Evidence from YouTube" in The International Journal of Analytical and Experimental Modal Analysis Vol XIII Issue VII July 2021 ISSN No. 0886-9367 pg 1141-1148
3. Paper published entitled "Domestic Systemically Important Banks in India: A Conceptual and Historical Background" IOSR Journal of Economics and Finance Vol 12 Issue 6 pp. 57-67 e-ISSN 2321-5933 Article DOI: 10.9790/5933-1206065767
4. A Chapter (Number Seven) entitled "Economic Implications of Stress in Asset Quality on Performance of Indian Economy: A Comperative Analysis" published in an Edited book entitled, "Make in India: A Path for Achieving Inclusive Growth" with ISBN 978-81-19079-05-6 by Bharti Publication, New Delhi
6. A Research Paper entitled "Emerging Sector-wise Trends in Asset Quality and Gross Advances of Domestic Systemically Important Banks in India" published in Indian Journal of Economics, Issue No. 408 UGC Listed No. 20761,Care listed ABDC Category C, ISSN. 0019-5170, by Department of Economics, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India.

NAAC 3rd Cycle B Grade

# कार्यालय, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

## प्राचार्य : डॉ. दीपा अग्रवाल

### प्राध्यापक सूची (विभागावार)

**1. हिन्दी विभाग**

1. डॉ० अरुण कुमार
2. डॉ० राजेश कुमार
3. डॉ० अब्दुल लतीफ
4. डॉ० ज़ेबी नाज़
5. डॉ० राजीव पाल
6. डॉ० प्रशान्त द्विवेदी

**2. अंग्रेजी विभाग**

7. डॉ० रेनू
8. डॉ० दीक्षा
9. डॉ० रेशमा परवीन
10. डॉ० राजकुमार
11. डॉ० साक्षी त्यागी
12. डॉ० उपदेश छिम्वाल

**3. उर्दू विभाग**

13. प्रो० सै० अरशद रिजवी
14. डॉ० जहाँगीर अहमद खाँ
15. डॉ० ईरम नईम

**4. संस्कृत विभाग**

16. डॉ0 कुसुम लता

**5. फारसी विभाग**

रिक्त

**6. भूगोल विभाग**

रिक्त

**7. शारीरिक शिक्षा विभाग**

17. डॉ० नितिन चौधरी

**8. दर्शनशास्त्र विभाग**

रिक्त

**9. समाज शास्त्र विभाग**

रिक्त

**10. इतिहास विभाग**

18. डॉ० सन्तोष यादव
19. डॉ० संजीव कुमार

**11. मनोविज्ञान विभाग**

20. डॉ० अजीता रानी
21. प्रो० मीनाक्षी गुप्ता
22. डॉ० खुशबू
23. डॉ० आयुष कुमार
24. डॉ० घनश्याम सरोज
25. डॉ० आकांक्षा देवी

**12. राजनीति विज्ञान विभाग**

26. डॉ० मौ० नासिर
27. डॉ० माया भारती

**13. अर्थशास्त्र विभाग**

28. प्रो० दीपा अग्रवाल
29. डॉ० ललित कुमार
30. डॉ० मोनिका खन्ना
31. डॉ० वन्दना शर्मा
32. डॉ० अमीन उद्दीन अन्सारी

**14. बी.एड. विभाग**

33. डॉ० प्रवेश कुमार
34. डॉ० प्रदीप कुमार
35. डॉ० अरविन्द कुमार
36. डॉ० माणिक रस्तोगी
37. डॉ० सोमेन्द्र सिंह
38. डॉ० बिजेन्द्र सिंह
39. डॉ० सोनिया यादव
40. डॉ० शाहिदा परवीन

**15. गणित विभाग**

41. डॉ० सुरेन्द्र कुमार गौतम
42. डॉ० शैलेन्द्र कुमार
43. डॉ० रेखा कुमारी
44. डॉ० लोकेश कुमार

**16. वाणिज्य विभाग**

45. डॉ० विनय कुमार शर्मा
46. डॉ० जुबैर अनीस
47. डॉ० विशाल कुमार
48. डॉ० महेन्द्र पाल सिंह यादव
49. डॉ० पंकज गम्भीर
50. डॉ० मीनू चौधरी

**17. रसायन विज्ञान विभाग**

51. प्रो० एस0एस0 यादव
52. डॉ० सहदेव
53. डॉ० कामिल हुसैन
54. डॉ० सुरजीत सिंह
55. डॉ० अमजद खान
56. डॉ० शकील अहमद

**18. भौतिक विज्ञान विभाग**

57. डॉ० सीमा तेवतिया
58. डॉ० सुमनलता
59. डॉ० मुदित सिंघल
60. डॉ० राजू
61. डॉ० ब्रह्म सिंह
62. डॉ० राहुल कुमार

**19. जन्तु विज्ञान विभाग**

63. डॉ० जागृति मदान धीगंड़ा
64. डॉ० बेबी तबस्सुम
65. डॉ० निधि गुप्ता
66. डॉ० नरेश कुमार
67. डॉ० नेहा नागपाल
68. डॉ० गजेन्द्र सिंह
69. डॉ० कैश मियाँ

**20. वनस्पति विज्ञान विभाग**

70. डॉ० हितेन्द्र कुमार सिंह
71. डॉ० प्रतिभा श्रीवास्तव
72. डॉ० दीपमाला सिंह
73. डॉ० दुर्गेश सिंह यादव



☞ पाषाण के भीतर भी मधुर स्रोत होते हैं, उसमें मदिरा नहीं शीतल जल की धारा बहती है। – जयशंकर प्रसाद

# कार्यालय, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

## शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की सूची

| कार्यालय स्टाफ | |
|---|---|
| **नाम** | **पदनाम** |
| श्री पृथी सिंह | कार्यालय अधीक्षक |
| श्रीमती शहला नाज़ | वरिष्ठ सहायक |
| श्रीमती कौसर जहाँ | वरिष्ठ सहायक |
| श्री राज कुमार | कनिष्ठ सहायक |
| श्री पीयूष कुमार | कनिष्ठ सहायक |
| श्री आसिफ | कनिष्ठ सहायक |
| श्री विनीत कुमार सक्सैना | कनिष्ठ सहायक |

| पुस्तकालय स्टाफ | |
|---|---|
| श्री श्याम सिंह | उपपुस्तकालयाध्यक्ष |
| कु० इन्दु बाला यादव | कनिष्ठ सहायक |

| वेकेशनल स्टाफ | |
|---|---|
| श्रीमती महजबी | स्टोर कीपर (रसायन विज्ञान) |

| चतुर्थ श्रेणी | | | |
|---|---|---|---|
| **नाम** | **पदनाम** | | |
| श्री राधेश्याम | परिचर | श्री रमेश | परिचर |
| श्री सधीर कुमार | परिचर | श्री अम्मान शाकिर | परिचर |
| श्री अशोक कुमार | परिचर | श्री अजीजा बानो | परिचारिका |
| श्री लाल सिह | माली | श्री अशोक कुमार(द्वितीय) | एनीमल केचर |
| श्री शाहिद खॉ | चौकीदार | श्री हरिचन्द्र | स्वच्छकार |
| श्री भागमल | परिचर | श्री जयकिशन | स्वच्छकार |
| श्री अमित कुमार | परिचर | श्री विक्की सैनी | परिचर |



☞जिस काम की तुम कल्पना करते हो उसमें जुट जाओ। साहस में प्रतिभा, शक्ति और जादू है। साहस से काम शुरु करो पूरा अवश्य होगा। – अज्ञात

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# सन्त रविदास के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ० अरुण कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी

'सन्त' उस व्यक्ति को कहते हैं जो सदा सत्य का आचरण करे और अपनी इंद्रियों पर नियन्त्रण रखते हुए सांसारिक तृष्णाओं का अन्त कर दे। सन्त सर्व हित चिन्तक होते हैं। विश्व के कल्याण की बात करते हैं। सन्त संसार और आध्यात्म के मध्य सेतु का कार्य करते हैं। उनके आचरण सर्वजनीन, सार्वकालिक एवं सर्वथा प्रासंगिक होते हैं। वे अपने विचारों से समाज को सही दिशा प्रदान करते हैं। सन्त रविदास भी ऐसे ही दिव्य गुणों से सुशोभित महान सन्त थे। उनके क्रांतिकारी विचार न केवल तद्युगीन विसंगतियों पर कुठाराघात करते हैं अपितु वर्तमान समाज में व्याप्त सामाजिक विसंगतियों एवं कुरीतियों को भी दूर करने की प्रेरणा देते हैं।

सन्त रविदास या रैदास (1398–1518 ई0) निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख सन्त एवं समाज सुधारक थे। भारत में विक्रम की 15 वीं शताब्दी के अन्तिम भाग से लेकर 17 वीं शताब्दी के अन्त तक निर्गुण भक्ति काव्य की दो धाराएं ज्ञानाश्रयी तथा प्रेमाश्रयी समान्तर रूप से चलती रहीं। सन्त कवियों में सन्त कबीर दास, सन्त रैदास, नामदेव, तुकाराम, पीपा, नानक देव, हरिदास, निरंजनी, दादू दयाल, मलूकदास, धर्मदास, सुंदरदास, रज्जब, गुरु अंगद, रामदास , अमरदास, गुरु अर्जुन देव, लाल दास, बाबा लाल, वीरभान, शेख फरीद, सन्त भीखन, सन्त सतना, सन्त बेनी, सन्त धन्ना आदि प्रमुख हैं। इसमें अधिकांश रामानंद के शिष्य थे। सन्त रविदास भी रामानंद के 12 शिष्यों में से एक थे और कबीर के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे। सन्त कबीर जिन बातों को उग्र होकर दृढ़ता और साहस से कहते हैं, उन्हीं बातों को सन्त रैदास अत्यन्त सहज, सरल और सौम्य भाव से कहने में समर्थ होते हैं। निम्न वर्ग (चर्मकार) में जन्म होने के बावजूद भी वे अपने उत्तम आचरण, सहज जीवन शैली, उत्कृष्ट साधना पद्धति धारण करने और विशुद्ध आत्मज्ञानी होने के कारण वे भारतीय धर्म साधना के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे।

जिस प्रकार प्रसंग–गर्भत्व साहित्य को सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करता है उसी प्रकार सन्त द्वारा दिए गए उपदेश और उनके संकलित पद एवं दोहे सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से शाश्वत प्रासंगिक होते हैं। सन्त और उनके विचारों की प्रासंगिकता उसे वर्तमान संदर्भ में प्रतिफलित होने का सामर्थ्य देती है। सन्त एवं साहित्यकार की वर्तमान पारखी दृष्टि भविष्य की चिरंतन समस्याओं का समाधान सहज ही ढूँढ लेती है। किसी भी सन्त कवि अथवा साहित्यकार के विचारों की प्रासंगिकता से तात्पर्य वर्तमान में उसकी उपादेयता एवं समीचीनता से है। सन्त रविदास के सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विचारों में समकालीन चेतना स्वतः ही प्रतिबिंबित होती है। वे सात्विक मान्यताओं का खुलकर समर्थन करते हैं। समाज, धर्म, संस्कृति, आडम्बर एवं अंधविश्वास की उन मान्यताओं का सिरे से खंडन करते हैं जो मूल्यपरक एवं कल्याणकारी न हों। लगभग 800 वर्ष पुराने विचारों में आज भी वही ताज़गी, वही सादगी, वही संदेश, वही प्रासंगिकता है। उनकी रचनाधर्मिता एवं सद्विचारों में अक्षुण्ण मूल्यों का समाहार है। सन्त रविदास की वाणी ने हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति के विकृत सामाजिक एवं धार्मिक अंधविश्वासों एवं बाह्याडम्बरों का खंडन करके अपने नैतिक व आध्यात्मिक चरित्र बल से तद्युगीन समाज में ज्ञान का जो अलख जगाया, वह हमारे आज के टूटते–बिखरते जीवन के सापेक्ष उतना ही मूल्यवान है जितना अपने युगीन सन्दर्भो में था।

'सन्त रैदास का जन्म काशी में हुआ था। भक्तमाल और डा0 भंडारकर के अनुसार उनका जन्म 1299 ईस्वी में हुआ था। डॉ0 भगवत मिश्र ने उनका जन्म काल 1398 तथा मृत्यु काल 1448 माना है। यह प्रसिद्ध है कि वे मीराबाई (1498–1546 ई0) के गुरु थे। अंतः साक्ष्य से पता चलता है कि वे जाति के चमार (चर्मकार) थे। उन्होंने कहा है– 'ऐसी मेरी जाति विख्यात चमारा' ––– अनंत दास द्वारा लिखित 'परिचई' और प्रिया दास के 'सटीक भक्तमाल' के अनुसार रैदास को स्वामी रामानंद ने दीक्षा दी थी और उनकी पत्नी का नाम लोना था। उन्होंने प्रयाग, मथुरा, वृंदावन, भरतपुर, जयपुर, पुष्कर, चित्तौड़ आदि स्थानों का भ्रमण किया था। वे सिकंदर लोदी के आमंत्रण पर दिल्ली भी गए थे।'

निम्न जाति में पैदा होने कारण जाति–पाँति, वर्ग–भेद, छुआ–छूत और अस्पृश्यता का जितना कटु अनुभव सन्त रविदास को था कदाचित उतना कटु अनुभव सूर, तुलसी, जायसी अथवा किसी अन्य कवि को नहीं था। उन्होंने हृदय से अनुभव किया कि जाति–पाँति की खाई बहुत गहरी है। जब तक इसे वैचारिक सौहार्द्र्य से पाटा नहीं जायेगा तब तक मानव–मानव के बीच एकता सम्भव नहीं है। उन्होंने धर्म के उदारवादी पक्ष को उद्घाटित करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि धर्म किसी एक वर्ग, जाति अथवा किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं हो सकता, अपितु यह सबके लिए समान रूप से मान्य होता है। जो धर्म सर्व कल्याणकारी न हो वह धर्म हो ही नहीं सकता है। धर्म तो सार्वकालिक, सर्वजनीन एवं सर्वग्राह्य होता है। उनके इन विचारों ने निम्न वर्ग के लोगों को बहुत गहराई से प्रभावित किया, उनमें आत्म सम्मान एवं आत्मगौरव की भवना का अलख जगाया और इसे एक आन्दोलन के रूप में खड़ा कर दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि जन्म अथवा जाति से कोई छोटा अथवा बड़ा नहीं होता सबका सृजनहार एक है और उसकी भक्ति पर सबका समान अधिकार है–

जन्म जात मत पूछिए, का जात अरु पात
रविदास पूत सभ प्रभ के, कोउ नहिं जात कुजात।।
बहमन वैसे सूद अरु खत्री, डोम, चमार, मलेछ मन सोई।
होई पुनीत भगवन्त भजन तें, आपु तरे तारे कुल दोई।।

सन्त रविदास जी कहते हैं कि कोई व्यक्ति केवल पुण्य कर्मों और हरि की भक्ति से ही श्रेष्ठ हो सकता है। सब मनुष्य को ईश्वर ने एक ही पवन, एक ही जल, एक प्रकाश से जीवन दिया है। सबके अन्दर एक ही तरह का रक्त है, सबका शरीर हाड़, मांस और नाड़ी का एक पिंजर है, जिसमें जीव रूपी पंक्षी बसेरा करता है। इस संसार में मेरा और तेरा कुछ भी नहीं है, केवल मेरा और तेरा का भाव तभी तक है, जब तक पंक्षी रूपी जीव पिंजरे रूपी शरीर में निवास करता है–

जल की भाँति पवन का थम्भा, रक्त बूँद का गारा।
हाड़–मांस नारी को पिंजर, पंखी बसै बिचारा।।
प्रानी किया मेरा, तेरा, जैसे तरुवर पंखि बसेरा।
मेरी जाति कमीनी, पाँति कमीनी, ओछा जनम हमारा।
तुम सरनागत राजा रामचन्द्र, कहि रविदास चमारा।।

वे कहते हैं– जाति–पाँति, ऊँच–नीच, गरीब–अमीर के भाव का महारोग मानव, मानव को एक नहीं होने देता और यह दुर्भाव मानवता को विनाश की ओर ले जाती हैं–

जाति–पाँति के फेर महि , उरझि रहइ सभ लोग।
मानुषता कूँ खात हइ, रविदास जात कर रोग।।

सतसंग में इतना बल है कि चन्दन के सम्पर्क में आकर अरंडी का पेड़ भी सुगन्धित हो जाता है। उसी प्रकार साधुओं के सत्संग और हरि के भजन से निम्नकुल में जन्मे रविदास भी उत्तम सद्विचारों वाले सन्त और भक्त हो गये। सत्संग द्वारा अर्जित भक्ति और ज्ञान से उन्हें हरि का सानिध्य प्राप्त हुआ –

तुम चन्दा हम अरंड बापुरो, संग तुम्हारे बासा।
नीच रूख तैं ऊँच भयो है, गंध सुगंध निवासा।।
माधउ सत संगत सरन तुम्हारी, हम अवगुन तुम उपकारी।।
जाती ओछी, पाती ओछी, ओछा जनम हमारा।
राजा राम की सेवन कीन्हीं, कहि रैदास चमारा।।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सन्त रविदास के विचार प्रगतिशीलता से सम्पृक्त हैं। वंचित समाज से होते हुए भी उन्होंने अपने कर्मबल एवं चरित्रबल से विषमता से भरे हुए समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित किया और सन्त शिरोमणि के पद से विभूषित हुए। समत्व की भावना के समर्थक सन्त रैदास ने अतार्किक, अमानवीय एवं संकीर्ण विचारधाराओं का पुरजोर विरोध किया और सर्वकल्याणकारी उदात्त विचारों को प्रतिष्ठित किया । उन्होंने तद्युगीन सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक विशृंखलताओं, तथा उच्छृंखलताओं को पहचान कर उसका निवारण करने का सद्प्रयास किया। वर्तमान में सामाजिक विघटन एवं मानवीय मूल्यों के क्षरण के मूल में कमोवेश वही कारण हैं, जो सन्त रविदास के समय में थे। आज परिवेश और परिस्थितियों के बदलने के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है, किन्तु विघटन के मूल में छल–छद्म, स्वार्थलोलुपता, कटुता वर्चस्व की दुर्भावना, सत्तालोलुपता एवं मानसिक विकृतियाँ आज भी कमोवेश वैसी ही हैं, जैसे पहले विद्यमान थीं। अतः सन्त रविदास के सात्विक विचार न केवल तद्युगीन समाज के लिए अपितु वर्तमान समाज के लिए भी प्रासंगिक हैं। सृष्टि में शाश्वत प्रगतिशीलता एवं मानवीय मूल्यों के संरक्षण के लिए सन्त रविदास के विचार सर्वथा अनुकरणीय हैं।

NAAC 3rd Cycle B Grade

# भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में संत कबीरदास का सामाजिक दृष्टिकोण

डॉ० अब्दुल लतीफ
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

महात्मा कबीर का युग ऐसे शासकों का युग था जों विधर्मी थे। जो भारतीय संस्कृति को अपने अनुसार परिवर्तित करना चाहते थे। भारतभूमि जिसने न जाने कितने धर्मो एवं संस्कृतियों को अपने में समेट लिया था, उसी भारत की पवित्र भूमि को यह शासक रक्त की प्यास व कटटरता से अपवित्र कर रहे थे। इन विधमर्मियों के घात प्रतिघात सहने के लिये हिन्दू धर्म के पंडितों ने उसे इतना कटटर, बाहाडम्बर व कर्मकाण्डों से परिपूर्ण कर दिया था। ऐसे समय में सामाजिक स्थिति तो जर्जर थी ही साथ साथ राजनैतिक व आर्थिक स्थिति भी उतनी ही धाराशाही प्रतीत होती थी। इस समय हिन्दु–मुसलमानों का संघर्ष चलता ही रहता था, चाहे आक्रमणों के पीछे कितना ही छोटा कारण क्यों न हो? आन्तरिक फूट के कारण देश की एकता कमज़ोर हो रही थी। राजपूतों की साहसिक गाथाएं, जिनसे देश की जनता को प्रेरणा मिलती थी वह समाप्त हो रही थी। ऐसी परिस्थितियों में कबीर ने समाज की आन्तरिक व बाह्य प्रवृत्तियों पर एक साथ चोट की, जिसे समाज कभी भूल नहीं सकता। ऐसा माना जाता है कि कबीर निरक्षर थे किन्तु फिर भी उनमें स्वानुभूत ज्ञान व प्रेम का अक्षय भण्डार था। उनकी वाणी में सांस्कृतिक परम्परा का मधुर पुट था।

एक विशेष बात यह है कि सामाजिक विकृति का अनुभव तुलसीदास को भी था। उन्होंने रामचरितमानस के उत्तरकांड में कलियुग के माध्यम से तथा कवितावली और दोहावली आदि अन्य रचनाओं में समाज में व्याप्त कुरीतियों, आडम्बरों, पाखण्ड, नैतिक पतन आदि का विस्तृत विवरण भी दिया है और रामराज्य के माध्यम से आदर्श सामाजिक परिवारिक व्यवस्था की कल्पना भी की किन्तु उनकी वाणी में वह आक्रोश नहीं है, वह विद्रोही भावना नहीं है जो इन संतों की वाणी में पाई जाती है। इसका कारण जन्मजात या जातिगत अन्तर हो सकता है। सम्भवता यही कारण है कि तुलसीदास परम्परा से जुड़े हैं जबकि कबीरदास ने **'पुस्तकलेखी'** की अपेक्षा **'अनुभवदेखी'** पर बल दिया।

उन्होनें कहा– **तू कहता कागज़ की लेखी, मैं कहता आखिन की देखी।**
**मैं कहता सुरझावन हारी, तू राखा उरझावन हारी।।**

कबीर कहते हैं– मनुष्य में विभेद करने वाले लोगों! तुम परमात्मा की असीम महिमा को जानते हुये भी उसे भूल जाते हो? वह सर्वव्यापी है। वह प्रत्येक के हृदय में बसा हुआ है। एक ही परमात्मा ने समस्त संसार को बनाया है, अतः दूसरे की निन्दा कर तुम प्रभु को ही निन्दित करते हो। समस्त संसार उसी एक ज्योति से प्रकाशित है तो फिर भला अच्छा और बुरा, उच्च और निम्न का भेद कैसा? कबीर ने कहा–

**लोका जानि न भूलौ भाई।**
**खालिक खलक–खलक में खालिक सब घटि रहयौ समाई**
**अला एकै नूर उपनाया, ताकि कैसी निन्दा।**
**जे नूर ते सब जग कीया कौन भला को मन्दा।**



☞ वृक्ष अपने सिर पर गरमी सहता है पर अपनी छाया में दूसरों का ताप दूर करता है। – तुलसीदास

हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषता है– राष्ट्रीय एकता। सन्त कबीर उसी सर्व धर्म समभाव के समर्थक थे। उनके अनुसार राम–रहीम, केशव, अल्लाह सब एक हैं। बिस्मिल्लाह और विश्वम्भर एक ही परमात्मा के बोधक हैं। कबीर कहते हैं कि भेदपूर्ण आचरण प्रत्येक मनुश्य को अलग एवं ऊॅच–नीच दिखाने के लिये किया जाता है। अरे मनुष्य तू उचित मार्ग का आलम्बन कर, क्योंकि ऊपर–नीचे, अत्र–तत्र–सर्वत्र वही सर्वशाक्तिमान परमात्मा का वास है। हिन्दू मुस्लिम ही नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य का निर्माता वही है–

**हमारे राम रहीमा करीमा केसो, अल्लाह रॉग सति होई।**
**बिसमिल मेटि विसंभर एकै और न दूजा कोई।।**

कबीर धन संचय के विरूद्ध थे। उन्होंने आदर्श गृहस्थ को इससे सतर्क किया है क्योंकि इससे मनुष्य सांसारिक जंजाल में उलझकर रह जाता है। वे कहते हैं–

**पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।**
**दोनो हाथ उलीचिए, यही सज्जन का काम।।**

इतना ही नहीं वे केवल गृहस्थ को ही नहीं बल्कि सभी मनुष्य को संग्रह करने से मना करते हैं और अर्जित धन को दूसरे की सहायता में खर्च करने की सलाह देते हैं। वे कहते हैं कि सज्जन पुरुष उसी प्रकार धन संचय नहीं करते जिस प्रकार वृक्ष कभी फल नहीं खाता और नदी कभी जल संचय नहीं करती। दोनों ही परार्थ हित कार्य में संलग्न रहते हैं– **वृक्ष कबहु नहिं फल भजैं, नदी न संचे नीर।**
**परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर।।**

नारी के प्रति सभी संत कवियों का दृष्टिकोण निन्दनीय था। उन्होंने केवल उसके कामिनी एवं व्यभिचारिणी रूप की निन्दा की। कबीरदास जी ने कामिनी नारी को काली नागिन के समान बताया है। कबीर कहते हैं– पराई पत्नी और पराई सुन्दरी के आकर्षक प्रभाव से विरला ही मुक्त होता है। यह सर्वविदित है कि नारी निन्दा से कबीर का तात्पर्य काम और विषय–वासना से है इसलिए उन्होंने नारी को नरक का कुंड कहा है–

**नारी कुड नरक का विरला थबै वाग।**
**कोई साधु जन ऊबरै, सब जग मूवा लाग।।**

इसका अर्थ यह नहीं है कि कबीर के हृदय में नारी के प्रति सम्मान नहीं था। जब बात आती है– पतिव्रता नारी की, उसके आदर्श स्वरूप की तो वह कह उठते हैं– कि पतिव्रता नारी काली, कुचित कुरूप होते हुये भी रूप और सौन्दर्य से युक्त अधम नारी से उत्तम है।

उन्होंने कहा– **''पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।''**

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संत कबीर अपने समय के कबीर थे। उनके संदेश में जितनी गहराई है उनके शब्दों में जितनी मर्मस्पर्शिता है। उनके काव्य में जितना रस है उतनी ही अभिव्यक्ति उनकी अनुभूति में है। यही कारण है कि आडम्बर भरे सम्पूर्ण जगत के विरोधी, कबीर का विरोध करके भी कुछ न कर सके। समाज उनका बहिष्कार करके भी छोड़ न सका। रामानन्द उन्हें ठोकर लगाकर भी ठुकरा न सके लेकिन दु:ख की बात यह है कि हिन्दू और मुसलमान उन्हें अपनाकर भी उनके सिद्धान्तों को आज तक नहीं अपना सके। सम्भवता: प्रत्येक दिव्यात्मा का अंत ऐसा ही होता है, और कबीर भी उसके अपवाद न थे।



☞ **प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें उतावली ठीक नहीं,**
**जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय पर फल वह अपने समय से ही देता है। – वृंद**

# मेरे वन्य जीव शिक्षक एवं पर्यावरण संरक्षक बनने की कहानी

डॉ० नरेश कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जंतुविज्ञान विभाग

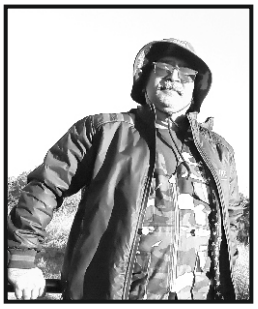



वन्य जीवन से मेरा जुड़ाव काफी पुराना है। बचपन से ही जंगल और उनमें रहने वाले प्राणियों से लगाव था, सो बारहवीं जीव विज्ञान विषय से किया और हापुड़ के एस०एस०वी० पीजी कॉजेज से बी०एससी० शुरू की। उसमें पर्यावरण विज्ञान और इकोलॉजी पढे और वन्य जीवन का लगाव और गहरा हो गया। जन्तु विज्ञान विषय से एम०एससी० की और 2003 में अपने कॉलेज में जन्तु विज्ञान पढ़ाने में लग गया। जब विषय चुनने की बात आयी तो इकोलॉजी व वाइल्डलाइफ प्रथम वर्ष के लिए और जैव विकास को तृतीय वर्ष व एम0एससी0 में मैंने सबसे पहले चुना लिया। घूमने का शौक तो बचपन से था ही, एम0एससी0 में एजूकेशन टूर होने से यह और गहरा हो गया। तब जंगल जाना कभी कभार ही होता था। 2004 में अपने विभाग के ही डॉ. ए.के. गुप्ता जी से पीएच0डी0 करने का आग्रह किया तो वो मान गये और शोध के लिए गुरू मिल गये। इत्तफाक से उन्हें भी घूमने का बहुत शौक था सो हमें भी कई बार बाहर जाने का मौका मिल ही गया। क्योंकि विषय जीव विज्ञान था तो भारत के करीब–करीब सभी राष्ट्रीय उद्यानों की जानकारी थी, परन्तु किसी से गहरा लगाव नहीं था। पहले कभी एक–दो बार कॉर्बेट गया था पर कोई जान पहचान नहीं थी तो बड़ी परेशानी से जंगल से जुड़ी जानकारी मिल पाती थी, बस घूमकर लौट आये थे। 2009 में शोध पूरा हुआ तो पुराना वन्यजीवन का लगाव फिर से जाग उठा। अब काम करने की स्वतन्त्रता और बढ़ गयी तो सोचा क्यों न अपना जंगल का शौक संरक्षण में बदल दिया जाये। अपने कॉलेज के छात्रों के साथ मिलकर ''वन्यजीव संरक्षण प्रोग्राम'' शुरू किया। अब हर साल कुछ छात्र प्रोग्राम से जुड़ते और हम उन्हें लेकर कॉर्बेट व राजाजी जाने लगे। 2011 के अक्टूबर महीने में जब हम कॉर्बेट गये तो हमारे एक मित्र नन्दन मेहता से हमने वन्यजीव में शोध की इच्छा जाहिर की। नन्दन रामनगर में रहते थे और जंगल सफारी उपलब्ध कराया करते थे। उनके मुख से पहली बार मैंने श्री सतीश चन्द्र उपाध्याय जी का नाम सुना और जैसा नन्दन मेहता ने बताया वे उस समय शोध रेंज में अधिकारी थे, और वन्य जीवन की गहरी जानकारी उन्हें थी। मैंने मन बना लिया कि क्यों न उनसे मिलकर अपनी बात रखी जाये। अगले महीने नवम्बर 2011 में जब मैं दोबारा कॉर्बेट गया तो पहले मैंने अपने कुछ सुझाव तत्कालीन निदेशक श्री रंजन कुमार मिश्र को दिये फिर मैं श्री सतीश चन्द्र उपाध्याय जी का पता पूछते हुए उनके सी.टी.आर. स्थित आवास पर पहुँचा। सूचना भेजने पर उन्होंने अन्दर बुला लिया। मैंने उन्हें पहली बार देखा तो लगा कि रोबिले और सख्त इंसान हैं। कुछ कहने की हिम्मत जुटाई और अपने लिखित सुझाव उन्हें दिये। उन्होंने बड़े ध्यान से वो पढ़े और विस्तार से चर्चा की। इसी बीच याद आया कि मेरी पत्नी, बेटी व तीन छात्र सुमित, मनीष और हर्ष बाहर गाड़ी में बैठे इन्तजार कर रहे थे। मैं बाहर आया, और थोड़ी देर में फिर अन्दर चला गया। लौटते ही श्री उपाध्याय साहब ने पूछा कौन है साथ में ? मैंने कहा, सर पत्नी और बेटी हैं। उन्होंन कहा अरे! उन्हें भी लाइये। मैं संकुचाते हुए बोला, सर सॉरी मुझे आपके स्वभाव की जानकारी नहीं थी। कहीं आप नाराज़ ना हो जाएँ, इसीलिए नहीं लाया। इस पर वो ठहाका लगाकर हँसे और बोले, अरे डाक्टर साहब! वो हमारे भी बच्चे हैं! आप अन्दर लाइये पहले। मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। रोबिला और शान्त व्यक्तित्व। मैं अन्दर से खुश होकर बाहर निकला और परिवार को अन्दर ले गया। मुझे अच्छी तरह वो क्षण याद है, जब श्री उपाध्याय जी ने एक अजनबी इंसान को इतना सम्मान दिया, मैं गदगद हो



☞ चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाएँ। – प्रेमचंद

उठा। जब मैंने विस्तार पूर्वक अपना पारिवारिक विवरण व अपने शोध के विचार से उन्हें परिचित कराया। उन्होंने बड़ी जबरदस्त रुचि दिखाई और मुझे कालागढ़ ट्रेनिंग सैन्टर में चल रही दिल्ली विश्वविद्यालय के एक सेवा निवृत्त प्रोफेसर वनस्पति शाखा के महान वैज्ञानिक डॉ0 सी0 आर0 बाबू की कार्यशाला में जाने का सुझाव दिया। मैंने सहमति जताई तो उन्होंने कालागढ़ ट्रेनिंग सैन्टर फोन कर हमारे रहने आदि की व्यवस्था कर दी। हमारी यह पहली मुलाकात थी जब श्री सतीश चन्द्र उपाध्याय जी ने अपने ज्ञानी, मिलनसार और व्यवहार कुशल होने का परिचय दिया। इसके बाद अनेक बार उन्होंने मार्गदर्शन दिया और वन्यजीवन की मेरी जानकारियों को बढ़ाया। मैनें उन्हें अपना वन्य जीवन का गुरु बना लिया और हमारी कार्य स्थली जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क हो गयीं। मैंने वहा के जगंलों, नदियों, पहाड़ों और वन्य जीवों खास तौर पर बाघों के बारे में जानना और समझना शुरू कर दिया और यह क्रम आज भी जारी है।

## समय का महत्व

इमरान अली
बी0ए0 (प्रथम वर्ष)

इंसान अपने दिमाग में जो भी बना सकता है और जिस पर वह विश्वास करता है, वह उसे हासिल कर सकता है। किसी भी व्यक्ति पर पूरी तरह से भरोसा करना ही विश्वास है। किसी भी चीज़ के होने से बहुत पहले ही उस पर भरोसा करना ही विश्वास कहलाता है। विश्वास करना ही किसी उपलब्धि को पाने की ओर पहला कदम है। सब कुछ हकीकत में बदलेगा, अगर आप उन पर भरोसा रखेंगे। अगर किसी काम के बारे में आपको यह लगता है कि वह होने वाला नहीं है तो आप उसको करने की कोशिश ही क्यों करेंगे। हर काम विश्वास के साथ शुरू कीजिए और इससे निर्धारित होगा कि आप उसमें कितनी दूर जाने वाले हैं। किसी भी बात की हर बार पुष्टि हमें विश्वास की ओर अग्रसर करती है और जब विश्वास में गहरी आस्था होने लगती है तब चीजें अपने आप होने लगती हैं। समय सबसे बड़ा है। यदि विद्यार्थी जीवन में समय का सही उपयोग किया जाए तो जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त होती है। इसके विपरीत जो विद्यार्थी 'कर लेंगे या पढ़ लेंगे' का दृष्टिकोण रखते हैं, वे असफलता का मुँह देखते हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपना हर कार्य निर्धारित समय पर या उसके पूर्व ही समाप्त कर लें जिससे बचे हुए समय में दूसरे कामों को करने की रूपरेखा बनायी जा सके।

☞ केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है उतने श्रम में भारत की सभी भाषाएँ सीखी जा सकती हैं। – विनोबा

# स्वस्थ्य रहने और सफलता प्राप्त करने के मंत्र

डॉ० मोहम्मद नासिर
असि. प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

अरस्तु का कथन है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारे परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति कुछ दायित्व हैं, लेकिन हमारा प्रथम कर्तव्य स्वयं के प्रति है क्योंकि जब तक हम स्वयं में सक्षम, स्वस्थ और सफल नहीं होंगे तब तक हम किसी का भी कोई भला नहीं कर सकते।

सफलता का बहुत छोटा सा रहस्य है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था में हमें जो भी कार्य या उत्तरदायित्व मिले उसको सर्वोत्तम ढंग से पूरा करने का प्रयत्न करें। आप लोगों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है, आप भाग्यशाली हैं क्योंकि उच्च शिक्षा में सकल नामांकन दर केवल 27% है। आप लोगों को यह सौभाग्य प्राप्त है तो इस सौभाग्य को अवसर में बदलने का प्रयास करिए। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कुछ नियमों का पालन अवश्य करना पड़ता है और सफलता के लिए सर्वप्रथम हमें अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना होगा। खानपान, उचित नींद, मनोरंजन, व्यायाम, योग आदि के द्वारा स्वस्थ शरीर का निर्माण करना हमारा प्रथम कर्तव्य है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है इसलिए स्वास्थ्य की देखभाल करना अति आवश्यक है। अपना सोने एवं जागने का समय निश्चित करें। ज्यादा रात तक न जागें एवं सुबह जल्दी बिस्तर छोड़ें। सुबह उठकर कम से कम 2 गिलास पानी पिएं और व्यायाम अवश्य करें। अपने भोजन में विभिन्न प्रकार की सब्जियां, फल, दूध, दही, अंडे आदि शामिल करें। पर्याप्त जल का सेवन करें। हमेशा एक्टिव रहने का प्रयास करें। अपने मन में किसी प्रकार का बोझ न रखें अपने मन के भावों को किसी विश्वसनीय व्यक्ति के साथ साझा करें। अनुभवी एवं बड़े लोगों के साथ समय व्यतीत करें। अपने को और अपने आसपास के पूरे वातावरण को साफ सुथरा रखने का प्रयत्न करें। मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का कम से कम प्रयोग करें।

अपने व्यक्तित्व में उदारता, सहिष्णुता, पंथनिरपेक्षता, न्याय, दयालुता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रप्रेम, स्त्रियों के प्रति सम्मान, लोगों की सहायता करना और उनकी गलतियों को माफ करना, हमेशा आगे बढ़कर नेतृत्व करने के लिए तैयार रहना आदि गुणों का विकास करने का प्रयत्न करें। इससे न केवल आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी बल्कि आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा जिससे आप अपने को अधिक सुखी और संतुष्ट महसूस करेंगे।

कैरियर में सफलता के लिए आवश्यक है कि अपने व्यक्तित्व का मूल्यांकन करें कि मेरे अंदर कौन–कौन से गुण हैं? मेरी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति कैसी है? मैं किस क्षेत्र के लिए अधिक उपयुक्त रहूंगा? मैं कितना समय अभी आगे पढ़ाई में दे सकता हूं? मेरे माता–पिता मुझे कितना और कहां तक सपोर्ट कर सकते हैं? इसके लिए किसी अनुभवी व्यक्ति से या कैरियर एक्सपर्ट से सलाह भी ले सकते हैं। अपनी स्थिति का मूल्यांकन करने के बाद अपना लक्ष्य निर्धारित करें। सपने बड़े देखें किंतु अगर आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है तो जल्द से जल्द अपने को किसी भी क्षेत्र में सफल बनाकर आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करें और उसके बाद अपने मुख्य सपने को पूरा करने का प्रयत्न करें। खुद को व्यवस्थित करें और लक्ष्य के अनुरूप योजनाएँ निर्धारित करें। पढ़ाई का शेड्यूल बनाएँ, अपने क्षेत्र के सफल लोगों के संपर्क में रहें, अपने जैसे लोगों



☞ अवसर तो सभी को जिंदगी में मिलते हैं किंतु उनका सही वक्त पर सही तरीके से इस्तेमाल कितने कर पाते हैं? – संतोष गोयल

का एक समूह बनाएँ और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए साथियों से परिचर्चा करें, किंतु समय बर्बाद करने वाले साथियों से दूर रहें। मल्टी टास्किंग से दूर रहें, केवल अपने लक्ष्य पर फोकस करें, खुद को चुनौती दें और निर्धारित समय में अपने प्रत्येक कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करें।

जो भी कार्य करें पूरी लगन, ईमानदारी और मेहनत से करें। अपने कार्य में महारत हासिल करने का प्रयत्न करें, कठोर परिश्रम की आदत डालें और हमेशा अनुशासन में रहें, साथ ही माता–पिता और गुरुजनों का कहना मानें। जो भी पढ़ें उसका लिखकर अभ्यास अवश्य करें। आत्मविश्वास और दृढ़ता बनाए रखें कि मुझे सफल अवश्य होना है, समय का महत्व समझें और निरंतर प्रयत्न करते रहें, हमें यह याद रखना है कि किसी भी स्थिति में हार नहीं माननी है, निरंतर कर्म करते रहना है।

ईश्वर किसी की भी मेहनत को खराब नहीं करते, कर्म का फल अवश्य मिलता है, भले ही समय अधिक लगे इसलिए सदैव आशावादी, प्रसन्नचित्त और कर्तव्यनिष्ठ बने रहिए।

## क्योंकि वो लड़की थी

सानिया सिददीकी
बी0काम0 (द्वितीय वर्ष)

एक लड़की की उसके सपनों से जुदाई थी,
आगे की दुनिया उसने अपनी पिंजरे में पाई थी।
जब की उसने आज़ादी की माँग,
तो बात उसके किरदार पर आई थी।
चंद लड़कों से बात करके उसने घर की इज़्जत गिराई थी।
काट के पंख, पिंजरे में उसे गिराया था,
पहना के सलवार सूट, गृहस्थी बसाना सिखाया था,
ना वो कभी रोई थी, ना उसने कभी किसी को रुलाया था,
पर ज़िंदगी के इस सफर में पहली बार खुद को अकेला पाया था।
''लड़की हो, अपनी हद में रहो,'' यह सबने सिखाया था।
यही समझकर उसने अपने आपको जिंदा लाश बनाया था।



☞ विजय गर्व और प्रतिष्ठा के साथ आती है पर यदि उसकी रक्षा पौरुष के साथ न की जाय तो अपमान का जहर पिला कर चली जाती है। – मुक्ता

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# आदतों का महत्त्व

डॉ० खुशबू
असि. प्रोफेसर मनोविज्ञान

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते हैं, लेकिन आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और आपकी आदतें अवश्य ही आपका भविष्य बदल देंगी" – **डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

इस सम्बन्ध में देश के पूर्व राष्ट्रपति एवं सबके चहेते डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा यहां तक कहा गया है कि अगर आप अपना भविष्य बदलना चाहते हैं तो अपनी आदतों में बदलाव करिए, अवश्य ही आपका भविष्य वैसा होगा जैसा आप चाहते हैं। आदतों का महत्व स्कूल और कॉलेज जीवन में बहुत होता है। इस समय आदतों को बनाना बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि यह आगे जाकर हमारे व्यवहार का हिस्सा बन जाती हैं और हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। अच्छी आदतें समय पर काम करने, अध्ययन करने, स्वस्थ खाने के साथ–साथ अन्य बहुत से चीजों को संभव बनाती हैं। अच्छी आदतों के साथ जीवन सुखद और सफल होता है जबकि बुरी आदतें हमारे जीवन को दुखद और असफल बनाती हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि किसी आदत को छोड़ना या बदलना बहुत मुश्किल होता है, इसलिए आदतों को अच्छा और सकारात्मक बनाना बहुत महत्वपूर्ण है।

**बड़ी सफलता को पाने के लिए एक छोटी शुरुआत करें**

जब कोई व्यक्ति अच्छी सेहत पाना चाहता है या फिट रहना चाहता है तो वह एक दिन के व्यायाम से या खान–पान पर नियंत्रण कर उसे प्राप्त नहीं करता बल्कि हर दिन की एक छोटी सी कोशिश से व्यक्ति एक दिन अपनी इस इच्छा को पूरी कर पाता है। ऐसे ही व्यक्ति एक छोटे प्रयास से जीवन में बड़े बदलाव ला सकता है, चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो। आज की भागदौड़ और चकाचौंध भरी ज़िन्दगी में हर व्यक्ति जीवन में कुछ बड़ा चाहता है, सबकुछ पा लेना चाहता है, बड़े सपने देखता है जो कि देखना भी चाहिए, परन्तु वह खुद से यह सवाल कभी नहीं पूछता कि अभी वर्तमान में वह ऐसा क्या कर सकता है जिससे वह अपने सपनों की ओर एक कदम आगे बढ़ जाए। जो व्यक्ति ऐसी सोच रखते हैं असल में वो ही कामयाब होते हैं ।

**आपकी पहचान आपकी आदतों से बनती है**

आदतों को बदलना इतना मुश्किल क्यों लगता है? ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि हम गलत तरीके से उसे बदलने की कोशिश करते हैं। जीवन में किसी भी चीज़ को बदलने के तीन मुख्य कारण होते हैं– पहला अपनी किसी मनचाही चीज़ को पाने के लिए, दूसरा जो भी काम आप कर रहे हैं उसे करने में आपको मजा आ रहा है या नहीं और तीसरा आपको बदलाव की आवश्यकता इसलिए है जिससे कि आप अपने आदर्श व्यक्ति की तरह बन सकें । जब आप पहले दो कारणों से अपनी आदतों को बदलना चाहते हैं तो वह बहुत लम्बा नहीं चल पाता है जबकि जब आप तीसरे कारण से अपनी आदतों में बदलाव करना चाहते हैं तो वह ज्यादा असरदार होता है। अपनी आदत में बदलाव को अपनी पहचान से जोड़ कर देखने पर उन्हें बदल पाना ज्यादा आसान होता है।

**अच्छी आदत बनाने के 4 आसान तरीके**

जब भी आप कोई आदत बदलना चाहते हैं तो खुद से ये 4 सवाल जरूर पूछें –

1. मैं इसे कैसे बदल सकता हूँ ? कौन से छोटे–छोटे स्टेप्स मैं इसे बदलने के लिए अभी ले सकता हूँ?
2. मैं कैसे इस प्रक्रिया को आकर्षक बना सकता हूँ ताकि इसे करने में मुझे बोरियत न हो बल्कि मजा आये?
3. मैं कैसे इसे आसान बना सकता हूँ ताकि इसे अपने जीवन का हिस्सा बना सकूं?
4. मैं कैसे इसे संतोषजनक बना सकता हूँ ताकि मुझे अन्दर से खुशी मिले?

इस तरह से आदतों का मुख्य उद्देश्य ही आपके जीवन को आसान और बेहतर बनाना है, इसलिए उन्हें बदलें।



☞ धैर्यवान मनुष्य आत्मविश्वास की नौका पर सवार होकर आपत्ति की नदियों को सफलतापूर्वक पार कर जाते हैं। – भर्तृहरि

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# जब मानव-मानव को न समझा

डॉ० वन्दना शर्मा
असि० प्रोफेसर अर्थशास्त्र

पुष्प–पुण्य पर विचरा भँवरा सुरभित सौरभ को न समझा।
असमंजस में जीवन बीता मानव, मानव को न समझा।।
स्थितियाँ और परिस्थितियाँ इस कलयुग में कुछ ऐसी बनीं।
अन्तर के दानव को मानव, मानव दानव को न समझा।।
आकर्षित करते जब दुर्गुण तन–मन–धन सब लुट जाते हैं।
माया तो आनी जानी है, मैं धन वैभव को न समझा।
संगति से व्यसनों में फँस कर निज स्वास्थ्य की भेंट चढ़ा बैठा,
जीवन की घड़ियों को घटना–घटते गौरव को न समझा।
जब भी चारित्रिक पतन हुआ, बदली परिभाषा जीवन की,
निज स्वार्थ सिद्धि में प्राणी क्यूँ पांडव कौरव को न समझाा।
भ्रष्टाचारी, लोलुप, लंपट, लक्ष्मी का केवल लक्ष्य लिए,
दरिद्र, दुखी, दारूण, दायक झूठे नायक को न समझा।
ऐ ''वीर' तुम्हें सौगन्ध मेरी छवि अपनी सदा उज्ज्वल रखना,
यह सोच के तुम पछताओगे कि मन कलंक को न समझा।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एक परिचय)

आमिर खान
एम.ए. प्रथम वर्ष

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 दिनांक 10 सितम्बर 2013 को अधिसूचित किया गया, जिसका उद्देश्य एक गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए लोगों को वहनीय मूल्यों पर अच्छी गुणवत्ता के खद्यान्न की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध करते हुए उन्हें मानव जीवन –चक्र में खाद्य और पोषणीय सुरक्षा प्रदान करना है। इस अधिनियम में लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टीपीडीएस) के अंतर्गत राज्य सहायता प्राप्त खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए 75 प्रतिशत ग्रामीण आबादी और 50 प्रतिशत शहरी आबादी को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार लगभग दो–तिहाई आबादी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत लाभान्वित की जाएगी। पात्र व्यक्ति चावल/गेहूँ/मोटे अनाज क्रमशः 3/2/1 रूपये प्रति किलोग्राम के राज्य सहायता प्राप्त मूल्यों पर 5 किलोग्राम खाद्यान्न प्रति व्यक्ति प्रति माह प्राप्त करने का हकदार है। मौजूदा अंत्योदय अन्न योजना परिवार, जिनमें निर्धनतम व्यक्ति शामिल हैं, 35 किलोग्राम खाद्यान्न प्रति परिवार प्रति माह प्राप्त करते रहेंगे।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत पात्र गृहस्थी और अन्त्योदय योजना के राशनकार्ड सम्मिलित हैं। पात्र गृहस्थी राशन कार्ड के अन्तर्गत 2 किग्रा0 चावल व 3 किग्रा0 गेहूँ प्रति यूनिट की दर से वितरित किया जाता है। जबकि अन्त्योदय राशनकार्ड के अन्तर्गत 35 किग्रा0 खाद्यान्न प्रति कार्ड वितरित किया जाता है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत खाद्यान्न का वितरण ई0पोस मशीन के माध्यम से किया जाता है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत सभी लाभार्थियों को आधार प्रमाणीकरण के द्वारा ही उनका राशनकार्ड बनाया जाता है। पूर्व में कई राशनकार्ड डुप्लीकेट चल रहे थे जिसकी संदिग्धता का कोई अनुमान नहीं हो पा रहा था। इस प्रकार की समस्या तथा खाद्यान्न का दुरुपयोग रोकने हेतु आधार प्रमाणीकरण की आवश्यकता हुई। जिसके द्वारा खाद्यान्न की कालाबाज़ारी तथा उचित वितरण सम्भव हो पाया। इस योजना से जहाँ एक ओर लाभ हुए हैं वहीं दूसरी ओर इस योजना में कई प्रकार की समस्याएँ भी देखने को मिल रही हैं। जैसे खाद्यान्न का वितरण ई0पोस मशीन के माध्यम से किया जाता है तो वृद्व लोगों के अंगूठों के निशान न आने के कारण उन्हे खाद्यान्न का वितरण न हो पाना, कभी–कभी ई0पोस मशीन में सर्वर न आने के कारण भी वितरण समय पर न हो पाना आदि समस्याएँ भी देखने को मिल रही हैं। कुछ कोटेदारों द्वारा निर्धारित सीमा से कम खाद्यान्न दिये जाने की भी समस्याएँ देखने को मिल रही हैं। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत राशनकार्ड ऑनलाईन माध्यम से प्राप्त किये जा सकते हैं। जिसे विभागीय वैबसाईट fcs.up.gov.in पर देखा जा सकता है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 का सफल संचालन खाद्य एवं रसद विभाग, उ0प्र0 द्वारा किया जा रहा है। जिसमें प्रत्येक जनपद में जिला पूर्ति कार्यालय होता है, जिसके अन्तर्गत जनपद के प्रत्येक तहसील व ब्लाक स्तर पर पूर्ति निरीक्षक तैनात किये जाते हैं, जो अपने क्षेत्र का संचालन देखते हैं तथा उक्त रिपोर्ट अपने सम्बन्धित जनपद के जिला पूर्ति कार्यालय को देते हैं। प्रत्येक पूर्ति निरीक्षक के साथ एक पूर्ति लिपिक भी तैनात होता है जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम से सम्बन्धित कार्य में पूर्ति निरीक्षक की सहायता करते हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत कोविड–19 से लेकर वर्तमान समय तक सरकार द्वारा खाद्यान्न का वितरण निःशुल्क किया जा रहा है। वर्तमान समय में पूरे उत्तर प्रदेश में 3.61 करोड़ राशनकार्ड तथा 15.05 करोड़ लाभार्थी राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अन्तर्गत खाद्यान्न का लाभ प्राप्त कर रहे हैं जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय तक 7.59 लाख मी0 टन राशन वितरण किया जा चुका है।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# जूठन : एक समीक्षा

अजेन्द्र कुमार
शोधार्थी–हिन्दी विभाग

हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्वपूर्ण भूमिका है। ओमप्रकाश वाल्मीकि उन शीर्ष साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने अपने सृजन से साहित्य में सम्मान व स्थान पाया है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। वाल्मीकि जी ने अपनी प्रतिभा और योग्यता के दम पर मर्मस्पर्शी आत्मकथा लिखी है। जिसका नाम 'जूठन' है। 'जूठन' जिस मनोस्थिति में लिखा गया है, अथवा जिस तरह इसकी विषयवस्तु है इसकी प्रासांगिकता कल कितनी थी और आज कितनी है? एक दलित होने के नाते उसकी आत्मव्यथा क्या है? इन सब बातों पर गौर करने से पहले हमें इसके लेखक वाल्मीकि जी के जीवन पर नजर डालनी होगी। ओमप्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून 1950 को ग्राम बरला, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में हुआ और 17 नवंबर 2013 को देहरादून में निधन हो गया। वैसे इनका जन्म भी हर साधारण बालक की तरह ही हुआ था, पर समाज के अन्त्यज वर्ग में पैदा होने के कारण शायद इनको वे आधारभूत सुविधाएँ नहीं मिलीं जो और किसी बालक को मिलनी चाहिए थी। उनका बचपन सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों में बीता। पढ़ाई के दौरान उन्हें अनेक आर्थिक , सामाजिक और मानसिक कष्ट व उत्पीड़न झेलने पड़े। वाल्मीकि जी जब कुछ समय तक महाराष्ट्र में रहे तो वहाँ दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव अंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया।

**जूठन के माध्यम से लेखक की पीड़ा की अभिव्यक्ति :–** आज भी जिस शब्द को उच्च वर्ण के लोग गाली की तरह उपयोग करते हैं, ऐसे वर्ण या जाति में ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का जन्म हुआ था। इस वर्ण में पैदा होना ही उस समय भारत देश में सबसे बड़ी गलती मानी जाती थी जहां दलित परिवार के लोगों को इंसान नहीं समझा जाता था। इसी की अभिव्यक्ति 'जूठन' आत्मकथा के माध्यम से हुई है। इस ''आत्मकथा'' के बारे में खुद ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं– ''दलित जीवन की पीड़ाएँ असहनीय और अनुभवदग्ध हैं। ऐसे अनुभव जो साहित्यिक अभिव्यक्तियों में स्थान नहीं पा सके। जद्दोजहदके बाद मैंने सिलसिलेवार लिखना शुरू किया। तमाम कष्टों, यातनाओं, उपेक्षाओं, प्रताड़नाओं को एक बार फिर जीना पड़ा। उस दौरान गहरी मानसिक यंत्रणाएँ मैने भोगीं। स्वयं को परत दर परत उधेड़ते हुए। कई बार कुछ लोगों को यह अविश्वसनीय और कितना दुखदायी है यह सब अतिरंजनापूर्ण लगता है।'' जूठन सिर्फ ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा नहीं, अपितु दलित समाज का भोगा सच है, जहां जाति व्यवस्था की खतरनाक खाई है और वहाँ से आने वाली दर्दनाक चीखें हैं। 'जूठन' जातिगत उत्पीड़न और अतिदलित समाज के संघर्ष का आख्यान है। लेखक का जो दर्द छिपा हुआ है उसे उन्होंने बताते हुए अपने बचपन के दिनों को याद किया है। बचपन के दिनों को बताते हुए वे कहते हैं कि कैसे उनकी माता और पिता दोनों हाड़तोड़ मेहनत करते थे पर उसके बाद भी दोनों समय निवाला मिलना दुष्कर था। उनकी माता कई तथाकथित ऊँचे घरों में झाड़ू पोछे का काम करती थी और बदले में मिलती थीं उन्हें रूखी–सूखी रोटियाँ जो जानवरों के भी खाने लायक नहीं होती थीं। उसी को खाकर गुजारा करना पड़ता था। ऐसे समय में जब किसी सवर्ण के घर बारात आती थी या उत्सव का कोई अवसर आता था तो उस क्षेत्र के

सारे दलित खुश हो जाते थे, क्योकि भोजन के बाद फेंके जाने वाले पत्तलों को उठाकर वे घर ले जाते और उनके जूठन को एकत्र करके कई दिनों तक खाने के काम में लाते। इस घृणित कार्य के बाद भी पेट की भूख शांत होने पर उन्हें थोड़े समय के लिए खुशी ही मिलती थी। भूख का यह–दृश्य सभी दलित आत्मकथाओं में देखा जा सकता है। यह कल्पना की चीज़ नहीं, दलित समाज की हकीकत है।–''पूरी के बचेखुचे टुकड़े–, एक आध मिठाई का टुकडा या थोड़ी बहुत सब्जी पत्तर पर पाकर बाँछे खिल जाती थीं। जूठन चटकारे लेकर खाई जाती थी।" जूठन दलित जीवन की मर्मान्तक पीड़ा का दस्तावेज है। जीवन की सुख–सुविधा और तमाम नागरिक सहूलियतो से वंचित दलित जीवन की त्रासदी उनके व्यक्तिगत वजूद से लेकर घर–परिवार, बस्ती और पूरी सामाजिक व्यवस्था तक फैली हुई है। दलितों के जीवन यथार्थ को लेखक की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है।''जोहड़ी के किनारे पर चूहड़ों के मकान थे, जिनके पीछे गाँव भर की औरतें , जवान लड़कियाँ, बड़ी बूढ़ी यहाँ तक कि नई नवेली दुल्हनें भी इसी डब्बावाली के किनारे खुले में टट्टी फरागत के लिए बैठ जाती थीं। रात के अँधेरे में ही नहीं, दिन के उजाले में भी। पर्दों में रहने वाली त्यागी महिलाएँ, घूँघट काढ़े, दुशाले ओढ़े इस सार्वजनिक खुले शौचालय में निवृत्ति पाती थीं। तमाम शर्म–लिहाज छोड़कर वे डब्बेवाली के किनारे गोपनीय जिस्म उधाड़कर बैठ जाती थीं। इसी जगह गाँव भर के लड़ाई–झगड़े गोलमेज कॉन्फरेंस की शक्ल में चर्चित होते थे। चारों तरफ गन्दगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि मिनट भर में साँस घुट जाये। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग–धड़ंग, बच्चे, कुत्ते, रोजमर्रा के झगड़े, बस यही था वह वातावरण जिसमें बचपन बीता। इस माहौल में यदि वर्ण–व्यवस्था को आदर्श व्यवस्था कहने वालों को दो–चार दिन रहना पड़ जाए तो उनकी राय बदल जाएगी।" आत्मकथा की इन प्रारंभिक पँक्तियों से ही इसकी कथा और कथ्य की मार्मिकता का अनुमान लगाया जा सकता है।

दलित बालक ओमप्रकाश वाल्मीकि को चूहड़ा समझकर हेडमास्टर दिन भर झाड़ू लगवाता है। लेखक के शब्दों में –''दूसरे दिन स्कूल पहुँचा। जाते ही हेडमास्टर ने फिर से झाड़ू के काम पर लगा दिया। पूरे दिन झाड़ू देता रहा। मन में एक तसल्ली थी कि कल से कक्षा में बैठ जाऊँगा। तीसरे दिन मैं कक्षा में जाकर चुपचाप बैठ गया । थोड़ी देर बाद उनकी दहाड़ सुनाई पड़ी, अबे, ओ चूहड़े के .....कहाँ घुस गया.....अपनी माँ.....उनकी दहाड़ सुनकर मैं थर–थर काँपने लगा था। एक त्यागी (सवर्ण) लड़के ने चिल्लकार कहा, मास्साब, वो बैठा है कोणे में। हेडमास्टर ने लपकर मेरी गर्दन दबोच ली थी। उनकी उंगलियों का दबाद मेरी गर्दन पर बढ़ रहा था जैसे कोई भेड़िया बकरी के बच्चे को दबोचकर उठा लेता है। कक्षा के बाहर खींचकर उन्होंने मुझे बरामदे में ला पटका। चीखकर बोले, जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू....नहीं तो.....में मिर्ची डाल के स्कूल से बाहर काढ़ (निकाल) दूँगा''। स्कूल के मास्टर से लेकर गाँव–घर के सामन्त व सेठ–साहूकार तक सभी दलित जीवन को लीलने के लिए तैयार बैठे थे। 'जूठन' दलित जीवन की मर्मान्तक पीड़ा का दस्तावेज है। जीवन की सुख–सुविधा और तमाम नागरिक सहूलियतों से वंचित दलित जीवन की त्रासदी उनके व्यक्तिगत वजूद से लेकर घर–परिवार, बस्ती और पूरी सामाजिक व्यवस्था तक फैली हुई है। दलितों का जीवन ऐसा था कि किसी सामन्त व सेठ साहूकार को दलितों को नाम से पुकारने की किसी को आदत नहीं थी। उनके संबोधन का तरीका

यह होता था, अगर उम्र में बड़ा हो तो, ओ चूहड़े। बराबर या उम्र में छोटा है तो, अबे चूहडे के! छुआछूत व अस्पृश्यता का एक ऐसा माहौल था कि कुत्ते –बिल्ली, गाय–भैंस या अन्य किसी जानवर को छूना बुरा नहीं माना जाता था। लेकिन यदि चूहड़े (मनुष्य) का स्पर्श हो जाए तो पाप लग जाता था। यानी दलितों का समाज में कोई मान–सम्मान, इज्ज़त, अस्मिता तथा अपनी पहचान कुछ भी नहीं थी – सिवाय चूहड़े के। सामाजिक स्तर पर इनसानी दर्जा खत्म कर दिया गया था। वाल्मीकि जी अपने स्कूल की बात बताते हैं कि कैसे सवर्ण अध्यापक उन्हें बात ही बात में मारते और कहते थे कि भंगी या चमारों के लड़के पढ़ नहीं सकते, क्योंकि इनका जन्म पढ़ने के लिए नहीं हुआ है। मुझे पढ़ के बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह बात 1960 के दशक की है, पर इसके लक्षण आज भी हर जगह दिख जाते हैं

दलित विद्यार्थियों का पानी की पर्याप्त मात्रा के बाद भी प्यास बुझाना मुश्किल था, ''परीक्षा के दिनों में प्यास लगने पर गिलास से पानी नहीं पी सकते थे। हथेलियों को जोड़कर ओक से पानी पीना पड़ता था। पिलाने वाला चपरासी भी बहुत ऊपर से पानी डालता था। कहीं गिलास हाथों से छू न जाए।" ऐसे परिवेश में एक ओर सवर्णवादी मानसिकता का विकास होगा तो दूसरी ओर दलित विद्यार्थियों के अंदर हीनता–कुण्ठा का भाव विकसित होगा। अकारण नहीं कि शिक्षित लोग जातिवादी मानसिकता से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। पाठ्यक्रम निर्धारण से लेकर अध्यापकों की नियुक्ति तक जातीय वर्चस्व कायम है। प्रयोगात्मक परीक्षा में भेदभाव अपने चरम पर होता है। बारहवीं कक्षा में ओमप्रकाश को रसायनशास्त्र की प्रयोगात्क परीक्षा में फेल कर दिया जाता है, जबकि सभी विषयों में अच्छे अंक मिले थे।

सामंती व्यवस्था में विलासिता की दृष्टि ज्यादा दिखाई देती है। जिसमें गरीबों को कुचलकर धन इकट्ठा किया ।इस बेगारी में दलितो पर शारीरिक अत्याचार भी होने लगते थे। गरीब दलित शोषण के भाग्य का विधान मानकर अपनी असमर्थता और असहाय व्यवस्था का परिणाम मानकर निरंतर इस चक्र में पिसता रहा। सामंती उच्च वर्ग हर दिन, दलितों की हड्डियों से पैसे निचोड़ते रहे। बेगारी प्रथा ने दलितों के जीवन में अँधेरा भर दिया था। जूठन में भी बेगारी प्रथा का चित्रण आया है। लेखक के पूरे परिवार को माँ से लेकर भाई, सभी को हिन्दू, मुसलमानों के घर में साफ–सफाई करना पड़ता था। गाय, भैंस, बैल का गोबर उठाना पड़ता था। गोबर और मूत्र पूरे दलान में फैलाने पर दुर्गंध होती थी फिर भी उन्हे गोबर ढूँढकर निकालना पड़ता था। इन सब के बदले उन्हें पैसे नही दिए जाते। इस प्रसंग को लेखक व्यक्त करते हैं '' इन सब कामों के बदले मिलता था दो जानवर के पीछे फसल के समय पाँच सेर अनाज यानी लगभग ढाई किलो अनाज। दस मवेशी वाले घर से साल भर मे 25 सेर (लगभग –12,13 किलो (अनाज) दोपहर को प्रत्येक घर में एक बची–खुची रोटी जो खास तौर पर चूहड़ों को देने के लिए आटे में भूसी मिलाकर बनाई जाती थी। कभी–कभी जूठन भी भंगन की टोकरी में डाल दी जाती थी।'' इस प्रकार पूरे साल भर काम करने के बाबजूद 12–13 किलो अनाज दिया जाता था और बात करने का लहजा भी बड़ा क्रूर होता था। फिर भी दलितों ने इतने कष्ट होने के बावजूद अपने आपको बचाकर रखा, यही बड़ी बात है। अतः ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने जातीय अपमान और उत्पीड़न के जीवन वर्णन के माध्यम से एक दलित की आत्मकथा को प्रस्तुत किया है।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# मेरे जीवन में नारी शिक्षा का महत्त्व : मेरे अपने विचार

सानिया बी
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

**प्रस्तावना–** किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है। लेकिन पुरुषों की ही शिक्षा का नहीं सहशिक्षा का।

जिस देश में लोग शिक्षित नहीं होते हैं। वहाँ पर आर्थिक और सामाजिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारे देश में भी शिक्षा की कमी है। हमारा भारत देश भी पुरुष प्रधान देश है और इसी कारण पुरुष ज़्यादा पढ़े लिखे हैं और महिलाएँ अशिक्षित। महिलाओं को शिक्षा का अधिकार नहीं मिलने के कारण आज शिक्षा के क्षेत्र में कुछ महिलाएँ पिछड़ी हैं और मैं चाहती हूँ कि महिलाओं का यह अधिकार उन्हें मिलना चाहिए ।हर हाल में और मैं इसके लिए निरन्तर प्रयास करती रहूँगी।

**महिलाओं के बारे में लोगों की सोच–** आज के युग में लोग महिलाओं को पुरुषों से कम आँकते हैं। आज की नारी किसी पुरुष से कम नहीं है। खुद मेरे भारत देश में कुप्रथाएँ चल रही हैं। नारी को पराए घर का धन समझा जाता है। लोग कहते हैं पैर की जूती पैर में ही अच्छी लगती है। नारी को पैर की जूती क्यों समझा जाता है? क्यों उससे उसके अधिकार छीन लिए जाते हैं? क्यों वह अपनी मरजी से अपनी ज़िन्दगी नही जी सकती? क्यों उसे समानता का अधिकार नहीं दिया जाता ? क्यों उसे घर की चार दीवारी में कैद करके रखा जाता है? मेरे भारत देश के कुछ लोग कहते हैं कि नारी का शिक्षित होना कोई ज़रूरी नही हैं। अरे क्यों जरूरी नही है? नारी का शिक्षित होना? ज्यादा तो नहीं, लेकिन अभी कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि जितना पैसा लड़कियों को पढ़ाने में लगता है, इतने में उनकी शादी हो जाती हैं। क्यों है ये कुविचार? उसकी शादी करके उसे कुएँ में धकेल देते हैं। उसे एक बार नहीं, बार –बार मरने के लिए। अपने स्वार्थ के लिए उसे एक ऐसे बंधन में बाँध देते हैं जहाँ से वह ना तो वापस आ सकती और ना ही आगे जा सकती है।

**आज के युग में भी नारी पर अत्याचार–** आज भी नारी को एक बोझ समझा जाता है। माँ–बाप भी लड़के और लड़कियों में भेदभाव करते हैं। उनका मानना है कि लड़का उनका वंश चलाता है और लडकी पराए घर का धन है। एक बार सोचा है लड़की नही होगी तो वंश कैसे चलेगा ? आज के समय में माँ खुद एक लड़की (नारी) होने के बावजूद भी लड़की पर अत्याचार करती है। जिस परिस्थिति का वह खुद सामना करती है जिस आग में वह खुद जलती है उसी में उसको धकेल देती है।

**विधवा महिलाओं के साथ अत्याचार–** विधवा महिलाओं के साथ लोग अत्याचार करते हैं। विधवा महिला को क्यों सबके साथ रहने का, खुशियाँ मनाने का अधिकार नहीं है। विधवा होना कोई गुनाह है? वह तो ईश्वर की मरज़ी है। ईश्वर की मरजी में कोई कैसे बाधा डाल सकता है। अगर विधवा होना गुनाह है तो पुरुषो के साथ अत्याचार क्यों नहीं होता। 21वीं सदी महिलाओं की सदी है अब महिलाएँ केवल पुरुष की बराबरी ही नहीं अपितु पुरुष से आगे निकालने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं–

**देश की शान के लिए हम कुर्बान होने से डर नहीं सकते।**
**सर कट जाए या रह जाए, उसकी परवाह नहीं करते।**

# कहानी - समीक्षा बहादुर (अमरकान्त)

नीतू

प्रस्तुत कहानी 'बहादुर' अमरकान्त जी की एक चरित्र प्रधान कहानी है। इस कहानी में इन्होनें मध्य एवं निम्न वर्ग की पारिवारिक परिस्थितियों का सजीव तथा यथार्थवादी रूप प्रस्तुत किया है। लेखक ने स्वयं को कहानी का पात्र बनाते हुए कहानी की आत्म कथात्मक रचना की है तथा मध्यम वर्गीय परिवार में नौकर बहादुर के साथ हुए कटु व्यवहार का सुन्दर शब्द चित्र खींचा है। कहानी का नायक असहाय एवं पीड़ित वर्ग का प्रतिनिधि 12–13 वर्ष का एक पहाड़ी बालक बहादुर है जिसका पिता युद्व में मारा गया था। माता द्वारा बात–बात पर पीटे जाने के कारण एक दिन वह किराये के लिए दो रुपये चुराकर घर से भाग जाता है। अपने से सम्पन्न रिश्तेदारों के घर नौकर द्वारा की गई सेवायों को देखकर लेखक की पत्नी निर्मला स्वयं भी नौकर रखना चाहती है। मारा–मारा फिरता हुआ एक लड़का लेखक के साले को मिल जाता है जिसे लेखक की पत्नी अपने घर रखना चाहती है। निर्मला एवं उसके परिवार वाले पहले उससे अच्छा व्यवहार करते हैं। वह भी अपनी बाल सुलभ बातों से उन्हे खूब हँसाता है। साथ ही यथाशक्ति घर के सभी सदस्यों के सारे काम उनकी डाँट–फटकार सुनकर भी आमतौर पर खुशी–खुशी करता है। परन्तु धीरे–धीरे परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यवहार उसके प्रति कठोर होता चला जाता है। निर्मला भी पहले तो बहादुर से अच्छा व्यवहार करती है। परन्तु बाद में उसके प्रति उसका व्यवहार भी बदल जाता है। लेखक का पुत्र किशोर काम करने के बाद भी उसे पीटता और गाली तक देता है। घर आये रिश्तेदारों ने बहादुर पर चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर उसे अपमानित किया। एवं गृहस्वामी ने भी उसे मारा , चोरी के झूठे इल्ज़ाम की घटना ने बहादुर के कोमल मन को बहुत आहत किया और वह एक दिन दोपहर को बिना कुछ लिये घर छोड़कर चुपचाप चला गया। बहादुर के द्वारा अपना सारा सामान जिसमें गोलियाँ, पुराने ताश की धनराशि भी छोड़कर पत्थर, ब्लेड, कागज की नावें यहाँ तक कि माँ को भेजने के लिए लेखक के पास तनख्वाह की जमा धनराशि भी छोड़कर चुपचाप चले जाना उसकी बेगुनाही का प्रमाण है। अब परिवार के सभी सदस्य बड़ी तत्परता से उसे ढूँढ़ते हैं, न मिलने पर चिन्तित हो उठते हैं। क्योंकि उसके कारण सब आराम के आदी हो चुके हैं। लेखक स्वयं भी बहादुर की ईमानदारी के आगे स्वयं को बौना महसूस करता है।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# सपनों की उड़ान

महनाज़
बी.एड. द्वितीय वर्ष

मेरे घर के पास थोड़ी दूरी पर मायरा फातिमा नाम की एक मुस्लिम लड़की रहती है। उसके परिवार में सात सदस्य हैं। उसकी दो बड़ी बहनें तथा दो छोटी बहने हैं। जब उसका जन्म हुआ था तब उसका परिवार बहुत समृद्ध और खुशहाल था। उसने अपना बचपन बहुत ही खुशी से व्यतीत किया। लेकिन कुछ समय बाद उसके परिवार की स्थिति खराब हो गयी थी। क्योंकि उसकी माता जी (अम्मी) की तबीयत इतनी खराब हो गयी थी कि उसकी माता जी मरने से बचीं। उन्होंने अपनी माता जी को इलाज करा कर ठीक करवाया। लेकिन आज भी उसकी माता जी पूरी तरीके से ठीक नहीं हो पायी हैं, वो आज भी दवा से अपना जीवन चला रही हैं। इसी बीच मायरा ने हाईस्कूल भी कर लिया। अब मायरा को जीवन में नयी समस्याओं का सामना करना पड़ा क्योंकि मायरा के परिवार में लड़कियों को हाईस्कूल के बाद पढ़ने की अनुमति नहीं थी। लेकिन मायरा को आगे पढ़ना था तथा अपने जीवन में कुछ नया करना था। मायरा को भी उस नियम को मानने के लिए कहा गया, लेकिन मायरा ने हिम्मत नहीं हारी तथा उसने तय कर लिया था कि वह अपने जीवन को ऐसे ही बेकार नहीं जाने देगी। उसने ग्याहरवीं में दाखिला लेने के लिए दो दिन तक कुछ नहीं खाया। एक दिन मायरा के पापा ने मायरा से कहा कि '' बेटी ऐसा नहीं है कि हम आपसे प्यार नहीं करते हैं। हम आपका बुरा नहीं सोच रहे हैं। लेकिन हमारे परिवार में यह नियम बहुत पुराना है। आपकी बड़ी बहनों ने भी हाईस्कूल किया है। मगर कोई नियम आपसे बढ़कर नहीं है। आपकी खुशी सबसे महत्वपूर्ण है। मैं आपका कल दाखिला करवा दूँगा।'' यह सुनकर मानो मायरा के सपनों को पंख मिल गये हों। अब मायरा ने 11 वीं में दाखिला लिया और अपने साथ अपनी बड़ी बहनों का भी 11 वीं में दाखिला करवाया। इसी तरह उनका इण्टर पूर्ण हो गया। मायरा की बड़ी बहन ने शादी के बाद भी अपनी पढ़ाई को जारी रखा तथा आज के समय में वह एक अध्यापिका के रूप में कार्यरत है। लेकिन अब भी मायरा की परेशानी समाप्त नहीं हुई क्योंकि उसे अब स्नातक में दाखिला लेना था, फिर से वही नियम मायरा के सामने था। जब उसने स्नातक में दाखिला लेने को कहा तो उसके बड़े पापा (ताऊजी) ने कहा, ''बेटी मायरा आपने इण्टर कर लिया तो आगे पढ़कर क्या करोगी''? मायरा ने कहा कि मुझे कुछ बनना है ताकि मेरे माता–पिता को यह न लगे कि उनका कोई बेटा नहीं है। मायरा की बात सुनकर बड़े पापा ने कहा कि जहाँ तक पढ़ना है आप पढ़ सकती है। मायरा ने यह भी निर्णय लिया कि वह अपनी पढ़ाई स्वयं करेगी। उसने एक स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया तथा ट्यूशन भी दी। स्नातक के बाद पी0जी0 किया क्योंकि उसे पीएच0डी0 करनी थी। लेकिन मायरा को पता चला कि पीएच0डी0 के लिए बाहर जाना पड़ेगा तो उसने सरकारी कॉलेज से बी0एड0 किया तथा आज वो एक अध्यापिका के रूप में कार्य कर रही है। अब उसके परिवार में पढ़ाई न करने का कोई नियम नहीं है। उसकी छोटी बहन कांस्टेबल है। मायरा के आस–पास वाले मायरा की बहुत प्रशंसा करते हैं तथा कहते हैं कि वह भी अपनी बेटियों को खूब पढ़ायेंगें।। मायरा के इस प्रयास से सिर्फ उसके परिवार वालों में ही नहीं बल्कि उसके आस –पड़ोस में पढ़ाई का कोई नियम नहीं है। मायरा को समाज में एक परिवर्तन शादी को लेकर करना था कि हमेशा लड़के वाले ही क्यों

शर्ते रखते हैं लड़की वाले क्यों नहीं। लड़की वाले के सामने इतनी शर्ते रखी जाती हैं कि उन्हें अपना सब कुछ बेचना पड़ता है। उसका कहना है कि न मुझे दहेज देना है, न कोई शर्त मानना है। उसे दहेज प्रथा को समाप्त करना है। आज उसकी वजह से उसके परिवार तथा आस–पड़ोस वाले अपनी लड़कियों को बुरा नहीं समझते हैं तथा उन्हे पढ़ाने और आगे बढ़ाने में विश्वास करते हैं।

## पुस्तकों का महत्त्व

इकरा बी
बी.ए. तृतीय वर्ष

''पुस्तकें मित्रों में सबसे शान्त व स्थिर हैं, वे सलाहकारों में सबसे सुलभ व बुद्धिमान हैं और शिक्षकों में सबसे धैर्यवान हैं'' निःसंदेह पुस्तकें ज्ञानार्जन करने, मार्गदर्शन करने एवं परामर्श देने में विशेष भूमिका निभाती हैं। पुस्तकें मनुष्य के मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक, चारित्रिक, व्यावसायिक एवं राजनीतिक विकास में सहायक होती हैं।

महात्मा गाँधी ने कहा है– '' पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक हैं, क्योंकि पुस्तकें अन्तः करण को उज्ज्वल करती हैं''। पुस्तकें पढ़ने से होने वाले लाभ को देखते हुए कहा है–''पुराने वस्त्र पहनों, पर नई पुस्तकें खरीदो। पुस्तकें ज्ञान का संरक्षण करती हैं। सचमुच पुस्तकें सुख और आनन्द का भंडार होती हैं। जो लोग अच्छी पुस्तकें पढ़ने में जिनकी कोई रुचि नहीं होती वे जीवन की बहुत सी सच्चाइयों से अनभिज्ञ रह जाते हैं। जिन लोगों को पुस्तकें पढ़ने का शौक होता है, वे लोग अपने खाली समय का सदुपयोग पुस्तकों के जरिए ज्ञानार्जन के लिए करते है। विश्व की हर सभ्यता के विकास में पुस्तकों का प्रमुख योगदान रहा है। पुस्तकें शिक्षा प्रदान करने का प्रमुख साधन हैं। पुस्तकों के बिना शिक्षण की क्रिया अत्यन्त कठिन हो सकती है। कई मामलों में तो पुस्तकों के आभाव में शिक्षण की कल्पना भी नहीं की जा सकती इतना ही नहीं, इनसे अच्छा मनोरंजन भी होता है। पुस्तकें जहाँ रहेंगी, वहाँ अपने आप स्वर्ग बन जाएगा, पुस्तकें सचमुच हमारी मित्र हैं।

## लक्ष्य की चाहत

आलिया
बी०ए० तृतीय वर्ष

न जाने आज मैं
किस ओर चल रही हूँ,
अनजानी राहों में
गिरने से संभल रही हूँ।
कदम डगमगाए कितने ही
फिर भी राह में खड़ी हूँ।

मुसाफिर हूँ मैं यारों
लक्ष्य ढूँढने चल पड़ी हूँ।
बाधाएँ हैं लाख आतीं
मैं उनके मुताबिक ढल रही हूँ,
मिले जीत या हार कुछ भी
अब मैं निकल रही हूँ।

चक्रव्यूह भेदने को जग का
मैं अभिमन्यु सा बढ़ रही हूँ,
मुसाफिर हूँ मैं यारों
लक्ष्य ढूँढने चल पड़ी हूँ।

# बचपन की यादें

सलीम अहमद
बी.एड्. द्वितीय वर्ष

मैं और मेरा दोस्त शम्स जिला रामपुर के एक छोटे से गाँव बगड़खा में रहते थे। उनके और मेरे परिवार के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। हम दोनों का दाखिला पास के एक गाँव अजीमनगर में करा दिया था। मेरी उम्र 6–7 साल और उसकी 8–9 साल थी। हम दोनो सुबह बासी रोटियाँ खाकर जल्दी–जल्दी से दोपहर का खाना टिफिन में रखवा लेते। शम्स की माँ ज्यादातर रोटी के साथ अचार बाँध देती थी। जब हम घर से साइकिल से निकलते थे सारा दिन अपना होता था। उस वक्त मेरे पापा उसके पापा से अमीर थे, किन्तु नई साइकिल उसके पापा ने लाकर दी और मेरे पापा ने पुरानी, क्योंकि उसके पापा की परचून की दुकान थी और मेरे पापा किसान थे।

हमारा स्कूल संत फ्रान्सिस जूनियर हाईस्कूल, अजीमनगर मानो सारे धर्मों की अच्छाईयाँ एवं नियम–कानून अपने अनुशासन में समेटे हुए हो। सुबह उठते ही डर बना रहता था कि स्कूल के लिए लेट न हो जाएँ, वरना पिटाई होगी। स्कूल पहुँचकर साइकिल स्टैण्ड में लगाते और जल्दी–जल्दी भागकर कक्षा में बस्ता रखते और बाहर प्रार्थना में शामिल हो जाते। उसके बाद कक्षा में बैठ जाते तो बस इण्टरवल की घण्टी का इन्तेजार करते कि कब बजे और अपना बासी और ताजा खाना निपटाएँ और स्कूल के दोस्तों के साथ खेलें–कूदें। उसके बाद जब इण्टरवल खत्म हो जाता तो हम कक्षा में बैठकर छुट्टी की घण्टी का इन्तेज़ार करते और छुट्टी होने पर जब घर लौटते तो मानो गाँव वाले सब हमारा इन्तेज़ार कर रहे हों और उन सबके चेहरों पर खुशी छिपाए न छिपती कि ड्रेस में यह बालक कितने सुन्दर और अनुशासित हैं।

जो दिन का समय बचता था, अपने गाँव के बच्चों को इकट्ठा कर कुछ खेल खेलते या कभी–कभी भालू या बन्दर नचाने वाले मदारी के पीछे–पीछे घूमने में अपना पूरा दिन काट देते थे। कभी खेतों की ओर निकल जाते तो कभी गाँव की बैलगाड़ियों में बैठ–बैठकर उसमें चिड्डी खाते, गाड़ी मालिकों के बार–बार मना करने पर भी हम पीछे–पीछे चल देते और जैसे ही उसका ध्यान अपने बैलों को हांकने पर होता और हम गाड़ी के पीछे अपने आप को टिका देते थे उस समय गाड़ीवाला कभी–कभी बहुत ज्यादा गुस्सा हो जाता यहाँ तक की हमें पीट भी देता था, पर हम कहाँ मानने वाले थे, क्योंकि दोस्तों में बहस रहती थी कि कौन ज्यादा देर तक चिडडी खाएगा। वह सब हमारे लिए इतना दिलचस्प था कि मानो आज के सभी प्रकार के सुखद यात्राओं के सुख एक साथ मिल जाएँ तब भी इतना आनन्द न आये।

हमारे गाँव में ही एक झोपड़ी थी जिसके चारों तरफ की दीवारों ने खण्डहर का रूप धारण कर लिया था, जिसमें ताई–ताऊ रहते थे। जिनकी एक बेटी थी, जिसकी शादी हमारे जन्म से पहले ही हो चुकी थी। ताई हमें अपनी झोपड़ी में बड़े प्यार से बैठाती थीं और अपने मटके का पानी लाकर हमें पिलातीं। बीच आँगन में ताई ने कई तरह के पेड़ लगा रखे थे जिनको मैं और मेरे दोस्त अक्सर नुकसान पहुँचा देते थे। जब वह उन पौधों को सींचती थीं हम जबरदस्ती उनके काम में हाथ बँटाते थे। उनके उस समय के आँगन को देखकर लगता था मानों आज की दुनिया की हरियाली उस समय उनके आँगन में थी और वह दुनिया में हरियाली को पालने वाली नायिका हों और उनकी झोपड़ी भी आज के पक्के मकानों को देखकर एक स्वर्ग के सुखों से फलीभूत आनदिन्त प्रतीत होती है।

आज जब भी मैं उस गली से गुजरता हूँ तो वहाँ पर एक पक्का मकान बना हुआ है, किन्तु मुझे आज भी ताई के पौधों की हरियाली की सुगन्ध वहाँ प्रतीत होती है। मन करता है कि मिट्टी को चूम लूँ और दीवारों से लिपटकर रो दूँ और बोलूँ, ताई आप मुझे बहुत याद आती हैं। मेरे जीवन में आपका निःस्वार्थ प्रेम हमेशा चमकता रहेगा।

जब इतवार का दिन आता तो मानो हमारे लिए ईद का दिन होता था। एक बार इतवार के दिन हम खेतों पर निकल गये। शम्स ने अपनी मुट्ठी में कोई चीज़ दबा रखी थी। मैंने हाथ पकड़कर मुट्ठी खोली, उसमें १०० रुपये का नोट था। मैंने खुश होकर पूछा कहाँ से आये इतने पैसे। उसने कहा, मैंने पापा की परचून की दुकान से चुराये हैं। उस वक्त इतने पैसे एक बड़ी रकम होती थी। मेरे लिये १०० रुपये का नोट होना मानो एक सपना जैसा था क्योंकि छमाही में फसल आती थी तो पापा उसको बेचकर कुछ बनिये का कर्ज़ दे दिया करते और कुछ अगली फसल बोने में खर्च कर देते और जो बचते थे उन्हें बड़ी ही मितव्ययिता के साथ छः माह तक घर का खर्च चलाते थे, जिसमें मेरी फीस भी जानी होती थी। आज हमारे पास १०० रुपये थे, हमारे गर्व का अनुमान कौन लगा सकता था! बस इस बात का थोड़ा डर था कि जब उसके घर वालों को पता चलेगा तो क्या होगा। उसने कई बार ऐसा किया है। उसके लिए उसके पिता ने कई बार छोटे–छोटे दण्ड भी दिये हैं। तब मन शान्त हुआ और आनन्द की अनुभूति हो रही थी। अब छः सात दिन घर से खाना कम लेकर जाएँगे क्योंकि वहां पर लाला जी इण्टरवल में छोले बताशे लेकर आते थे। जिन्हें कुछ बच्चे रोज़ाना खाते थे। अब हम भी कुछ दिन के लिए धनवान थे और एक दो बाजार में भी जाकर खर्च कर सकते थे और आज के परिभ्रमण से ज्यादा बाजार में पहुँचकर दो काले रसगुल्ले खाकर आनन्द प्राप्त हो जाता था। बाद में शम्स और मुझे इस चोरी के लिए दण्डित भी किया गया।

मेरे बचपन की ऐसी बहुत सी यादें हैं जो भूले नहीं भूलाये जातीं। वह सब कच्ची टूटी दीवारें, खाली पड़े जगह में पुवाल के बड़े–बड़े ढेर जो रात के समय चोर–सिपाही आदि खेलों में हम उसमें छिपते थे।

आज भी यह सब बातें मानो कल की ही हो ऐसे आँखो के सामने प्रतीत होती हैं। बचपन में कोई चीज नुकसान न देने वाली थी। चाहें वह कितना ही गुड़ खा लो या कच्चे बेर। आज सब कुछ होते हुए भी देखकर खाना पड़ता है कि यह खाना नुकसान तो न देगा। तब के कच्चे बेर आज के प्लेट में रखे सुसज्जित अंगूरों से अच्छे थे उस समय की कच्ची सपड़ी (अमरूद) आज के फ्रिज में रखे बड़े–बड़े अमरूदों से ज्यादा स्वादिष्ट थी। ऐसा था मेरा बचपन।

"मेरा आईना भी मेरी तरह पागल है।
आइना देखने जाऊँ तो मेरा बचपन नज़र आता है।।"

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# आदर्श शिक्षक

विकास कुमार रवि
बी.एड. प्रथम वर्ष

प्राचीन काल से भारत की शिक्षा पद्धति गुरु–शिष्य परम्परा की तरह रही है। शिक्षक को गुरु भी कहा जाता है। गुरु शब्द का शब्दिक अर्थ होता है 'अन्धकार से प्रकार की ओर'। अर्थात् जो व्यक्ति अपने गुणों तथा शिक्षा के माध्यम से समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है, आदर्श शिक्षक कहलाता है। वहीं अग्रेंजी भाषा में शिक्षक को Teacher कहा जाता है। Teacher शब्द भी एक आदर्श शिक्षक की विशेषताओं की व्याख्या करता है।

| | | |
|---|---|---|
| T | Talented | गुणी |
| E | Educated | शिक्षित |
| A | Artist | कलाकार |
| C | Characteristic | चरित्रवान |
| H | Honest | ईमानदार |
| E | Efficient | दक्ष |
| R | Responsible | जिम्मेदार |

उपरोक्त गुण जिस भी व्यक्ति में पाये जाते है वे आदर्श शिक्षक कहलाने के लायक हैं। एक आदर्श शिक्षक किसी भी समाज की शिक्षा पद्धति की रीढ़ (Backbone) की हड्डी होता है। जो शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार का आधार प्रदान करता है। महान कवि कबीरदास जी ने भी शिक्षक को ईश्वर के समतुल्य बताया है।

एक आदर्श शिक्षक के गुणों को हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं।

**सम्प्रेषण की दक्षता** – एक आदर्श शिक्षक कुशल वक्ता होता है उसकी सम्प्रेषण कला प्रभावशाली होती है।

**कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान** – एक आदर्श शिक्षक अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव सजग एवं निष्ठावान रहता है। लापरवाही व उदासीनता का घोर विरोधी होता है।

**विश्वसनीयता** – एक आदर्श शिक्षक समाज के प्रति विश्वास का पात्र होता है। धोखा–छल कपट आदि अवगुणों से सदैव दूर रहता हैं।

**सादा जीवन उच्च विचार** – आदर्श शिक्षक सदैव सादा जीवन तथा उच्च विचार की कहावत को चरितार्थ करता है तथा समाज में सद्भाव का प्रचार–प्रसार करता है।

**नेतृत्व का गुण** – एक आदर्श शिक्षक के अन्दर सदैव उच्च कोटि की नेतृत्व क्षमता होती है। इसका सजीव उदाहरण हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम थे। जिनकी नेतृव क्षमता में भारत विकास के पथ पर अग्रसर हुआ।

**साहसी** – आदर्श शिक्षक विपरीत परिस्थिति में भी सदैव साहस तथा सूझबूझ का परिचय देता है।

**देशभक्त** – एक आदर्श शिक्षक सदैव अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित होता है वह शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति की भावना को विकसित करने का सार्थक प्रयास करता है।

**साम्प्रदायिक सद्भाव** – एक आदर्श शिक्षक जाति, धर्म आदि को समान दृष्टि से देखता है तथा सभी धर्मों का सम्मान करते हुएसाम्प्रदायिक सद्भाव विकसित करने का प्रयास करता है।

**संघर्षशील** – एक आदर्श शिक्षक सदैव शिक्षा के प्रचार–प्रसार के प्रति संघर्षशील रहता है तथा मानव कल्याण की भावना से प्रेरित रहता है।

**समय प्रबंधन कुशल**– एक आदर्श शिक्षक समय प्रंबधन का पालनकर्ता होता है। प्रातः उठने से लेकर विद्यालय जाने व आने तक समय प्रबधंन का ध्यान रखता है। शिक्षक के समय प्रबधंन से छात्र प्रेरित होते हैं।

**अनुशासन प्रिय** – एक आदर्श शिक्षक अपने निजी जीवन से लेकर शैक्षिक जीवन में अनुशासन बनाये रखता है।

**निष्कर्ष**– उपरोक्त गुणों का अध्ययन कर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आदर्श शिक्षक समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। जो शिक्षा के माध्यम से छात्र, समाज एवं देश के विकास तथा उनके निर्माण में सदैव अपनी भूमिका निभाता है।

"गुरु र्ब्रह्मा, गुरुविष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षातपरब्रह्म
तस्मै श्री गुरवे नमः।।"

"एक आदर्श शिक्षक एक आदर्श समाज का निर्माण करता है।"

## एन.सी.सी.

सी.अ. ऑफिसर विजेन्द्र कुमार
बी.ए. तृतीय वर्ष

शान से करते टेढ़ी टोपी,
लगाके हैकल लाल चले।
कंधों से मिलते कंधे इनके,
करते ये कदमताल चले।

उम्र भले ही बचपन की हो,
जज्बा इनका बेतोड़ है।
सजे हुए तैयार वर्दी में,
आजाद हिन्द के लाल चले।

# अनुभव

शैजल कश्यप
एम0एससी0(प्रथम)

स्काउटिंग की स्थापना भारत में 1909 में हुई थी और गाइडिंग की शुरूआत 1911 में हुई थी। यह केवल अपने भारत में ही नहीं, बल्कि मौजूदा समय में विश्व के 216 देशों व उपनिवेशों में संचालित है। 5 करोड़ सदस्यों के साथ यह विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। स्काउट एवं गाइड का यह मिशन प्रॉमिस एंड लॉ पर आधारित है। स्काउट एवं गाइड निम्न चरणों में होता है। 1–5 तक कप–बुलबुल, 6–12 स्काउट/गाइड स्नातक में रोवर्स–रेंजर्स। मैं इस संगठन से काफी समय से जुड़ी हुई हूँ यह केवल एक संगठन ही नहीं, बल्कि जीवन को एक नये तरीके से देखने का नज़रिया है। इसमें रहकर युवा का विकास होता है। एक अच्छे समाज के निर्माण में युवा सहयोग करता है। इसमें मेरा खुद का अनुभव रहा है। इसमें सिखाया जाता है कि दूसरे की मदद कैसे करें। कहीं विपरीत परिस्थितियाँ है, जैसे –बाढ़, भू–स्खलन, भूकम्प, आदि में कैसे लोगों की मदद की जाए। आज भी अगर कहीं ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं तो स्काउट/गाइड/रोवर्स–रेजर्स, पुलिस बल, सुरक्षा बल के साथ अपनी भागीदारी देते हैं। इससे जुड़े सभी युवाओं को समय का सदुपयोग करना सिखाते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना कैसे करें ? मैने शुरू से लेकर अब तक जनपद, मण्डल, स्टेट लेबल कार्यक्रम, नेशनल लेविल जम्गूरी की है। मैं जितने भी शिविर कार्यक्रम में गई वहाँ मैने अलग–अलग चीजें सीखी, अनुभव हासिल किया, यह समाज में फैली बुराईयाँ, गलत भावना आदि को खत्म करके एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण कदम है। "हिन्दू–मुस्लिम, सिख, ईसाई आपस में हैं भाई–भाई।" यह वाक्य भी सही सिद्ध होता देखा जा सकता है। प्रेम–भाई चारे की एक मिसाल कायम करता है। यह शिविर में सिखाया जाता है कि इंसानियत (मानवता) से बड़ा कुछ नहीं है। यह केवल भारत तक ही सीमित नही हैं। जब भी कोई राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम (शिविर) आदि का आयोजन किया जाता है तो अन्य देशों के युवा भारत आते हैं और बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अनुशासन, समय का सदुपयोग, कठिन परिस्थितियों में हार नहीं मानना, अचानक आई आपदाओं का सामना करना, अलग–अलग संस्कृति को देखना व उनके बारे में जानना।

**स्काउटिंग का उद्‌देश्य–**इससे जुड़े कार्यक्रमों के दौरान युवाओं में छुपी प्रतिभाओं को सामने लाना है, जिससे देश का युवा वर्ग भविष्य में सही मार्ग चुनकर आगे बढ़े और देश का मान सम्मान बढ़ाए। समाज के लिए एक मिसाल कायम करे। बहुत से युवा ऐसे हैं जो इसी के जरिए आज समाज में बहुत ऊँचाईयों पर है समाज व पूरे देश को उन पर गर्व है।



☞ उत्तम पुरुषों की संपत्ति का मुख्य प्रयोजन यही है कि औरों की विपत्ति का नाश हो। – रहीम

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# कहानी : तोता-मैना

सानिया बी
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

एक पेड़ की डाली पर एक तोता और एक मैना रहा करते थे। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी और अत्यधिक प्रेम था। वह एक साथ रहते और खान–पान सब एक साथ किया करते थे। धीरे–धीरे उनकी मित्रता और भी गहरी हो गयी। वे एक–दूसरे के बिना रह भी नही पाते थे। दोनो सहवर्ती थे। एक दिन मैना तोते से कहती है कि कहीं तुम मुझे

छोडकर उड़ तो न जाओगे, तोता निःस्वार्थ था, वह कहता है कि अगर मैं कही उड़ जाऊँ तो तुम मुझे पकड़ लेना। मैना ने बड़ी मासूमियत से कहा कि मैं तुम्हे पकड़ तो सकती हूँ मगर फिर तुम्हें पा तो नही सकते, यह सुनकर तोते की आँखों में आँसू आ जाते हैं और वो अपने पंखों को सदैव के लिये तोड़ देता है और वो मैना से कहता है अब हम हमेशा साथ रहेंगे। फिर एक दिन बहुत जोर की आँधी और तूफान आता है और मैना तोते को छोड़कर उड़ने लगती है। तब तोता कहता है कि तुम उड़ जाओ मेरे पंख नही है और मैं नही उड़ सकता। मैना अचानक से उड़ जाती है और कहती है अपना ख्याल रखना और तोता उसको उड़ता देख सदैव के लिये संसार से तिरोहित हो जाता है जब आँधी और तूफान थमता है और मैना वापस आती है तो देखती है कि तोता मर चुका होता है और एक पेड़ की डाल पर लिखा होता है कि काश वो एक बार तो कहकर जाती कि मैं भी तुम्हे छोड़कर नहीं उड़ सकती, तो मैं तूफान आने से पहले नही मरता अर्थात् मित्रता हो या प्रेम एक दूसरे का साथ देना चाहिए।

# मेरी प्यारी माँ

तन्नू
बी.ए. प्रथम वर्ष

साथियों दुनिया में कोई ऐसी कलम आज तक नहीं बनी है, जो माँ शब्द की परिभाषा लिख दे। कहते हैं कि संसार में माँ भगवान का दूसरा रूप होती है। माँ की ममता का कोई मूल्य नहीं है। वे लोग बहुत ही भाग्यशाली होते हैं जिनकी माँ होती है। वह हमें बहुत प्यार करती है। कहते हैं कि जिनके सिर पर माँ बाप का हाथ होता है। किस्मत भी उनका साथ नहीं छोड़ती है।

# प्रकृति का महत्त्व

शिवानी सैनी
बी.ए. प्रथम वर्ष

आज कल जैसा कि आप सब लोग जानते हैं कि बढ़ती जनसंख्या के कारण हमारी प्रकृति बहुत खतरे में हैं। हम अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं। अपने आस–पास पेड़ को काट रहे हैं। यह जानते हुए भी वह हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। अगर हम अपने वृक्ष को काट देंगे और निवास स्थल स्थापित कर लेंगे तो हमे ऑक्सीजन कहाँ से प्राप्त होगी और हम अपनी कार्बनडाई ऑक्साइड किसे देंगे। यदि हम अभी से इस बात को नहीं समझ पायेंगे तो आने वाली पीढ़ियों का जीवन स्वयं ही खतरे में डाल देंगे। अगर हम इस बात को नहीं समझे तो हमारी पीढ़ी का जीवन बिना पानी, बिना वृक्ष और बिना पर्यावरण के ही व्यतीत करना होगा। जो सम्भव नहीं है। हमारे देश की जनसंख्या बाकी अन्य देशों की जनसख्या से आगे बढ़ती जा रही है। हमारा जीवन कैसे संभव होगा। धरती पर जीवन जीने के लिये भगवान से हमें बहुमूल्य और कीमती उपहार के रूप में प्रकृति मिली है और आज हम सभी उसी प्रकृति को हानि पहुँचा रहे हैं। ये तो हम सभी जानते हैं कि प्रकृति हमारी माँ है जो पूरी जनसख्या का भार संभाल रही है। एक माँ ही अपने बच्चों के लिए इतना बड़ा योगदान दे सकती है। प्रकृति हमारे जीवन का परम स्रोत है । जीवित और निर्जीव दोनों चीजों में प्रकृति शामिल है। हमारी प्रकृति मनुष्य का स्वास्थ्य खराब या चोट लगने पर औषधि प्रदान करती है। प्रकृति की सहायता से मनुष्य अपने निवास के लिए घर बना सकता है। हमारी प्रकृति हमें निष्काम भाव से सेवा का संदेश देती है। हमारे जीवन यापन के लिए प्रकृति बहुत ही उपयोगी है।

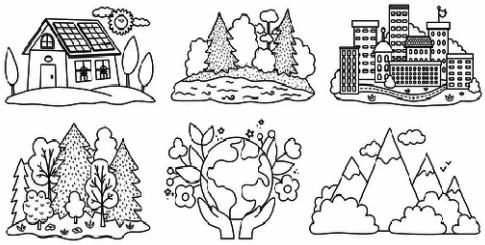

# कहानी

रिजवान
कक्षा बी0ए0 प्रथम वर्ष

एक मुर्गी के कई बच्चे थे। मुर्गी ने बच्चों से कहा तुम मेरे साथ–साथ रहा करो। नहीं तो बिल्ली तुमको पकड़ लेगी। एक दिन मुर्गी इधर–उधर चर चुग रही थी। उसके साथ उसके बच्चे भी थे। मगर एक बच्चा साथ नहीं था। वह दूर–दूर फिर रहा था। मुर्गी ने उसे बुलाया। कुट–कुट। बच्चे ने माँ की बात न मानी। इतने में एक बिल्ली झपटी और उसे मुँह में दबाकर ले गई। बच्चा ची–ची करता रह गया। जो बच्चे माँ के साथ थे वह बच गए। जिस बच्चे ने माँ की बात नही मानी थी उसे बिल्ली खा गई।

**सन्देश** – बच्चों इस कहानी से पता चलता है कि हमें अपने माता–पिता का कहना मानना बहुत जरूरी है। जो माता–पिता का कहना नहीं मानते हैं, वह हमेशा परेशान रहते हैं और मर जाते हैं। मुर्गी के बच्चे की तरह। इसलिए माता–पिता का कहना मानते रहिये।

## कहानी : 'एक माँ का संघर्ष'

तन्नू
बी.ए. प्रथम वर्ष

तुलसीपुर के गाँव में एक सुमन नाम की औरत रहा करती थी, उसके साथ एक 6 साल की बच्ची पिंकी भी रहा करती थी। उसकी बच्ची बहुत छोटी थी, तभी उसके पिता का एक दिन कार एक्सीडेंड हो जाता है और राजेश मर जाता है। तभी से लेकर सुमन पर पिंकी की जिम्मेदारी आ जाती है और वो बेचारी घर बनाने वाले कामों में जाया करती थी। जितना वो पैसा कमाती थी उतने में ही उसके घर का खर्चा चलता था और अपनी बच्ची को पालती थी देखते ही देखते मौसम बदल गया और बारिश का मौसम आ गया था जिससे सारा काम रुक गया था। अब सुमन के घर में खाने का कोई सामान बाकी नहीं था और उसके पास कोई काम भी नहीं था जिससे वह कोई काम कर के पैसा कमा सके। यही सोच रही थी कि उसी समय पिंकी उसके पास जाकर कहने लगती है कि माँ मुझे बहुत भूख लग रही है। माँ अपने आप को बहुत असहाय और बेबस समझने लगती है तभी वह सोचती है कि वह पापड़ बनाने का कम शुरू कर दे तो वह अपने गाँव के प्रधान से 1000 रुपये उधार ले लेती है और पापड़ बनाकर बाजार ले जाती है। उसके पापड़ पहले दिन तो सब बिक जाते हैं। अगले दिन से इसी कारोबार का काम शुरू कर देती है और कुछ सालों बाद वह एक कम्पनी की मालकिन बन जाती है और उधर उसकी बेटी एक आई.पी.एस. बन जाती है। फिर उसकी माँ अपनी बेटी से खुश हो जाती है वह दोनों कुशल जीवन व्यतीत करने लगते हैं।

## अलंकार की कविता

शीतल
बी.ए. तृतीय वर्ष

बार–बार एक वर्ण जो आये,
अनुप्रास की भाषा।
और यमक में जोड़ा आकर अलग अर्थ दर्शाता।
और श्लेष में एक शब्द के अर्थ अनेकों भाई।
अतिशयोक्ति में बढ़ा–चढ़ाकर छोटी बात बताई।
चरण कमल एक रूप मान लो रूपक की परिभाषा,
सा, सी, से सम, सरिस समझ लो उपमा जी की आश,
उत्प्रेक्षा संकेत समझ लो जनु जानो , मनु मानो।
दो चीजों में भ्रम पैदा हो भ्रान्ति मान पहचानो।

## कविता : शहीद भगत सिंह

शुऐब अली
बी.ए. तृतीय वर्ष

माली की है ये ख्वाहिशें, हर फूल जो खिलता रहे।
कूकती है बाग में कोयल, अगर आज़ाद है।
बागवान दिल से वतन को दुआ देता है कि
मैं रहूँ  ना रहूँ यह चमन आबाद रहे।।
सरदार भगत सिंह आज चले हैं पहन वसंती चोला
जिसे पहन कर दीवानों ने गुलामी का बंधन खोला
सुनो आज भारत के अमर जवानों
मेरे बाद तुम्हारा भी इम्तिहान होगा,
भाई बहन को दिलासा दिया था खूब
कि आजादी पर मिटने से जहाँ अमर होगा।
कर गये देश को रोशन तेईस मार्च को
फाँसी पर चढ़कर बढ़ा दी शान तेईस मार्च को।

## शब्द की ताकत

रूबीना कादरी
बी०ए० तृतीय वर्ष

विद्यार्थी बोले गए शब्दों का असर या शब्दों की ताकत हमेशा याद रखें। आप अपनी दुनिया अपने शब्दों से बदल सकते हैं। यह हमेशा याद रखें कि आपकी ज़िन्दगी और मौत आपके जीभ के हवाले है। इस दुनिया में मानवता का सबसे प्रभावशाली हथियार शब्द है । विद्यार्थी अपने जीवन में एक बात हमेशा याद रखें कि किसी खास स्थिति में खास लोगों द्वारा कुछ खास शब्दों के चुनाव से बड़ी क्रांतियां स्वतंत्रता संग्राम एवं जीवन बदल देने वाले निर्णय लिए गए हैं। शब्द किसी को बिना छुए भी छू जाते हैं। यह उस व्यक्ति के साथ नहीं होने पर भी असर कर जाते हैं। हम उन लेखकों की किताबे पढ़ते हैं और पढ़ते रहेंगे। जिनसे हम कभी नहीं मिले और ना ही मिलेंगे । जो अब जिन्दा भी नही हैं पर उनके शब्द हमारे जीवन में बहुत प्रभाव डालते हैं। शब्दों में वही ताकत होती है कि वह किसी को भी कितना ही ऊपर उठा दे या बर्बाद कर देते हैं। इस बात में सन्देह नहीं है कि शब्द मानवता द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला इस दुनिया का सबसे प्रभावशाली ड्रग है।



☞ उदय होते समय सूर्य लाल होता है और अस्त होते समय भी। इसी प्रकार संपत्ति और विपत्ति के समय महान पुरुषों में एकरूपता होती है। – कालिदास

## कविता : वह दिन

खदीजा इकबाल, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

वह दिन भी कितने अच्छे थे,
जब हम भी बच्चे थे
ना थी रोने की वजह ना मुस्स्कराने का बहाना,
वह बचपन भी था कितना सुहाना।
मिल जाते थे अगर खिलौने,
तो ना होता था खुशी का ठिकाना।
डर जाते थे टीचर की एक डाँट से,
वह बचपन भी था कितना सुहाना।
कभी पापा के कंधे तो
कभी माँ के आँचल का था सहारा।
लुका छुपी खेलते गुज़ार देते थे दिन सारा,
वह बचपन भी था कितना सुहाना।
अगर हो जाती भी बहन में लड़ाई,
तो रखते थे ना दिल में कोई शिकवा।
वह बचपन भी था कितना सुहाना।
जिसकी मधुर यादें रह गईं।
सोचती हूँ मैं काश लौट आए वो दिन।
पर समय बड़ा बलवान है,
उसने कभी पीछे मुड़ना नहीं सीखा।

## अपने बचपन को दें आवाज़

याचना रानी, एम.ए. प्रथम वर्ष

अपने बचपन को दें आवाज,
जो पल बिछुड़ गए हैं आज,
हैं उन पलों की फिर से आस,
अपने बचपन को दें आवाज।
थी ज़िन्दगी आज़ाद परिन्दा,
नहीं चिन्ता करे कोई निन्दा,
मस्तक पर पहने फिर सरताज,
अपने बचपन को दें आवाज़।
निडरता कठिन रास्तों की वो,
करे कलख कानन में फिर जो,
सच–झूठ का न पड़े प्रभाव,
अपने बचपन को दें आवाज।
हैं बातें वो नटखटपन की,
थे करते सब अपने मन की,
न रहती हार –जीत की याद,
अपने बचपन को दें आवाज़।
नदी किनारे गुजरे थे दिन,
न कटा दिन कभी जामुन के बिन,
छलकी आँखे सुन पापा की आवाज़
अपने बचपन को दें आवाज।
रात नहीं होती थी तब,
थे लुका छिपी खेलते सब,
हजार खेल थे हमको याद,
अपने बचपन को दें आवाज।
मुस्कान भरी थी जो सच से,
क्यों निकल आए हम उस कवच से,
खुल नही पाएगा इसका राज़,
अपने बचपन को दें आवाज़।

## वर्तमान राजनीति

मो० सोहराब
बी०एड० द्वितीय वर्ष

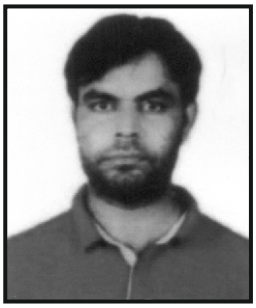

रुपया छीना, पैसा छीना, छीन लिया संसार रे,
सुख छीना, चैन छीना, छीन लिया कुशल व्यवहार रे।
सद्गुण छीना, मानव छीना, छीन लिया सदाचार रे,
इसके बदले लिया है, सिर्फ, सिर्फ भ्रष्टाचार रे।।
संसद हो या न्यायालय, दबता है ईमानदार रे,
मानो अब तो बन बैठा है, राजा अत्याचार रे।
नेता हो, अभिनेता हो, या फिर हो कलाकार रे,
देश भूले, जनता भूले, बस पैसे पर ऐतबार रे।।
घोटाले बढ़ते , ढोंग बढ़ते बढ़ गए हैं, बलात्कार रे,
ये मेरा भारत था, महापुरुषों की भूमि कैसे करें ऐतबार रे।
कागज से ही डर बैठा है, अब तो हर परिवार रे,
सुबह उठकर जब खोले, खोले है अखबार रे।।
अब क्या कहना फल–फूल रहा, धड़ल्ले से दुराचार रे,
थक चुके हम भारत –वासी, उठा–उठा कर ये भार रे।
कब तक दबेंगे, गरीब ये, कब तक दबेगा सदाचार रे
छीन लिया है सब कुछ हमसे, मत छीनो अधिकार रे !

## दोस्त

उमम खान
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
(वनस्पति विज्ञान)

जो मिला करते थे रोज कभी,
खत्म नहीं होती थी बातें कभी।।
हाल–ए–दिल बँया किया करते थे,
मिल कर हँसा करते थे।
आज क्यूँ नहीं हैं वो सभी?
उदास नहीं हूँ इस बात से मैं,
क्योंकि अनजान नहीं थी हालात से,
पुराने दोस्त रोज़ नहीं मिलते हैं अब,
बस यादों में रहते हैं सब,
मतलब का नहीं था रिश्ता
उम्र भर का था वादा
आज जो दूरियाँ हैं
बस अपनी–अपनी मंज़िल
पाने की मजबूरियाँ हैं
कोई दोस्ती पुरानी नहीं होती
कुछ दिन बात ना करने से बेगानी नहीं होती

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# हिन्दी हूँ मैं!

दीपक श्रीवास्तव
एम0एससी0(प्रथम सत्र) वनस्पति विज्ञान

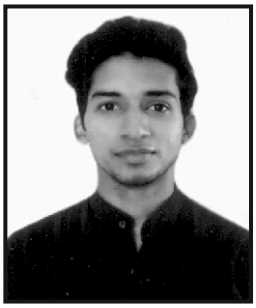

मातृ भाषा हिन्दी मेरी, नमस्ते से प्रख्यात है,
देश–दुनिया नमन करे, हिन्दी की क्या बात है!
अनपढ़ को ज्ञानी बनाना हिन्दी की पहचान है,
हिन्दी हूँ मैं! और हिन्दी से हिन्दुस्तान है।।
हर वर्ण इसका लवण है, हर मात्रा तीखी धार है
हिन्दी का हर शब्द स्वाद, हर शब्द ज़ायकेदार है।
प्रशंसा का वज़न बढ़ा दे, प्रशंसा की हकदार है
हिन्दी की तो गालियाँ भी बोलता संसार है।।
इंग्लिश , उर्दू, संस्कृत हिन्दी में विराजमान हैं।
हिन्दी हूँ मैं! और हिन्दी से हिन्दुस्तान है।।
फेफड़ों से उठ हवा जब कण्ठ से टकराती है
होठों के घुमाव से वो स्वर में बदल जाती है।
हिन्दी के तो बोल भी विज्ञान सिखलाती है,
व्यंजनों का खेल पूरे मुख को ये खिलाती है।।
कण्ठ तालु, होंठ, दन्त हिन्दी इनकी शान है।
हिन्दी हूँ मैं! और हिन्दी से हिन्दुस्तान है।।

# कविता : अपनी खुशी

अनामिका
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

कोई अगर है परेशान मुझसे
अब मैं परवाह नहीं करती,
जीती हूँ अपने अंदाज़ में
परेशान बिना किये औरों को।
फर्क नहीं पड़ता अब मुझको
गिले शिकवे शिकायत से
जिंदगी मस्त गुज़र रही है
अब इस अंदाज़ में जीने से।
ज़िंदगी के हर एक पल को
अब मस्ती से जीती हूँ,
हो गयी हूँ मस्त मौला
अब अपनी ही धुन में रहती हूँ।
ना ही शिकवे शिकायत करती हूँ
किसी से ना तो सुनती हूँ।
किसी की ना तो सुनती हूँ
ना ही किसी को कुछ सुनाती हूँ।
जीने का यह मंत्र मैंने
सीखा है अपने अनुभव से,
अपने आप में ही अब
मैं हरदम खुश रहती हूँ।।

# कुछ भी बनो मुबारक है, पर पहले इंसान बनो

दीक्षा (एम0ए0 हिन्दी साहित्य)

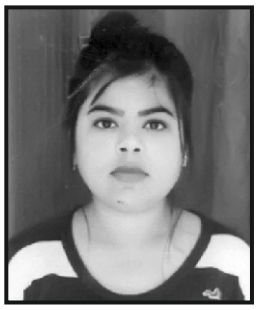

महिमा गाएँ जिसकी सारे
चाहे ऐसे विद्वान बनो,
दुनिया जीत ले पूरी जो
चाहे वो सुल्तान बनो।
बन जाओ पुत्र हिमालय के
या गंगा की सन्तान बनो।
नेता बन जाओ पब्लिक के
सेना के वीर जवान बनो।
डॉक्टर, वैद्य, हकीम बनो या
व्यापारी धनवान बनो।
मुंशी जज वकील बनो
या कवि लेखक गुणवान बनो।
जिसे देखकर सब डर जातें,
चाहे ऐसे पहलवान बनो,
प्यार भरे शहरों में लेकर
नफरत का अंगार बनो।
अफसर बन जाओ सरकारी
या अफसर के दरबान बनो।
बन जाओ मुखिया शहरों के
या गाँव के प्रधान बनो।
सामान मिले जहाँ दंगों का
चाहे वो दुकान बनो।
अंधियारे को जो मिटाये
चाहे वो चिराग बनो।
गीता सार का ज्ञान बढ़ाये
चाहे जो प्रचार बनो।
नफरतों के दरिया में
प्यार का गुलिस्तां बनो।
जिसको पढ़कर सीख मिले
ऐसी एक किताब बनो।
देश का जो मान बढ़ाये
चाहे वो सरताज बनो।
चोर बनो, शैतान बनो, भगवान बनो,
कुछ भी बनो मुबारक है,
पर पहले इंसान बनो।

# धर्म निरपेक्ष-प्रकृति

कामरान अहमद
एम.ए. (प्रथम सत्र)

प्रकृति की
सारी चीजें
धर्म निरपेक्ष हैं।
चाँद नियम से निकलता रहेगा
ईद या करवा चौथ
हमारी विविधताएँ हैं
आग में पकी ईंट पर
नहीं लगते प्रतिबंध
उसी से मन्दिर बनना है
उसी से मस्जिद, उसी से गुरुद्वारे,
उसी से गिरजाघर।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# क्योंकि मैं लड़का हूँ...

हेमन्त कुमार
बी0एससी0 (प्रथम वर्ष)

आखिर कौन होता है एक लड़का
जिसे लाड़–प्यार से ज्यादा,
ज़िम्मेदारियों का पाठ पढ़ाया जाता है!
कितनी मुश्किल से कमाते हैं पैसा,
बचपन से ही सिखाया जाता है,
वो होता है लड़का।
अरे तू लड़का है किसी भी हाल में रो नहीं सकता,
सपने टूटे या दिल तू पलकें भिगो नही सकता,
तू मर्द है रो के दिखा नहीं सकता।
कितना भी दुख हो आँसू बहा नहीं सकता,
यह सब जिसके मन में बिठा दिया जाता है,
सब कुछ जिसे पहले से सिखा दिया जाता है,
वह होता है लड़का।
क्यों उनकी आँखों से निकले आँसू,
कोई देख नहीं पाता है।
क्यों आजकल तो हर कोई
बस लड़कों को ही बुरा बताता है।
आखिर क्यों हम वो हैं–
जिन्हें पैदा होते ही उम्मीदों से लाद दिया जाता है,
फिर थोड़े बड़े होते ही किताबों का
बोझ डाल दिया जाता है।
बड़े लाड़ से रखा जाता है, बड़ा प्यार किया जाता है,
कभी–कभी गलतियों पर डाँट भी दिया जाता है।
तो कभी–कभी शरारतों पर हमें पीट भी दिया जाता है।
और हमारे रोने पर हमें चुप करा दिया जाता है,
और बड़े प्यार से समझा दिया जाता है,
हमारी ताकत हमारी बाजुओं से नाप ली जाती है,
तो हमारी खूबसूरती हमारी शक्ल से ही
समझ ली जाती है
हमारी नाकामयाबी पर हम पर हँसा जाता है।
तो हमारी सफलता पर किस्मत का टैग
लगा दिया जाता है।
और बड़ी सरलता से कह दिया जाता है,
कि तुम लड़के हो ऐसे टूटा थोड़े ही जाता है।
तू दिन–रात , सुबह–शाम इन ख्वाहिशों की
भट्टी में जल कर तो देख,
अरे एक बार तू लड़का बनकर तो देख।
एक छोटी सी गलती की वजह से
सभी लड़कों को जज कर लिया जाता है,
कुछ लड़के इतने भी बुरे नहीं होते,
जितना उन्हें बता दिया जाता है।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# कविता : आज की नारी

गुलफ़िज़ा
बी०ए० द्वितीय वर्ष

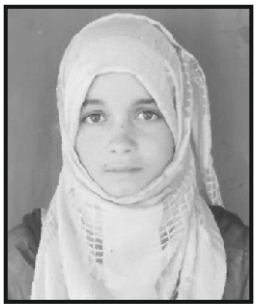

1. किसी पर बोझ नहीं हूँ मैं,
   फिर क्यों घोटी जाती हूँ हर रोज मैं।।
   अब इस घुटन से निकलने लगी हूँ मैं,
   क्योकि खुद को समझने लगी हूँ मैं।।
   मैं क्या हूँ, क्या कर सकती हूँ, इस बात से परिचित होने लगी हूँ।।
   क्या सोच रहे हो वो पुरानी वाली हूँ मैं?
   नहीं, आज की नारी हूँ मैं।।
2. वो सती प्रथा में पति के साथ जलकर चीखने चिल्लाने वाली नहीं हूँ मैं।
   अब तो पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली हूँ मैं।।
   चार दीवारी में मुझे कैद नहीं कर सकते तुम खुले आसमान में उड़ने वाली हूँ मैं,
   मैं जो सितारे आसमान में चमकते हैं उन्हें कंधों पर लाने वाली किरन बेदी हूँ मैं।।
   अन्तरिक्ष में जाने वाली कल्पना हूँ मैं।
   कुश्ती के अखाड़े में लड़कों को पछाड़ने वाली हूँ मैं।।
   क्या सोच रहे हो, पीछे हटने वाली नहीं हूँ मैं
   डटकर सामना करने वाली नारी हूँ मैं।
3. आओ और कर लो मुकाबला, किसी से कम नहीं हूँ मैं।
   तुम्हारे घर में तो क्या, देश के बॉर्डर पर भी हूँ मैं।।
   जहाँ न्याय मिलता है उस अदालत में भी हूँ मैं।
   जहाँ जीवनदान मिलता है उस हॉस्पिटल में भी हूँ मैं।।
   अब मुझसे मेरे अधिकार कोई छीन नहीं सकता।
   अब मुझे कोई हर पल मरने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।
   अब मुझे कोई दहेज के लिए जला नहीं सकता।
   अब मुझे यूँ राहों में अकेला देख कोई खेल नहीं सकता।
   क्या सोच रहे हो वो पुरानी वाली हूँ मैं,

# नारी सशक्तिकरण

मरयम फैजान शमसी
बी0एससी0 द्वितीय वर्ष

जिस नारी को तुम समझते बेचारी हो।
हो सकता है वो तुम सब पर भारी हो।।
वह स्त्री है तो क्या, नहीं है पुरूषों से कम।
दिया जाए अगर अवसर पहुचेंगे शिखर तक कदम।।
क्या तुमने देखा नही इतिहास रचा है उसने............
चाँद हो, शिखर हो या पुलिस की वर्दी हो
फिर क्यों है आचरण ऐसा तुम्हारा, जैसे कि ये कोई वस्तु हो।।
वो तो जननी है, बेटी, अर्धांगिनी है वो।
इस समाज का निर्माण करने वाली है वो।।
जब इतनी ही महत्तवपूर्ण है वो फिर क्यों नहीं अपनाते हो ?
क्यों गर्भ में ही उसे मौत की नींद सुलाते हो?
केवल दहेज के डर से मार दिया अपनी लक्ष्मी को?
सोचा है कभी कि कितना नुकसान पहुँचा रहे हैं जग के भविष्य को ?
उसे बचाया होता अगर, और ज्ञान दिलाया होता।
तो शायद गर्व से अपना सर तुमने ऊँचा पाया होता।।
वक़्त है अब भी संभल जाओ तुम।



# जीने की राह

कामरान अहमद
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कभी न कहो कि दिन अपना खराब है।
समझ लो हम काँटों से घिर गए गुलाब हैं।।
रात की थकान सुबह तक ज़ारी रहती है।
फिर भी सोते नहीं हम क्योंकि ज़िम्मेदारी रहती है।।
रखो हौसला वो मंज़र भी आएगा।
प्यासे के पास चलकर समंदर भी आएगा।
थक कर न बैठो, ऐ मंज़िल के मुसाफिर
मंज़िल भी मिलेगी और जीने का मज़ा भी आएगा.....



☞ चंद्रमा, हिमालय पर्वत, केले के वृक्ष और चंदन शीतल माने गए हैं, पर इनमें से कुछ भी इतना शीतल नहीं जितना मनुष्य का तृष्णा रहित चित्त। – वशिष्ठ

# जीवन-दृष्टिकोण

ज्योति
बी०ए० प्रथम वर्ष

मानव का जीवन अत्यन्त दुर्लभ तथा विचारात्मक है। मनुष्य के जीवन में कठिनाईयाँ, सुख–दु:ख, हर्ष–विषाद आदि आते रहते है। कुछ मनुष्य इन कठिनाइयों को विवेक का प्रयोग करते हुए उसका हल निकाल लेते हैं तथा अपने जीवन को सुचारु रूप से व्यतीत करने लगते हैं तथा कुछ मनुष्य कठिनाई से भयभीत होकर गलत पथ को चुन लेते है। जिससे उनका जीवन नष्ट होने की कगार पर आ जाता है।

'जीवन' मनुष्य को ईश्वर के द्वारा दिया गया सुन्दर उपहार है। प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को भली–भाँति व्यतीत करना चाहता है। तथा इसके लिए वह अत्यन्त परिश्रम तथा मेहनत भी करता है। जीवन व्यतीत करने के लिए प्रत्येक मनुष्य अपने–अपने अनुसार अलग–अलग पथ चुनता है। एक तो ठीक तथा ईमानदारी तथा दूसरा बेईमानी का। हममें से कई व्यक्ति दूसरा वाला विकल्प ज़्यादा चुनते हैं क्योंकि इससे लक्ष्य जल्दी तो मिलता है साथ ही मेहनत भी कम लगती है। परन्तु ये विकल्प कुछ समय तक ही सही लगता है। बाद में ये हमारे जीवन में दुविधा तथा कठिनाईयाँ भी बढ़ा देता है। इस कारण मनुष्य को पहला विकल्प ही चुनना चाहिए। इसमें सुख तथा शांति दोनों हैं। हाँ इसमें मेहनत तो लगती है परन्तु हमारा जीवन सुखमय तथा शान्तिपूर्वक व्यतीत होता है।

हमारे जीवन की इसी अवस्था का प्रभाव हमारी संगत पर भी पड़ता है। अच्छाई के साथ अच्छे लोगों तथा बुराई के साथ बुरे लोगों का साथ होता है। हम अपने लक्ष्य पर ध्यान देना चाहिए तथा उस पर अमल भी करना चाहिए। कठिन परिश्रम तथा मेहनत से मानव कुछ भी हासिल कर सकता है तथा अपना जीवन सुखमय बना सकता है। कठिनाइयों का आना लाजमी है परन्तु उनसे लड़ना मानव का हुनर है। प्रत्येक मानव के भीतर नायक छिपा होता है, ये हम पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार अपने जीवन को व्यतीत करते हैं।

इल्मा मोबीन
बी०ए० प्रथम वर्ष

# प्रेरणाप्रद सूक्तियाँ

कभी जीवन में अकेले भी चलना पड़े तो डरना मत क्योंकि समस्या, शमशान, शिखर और सिंहासन, इन सब पर इंसान अकेला ही होता है। आपके जीवन में अंधियारा नज़र आए तो समझ लीजिए कि ईश्वर आपके भविष्य की सुन्दर सी तस्वीर का निर्माण कर रहा है। जीत की मिठास का अदाज़ा तभी होता है जब आप हार का कड़वा घूँट पीते हैं। ज़िंदगी जब इम्तिहान लेती है तो तब तक नहीं छोड़ती जब तक उसमें छिपा सबक सिखा ना लें। इंद्रधनुष बनाने के लिए बारिश और धूप दोनों की ज़रूरत होती है। कई बार शून्य से शुरुआत करना बहुत जरूरी है। याद रखना कि ज़िंदगी एक संघर्ष है, हारना अच्छा है, हार मान जाना नहीं। ईश्वर कहते हैं, उदास न हो, मैं तेरे साथ हूँ, सामने नहीं आस–पास हूँ। पलको को बंद कर और दिल से याद कर, मैं कोई और नहीं तेरा विश्वास हूँ।



☞ बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल

# कॉलेज लाइफ

समरीन
बी०ए० तृतीय वर्ष

सब अजनबी दोस्तों के याराने दिल को फिर याद आये
वह बीते पुराने लम्हे फिर याद आये.....।
वह पहला दिन वह पहली बातें,
आज वह दोस्त सब बिछड़े तो लम्हे याद आये.....।
देखा था जिन्हें कभी अजनबी सा हमने
आज वही खास इतने की किसी को क्या बताऐं.....
वो यारों की महफ़िल, वो किताबों के ढेर
वो रातों को रतजगे, वो क्लास रूम में सब देर.....
देखा आज उस क्लास रूम की तरफ
तो वह दोस्त मुस्कराते बड़े याद आये.....
अब यही कुछ दिन है कुछ दिन की सोहबत
बिछड़ेंगे सब ऐसे कि हर मुस्कान पर याद आये
कोई इस शहर, कोई उस शहर, कोई इस गली
कोई उस गली, निकलेगें जब इस राह से वो राहगीर याद आये
दिल टूटा यह सोचकर कितनों को आखरी दफा देखेगे
वही बात दिल पे चुभी के जहाँ काम आर–पार दिखाई आये।
गले मिलकर जुदा किया, हुआ वादा अब रहेगे हमेशा यहाँ...
आँखे नम हुईं तो चुप करते नज़र आये.....
यही तो ज़िदगी है जो आगे बढ़ी अपने मुकाम से
शुरुआत है अभी न जाने आगे कितने अनजाने आयें...
सब अजनबी दोस्तों के याराने दिल को फिर याद आये
वह बीते पुराने लम्हे फिर याद आये।

## नारी तुम महान

फरहीन, बी०ए० तृतीय वर्ष

नारी ने सहा है अब तक जीवन में अपमान,
अब न सहेगी, अब न झुकेगी, बनेगी वह भी महान,
जीवन में आये चाहे कितने तूफान,
नारी रखेगी अब अपनी आन, मान और शान।
जीवन तो इक बहती नदिया है,
इसका धर्म ही बहना है,
हम सबको इसी समाज में रहना है,
पर रखना तुम अपना मान।
इतना तो रखो अपने पर विश्वास,
अपना मत डिगने दो आत्म–विश्वास,
होगा कभी तुमको भी, होगा हम पर अभिमान,
समझोगे पुत्री को तुम भी महान।
नारी में निहित हैं वे तीन रूप,
सत्यम शिवम्–सुदरम् का वह अनुरूप
दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती की वह प्रारूप,
सभी मानेंगे–नारी की महिमा का स्वरूप,
नारी अब अबला नहीं सबला है।
यही तो कमला, विमला व सरला है,
अब वे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं सहेंगी,
इल्म पाकर वह विदुषी बनेंगी,
वह भी मदरसे पढ़ने जाएँगी,
अपना भविष्य उज्ज्वल बनाएँगी,
तभी समाज का कल्याण कर पाएँगी।

## नारी सशक्तिकरण

नगमा खान, बी०ए० तृतीय वर्ष

मैं रही दिए की लौ बनकर,
घर आंगन रोशन करती हूँ
मत खेलो मेरे जज़्बातो से,
अंगार भी मैं बन सकती हूँ।।
मैं भड़क उठी जो अग्नि सी,
ये गांव जला भी सकती हूँ
जो हवा तुफानी लाओगे तो,
खाक तुम्हें कर सकती हूँ।।
पूजा भी करते हो माँ की,
मंदिर में अपने रखते हो,
कह कर आगे तुम मेरे,
नतमस्तक अपना करते हो।।
हाँ वही मैं सीता मैया हूँ,
हाँ वही मैं राधा रानी हूँ,
हाँ वही मैं रक्षा करने वाली,
माँ दुर्गा और भवानी हूँ।।
काली भी है अवतार मेरा,
मैं रूद्रा रूप धर सकती हूँ,
और याद रहे गर चाहूँ तो,
मैं चंडी भी बन सकती हूँ।।
हर रूप में माँ स्वीकार है जब
मुझको भी तुम स्वीकार करो।।

## कविता : बहादुर फौजी

कैडेट लाल सिंह
बी०ए० तृतीय वर्ष

बहादुर से भी बहादुर हैं मेरे फौजी।
मेरे देश की शान हैं फौजी।
आने ना दे आँच कोई मेरे भारत देश को,
देख जिसको घबराये काल।
बुरा होता दुश्मन का हाल,
हैं रक्षा जिनका गौरव भाल,
हैं इनका रण कौशल बेमिसाल।
अगर दुश्मन सरहद पर करे कोई दुस्साहस,
तो हमारे फौजी दुश्मनों को देते मुँह तोड़ ज़बाब।।
दिन–रात जागकर करे वो सेवा,
देश के चप्पे–चप्पे पर सीमाओं की करें सुरक्षा,
खुद सोकर काँटों पर हम सब को चैन नींद सुलाए,
कभी नहीं संघर्ष से इतिहास हमारा हारा,
मेरे बहादुर फ़ौजियों ने दुश्मनों को घर में घुसकर मारा।
बहादुर फ़ौजी सियाचीन की बर्फीली घटियों से,
जैसलमेर की तपती बालू में खुले आसमान के नीचे,
करें वो सबकी सुरक्षा,
समुद्र की लहरों के बीच तो कभी नभ को
चीर करें वो हमारी सेवा।
ऐसे बहादुर फ़ौजियों को करे हम नमन बारम्बार।
''जय हिन्द!, जय भारत!!''

## नारी सशक्तिकरण

आलिया
बी०ए० तृतीय वर्ष

मैं हूँ आज की नारी,
पूर्ण रूप से करने में हूँ सक्षम
हर चुनौती का हँसकर सामना।
साहस और आत्मविश्वास के बल पर
बनाई अपनी अलग पहचान,
परिवार और कैरियर दोनो हीं में
तालमेल बैठाती नारी का कौशल,
कामयाबी के कदम चूमें,
आर्थिक और मानसिक रूप से
बनी आज आत्मनिर्भर।
सफलता की सीढ़ियों पर हो अग्रसर,
ज़रूरत पड़ने पर अधिकारों को
हथियार बन आज हर क्षेत्र में
अपना लोहा मनवा रही,
कल तक भावनात्मक रूप से
कमज़ोर नारी अपनी ज़िंदगी के
महत्त्पूर्ण फ़ैसले स्वयं लेकर
दाम्पत्य जीवन की खुशहाली के
आदर्श बलिदान से कहे यूँ,
हाँ सिर्फ मैं ही काफी हूँ
मैं आज की नारी हूँ।।

## ऑनलाइन शिक्षा

दीपेश कुमार
बी.एड. विभाग (द्वितीय वर्ष)

शिक्षा भी कितनी प्रभावशाली हो गई है
आप देख ही रहे हैं शिक्षा ऑनलाइन हो गई है।
जाते थे पढ़ने पहले मीलों दूर बच्चे,
मिलते सभी से हम, दिल थे सभी के सच्चे,
घर में ही पड़े हैं कमी संस्कारों की हो गई है।
शिक्षा जब से ऑनलाइन हो गई है...
अब हर कोई पढ़ाई ऑनलाइन कर रहा है,
आंखों पर अब चश्मा दिन–रात चढ़ रहा है,
किताबों से तो दूरी पल–पल ही हो गई है,
शिक्षा जब से ऑनलाइन हो गई है...
दिनों का सुकून, रात का आराम खो गया है,
जब से हर कोई ऑनलाइन हो गया है,
वो प्रेम भाव कम है नीरसता हो गई है,
शिक्षा जब से ऑनलाइन हो गई है. ..
कितनी बदल गई है शिक्षा की दौड़ देखो,
ऑनलाइन तो लेकिन क्या पढ़ रहे हैं देखो,
जो "दीपक" से पढ़े होंगे वह सोचते तो होंगे,
कि शिक्षा भी अब कैसी हो गई है,
शिक्षा जब से ऑनलाइन हो गई है...

## कोशिश कर, हल निकलेगा

गौरव कुमार वार्ष्णेय, एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा,
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बजंर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा,
जिंदा रख, दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा,
कोशिशें जारी रख कर गुजरने की
जो है आज थमा–थमा सा, चल निकलेगा।

## एक कविता हर माँ के नाम

अमन सक्सैना, एम.एससी. (पूर्वार्द्ध)

घुटनों से रेंगते–रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में
जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका, दूध–मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है,
सीधा–साधा, भोला–भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ
"माँ" मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

NAAC
3rd Cycle
B Grade

# ज़िन्दगी एक आग का दरिया है

चौधरी अरुण प्रकाश
बी०ए० द्वितीय वर्ष

ज़िन्दगी एक आग का दरिया है, बस तूने नहीं जाना,
वक्त के झरोखों पर पानी से लिखा जाना,
जीने की ख्वाहिश में नादां परिन्दा बन कर उड़ जाना,
भरी दोपहरी में सावन सा बरस जाना,
किनारे पर नदी से रेत के घरौदे बना लेना।
और हवा के एक झोंके से बिखरे हुए रेत कणों का आभास है ज़िन्दगी,
काँटों से बिछी सेज पर दर्द भरी चुभन का एहसास है ज़िन्दगी,
पतझड़ में गिरे पत्तों सा ख़्याल है ज़िन्दगी।
सुन्दर सा आसमान है जिसका ऐसी एक जमीन है ज़िन्दगी।
सुख और दुख का बहता हुआ संगम है ज़िन्दगी, जिसे बस तूने नहीं जाना,
टुटे हुए सपनों को दिल में दफनाया हुआ साज़ है ज़िन्दगी,
छोटी–छोटी आँखों में सज़ा बड़ा सा विचार है ज़िन्दगी,
ग़र है ग़म की दास्ताँ ये तो प्यार का गीत भी है ज़िन्दगी,
सर्द रातों में दीपक सा जल जाना राहों में,
जीवन का उलझ–उलझ कर खुद सुलझ जाना,
धीरे–धीरे मंज़िल पर बढ़ता हुआ लक्ष्यों का महल है ज़िन्दगी,
झिलमिल सितारों को समेटे हुए रिश्तों का आँगन है ज़िन्दगी,
श्वेत रंग की साधारण मगर एक खास झंकार है ज़िन्दगी,
कोरे पन्नों की एक किताब है ज़िन्दगी,
जिसे खुद साहस और धैर्य की स्याही से लिखा जाना है।
ऐसा एक अद्भुत ग्रन्थ है ज़िन्दगी,
पर हो कुछ भी है सच यही कि ईश्वर का
सबसे सुन्दर और सुनहरा उपहार है ज़िन्दगी,
हर कवि की तरह मेरी कविता का आधार है ज़िन्दगी,
जिसे बस तूने नहीं जाना,
ऐसा प्रेम का एक गीत है ज़िन्दगी।।

**Dr. Baby Tabassum**
**(Assistant Professor)**
Department of Zoology, Toxicology lab.

## "A Holistic and Inclusive Approach to Education: The National Education Policy 2020 in India"

The National Education Policy 2020, which was announced on July 29, 2020, which replaced the previous National Policy on Education, which was formulated in 1986 and later modified in 1992; proposes a range of reforms in school education, higher education, and technical education. It includes several action points and activities for implementation in both schools and higher education. Some of the key features of the NEP 2020 are:

a. Universal access to education at all levels, from pre-primary school to Grade 12.
b. Quality early childhood care and education for children between 3-6 years.
c. New curricular and pedagogical structure (5+3+3+4) with no hard separation between arts and sciences, curricular and extracurricular activities, and vocational and academic streams.
d. National Mission on Foundational Literacy and Numeracy.
e. Emphasis on promoting multilingualism and Indian languages.
f. Assessment reforms, including board exams on up to two occasions during any given school year and establishing a new National Assessment Centre, PARAKH.
g. Equitable and inclusive education with special emphasis on socially and Economically Disadvantaged Groups (SEDGs) and separate Gender Inclusion fund and Special Education Zones for disadvantaged regions and groups.
h. Robust and transparent processes for recruitment of teachers and merit-based performance.
i. Availability of all resources through school complexes and clusters and setting up of a State School Standards Authority (SSSA).
j. Exposure of vocational education in schools and higher education systems.
k. Increasing the Gross Enrolment Ratio (GER) in higher education to 50%.
l. Holistic and Multidisciplinary Education with multiple entry/exit options and establishment of Academic Bank of Credit.
m. Setting up of Multidisciplinary Education and Research Universities (MERUs) and the National Research Foundation (NRF).

n. 'Light but Tight' regulation with the establishment of Higher Education Commission of India (HECI) and independent bodies for standard-setting, funding, accreditation, and regulation.
o. Expansion of open and distance learning to increase GER.
p. Internationalisation of Education.
q. Professional Education as an integral part of the higher education system.
r. Teacher Education with a 4-year integrated stage-specific, subject-specific Bachelor of Education and establishing a National Mission for Mentoring.
s. Creation of the National Educational Technology Forum (NETF) to provide a platform for the free exchange of ideas on the use of technology to enhance learning, assessment, planning, and administration.
t. Achieving 100% youth and adult literacy.
u. Multiple mechanisms with checks and balances to combat and stop the commercialization of higher education.
v. Holding all education institutions to similar standards of audit and disclosure as a 'not for profit' entity.
w. The Centre and the States are working together to increase public investment in the education sector to reach 6% of GDP at the earliest.
x. Strengthening the Central Advisory Board of Education to ensure coordination and an overall focus on quality education.

**4. BENEFITS OF THE NEP 2020 IN THE HIGHER EDUCATION:**

a. Multidisciplinary Education: NEP 2020 encourages a multidisciplinary approach to education, which means that students can choose courses from various streams and design their own curriculum. This will enable students to have a broader perspective and be better prepared for the real world.
b. **Flexible Academic Curriculum:** The NEP 2020 proposes a flexible academic curriculum, which will allow students to choose courses from different programs and earn credits. This will help students to pursue their interests and passions and learn at their own pace.
c. **Internationalisation of Higher Education:** The NEP 2020 promotes the internationalisation of higher education by allowing foreign universities to set up campuses in India and vice versa. This will help to raise the quality of education and provide students with a wider range of options.

d. **Skill-based Education:** The NEP 2020 emphasises the development of skills among students, which is essential for their employability. The policy proposes the integration of vocational education and skill training in higher education, which will help students to acquire practical skills.

e. **Technology Alliance:** The NEP 2020 highlights the use of technology in education. The policy proposes the integration of online learning, virtual labs, and other digital tools in higher education. This will help to enhance the quality of education and make it more accessible to students.

f. **Research and Innovation:** The NEP 2020 aims to promote research and innovation in higher education. The policy proposes the establishment of research clusters, innovation centres, and technology parks in universities. This will help to foster a culture of research and innovation and make India a hub of innovation.

Overall, the NEP 2020 has the potential to transform the higher education system in India and make it more relevant to the needs of students and the society.

Overall, the NEP 2020 is a forward-looking policy that aims to transform the education system in India. It has the potential to address some of the long-standing challenges in Indian education, and equip students with the skills and knowledge required to succeed in the 21st century.



☞ "A good conscience is a continual Christmas." -Benjamin Franklin

## " INDIAN HERITAGE"

**Lt. (Dr.) Pravesh Kumar, Associate NCC Officer**
**SUO Siddhant Srivastav, NCC Cadet**

Indian Heritage dates back several centuries. It is vast and vibrant. Flora and fauna music and art architecture, classical dance and the initiated secular philosophy of its people are the highlights of India's treasure. Ever since the beginning we have preserved culture and tradition beautifully for our upcoming generations. We can never forget our tradition and culture as they are embedded in us and are an inseparable part of our lives no matter how far we plan to reach and how much we have progressed in all these years.

In India people from numerous religions, caste and creeds reside in the same country and so it is the land of diversified culture and traditions. Each religion and caste has its own tradition and customs. Each religious group follows the culture and has a deep own unwavering faith and underlying roots.

"Unity in diversity"- this depicts India very well. The range of Indian heritage is also quite vast. As the number of religions is quite innumerable in India, so does the diversity and so does the Heritage sites. One will find various historical Heritage sites in every corner of India. This Heritage site was built decades ago and still stands alive with all the significance. These historical moments and sides are proof of how India witnessed the footsteps of various religions, dynasties and traditions.

Indian history is as rich as its culture. If we look at the architecture Marvels of the heritage sites such as Hampi Khajuraho Taj Mahal Lal, kila qutub minar fatehpur Sikri , bhul bhulaiya this still hold immense significance in terms of their marvellous art and engineering construction and labour behind each site . Hence, as responsible citizens, it is our duty to take care of these Indian heritage sites and monuments so that these could be preserved and witnessed by our future generation as well.

Last but not least, Indian Heritage: a gift from the Older Generations.



☞ "A strong foundation at home sets you up for a strong foundation at work." -Robin Sharma

## "THE CUSTOMS OF INDIA"

**Lt. (Dr.) Pravesh Kumar, Associate NCC Officer**

**SUO Siddhant Srivastav, NCC Cadet**

The custom of India depicts a very colourful Panorama. There are certain customs which are prevalent in a particular religion and summer common to all religions of the country. Indian festivals are famous around the world. Most of the festivals are related to the change of weather and crop harvesting since India is an agro based economy. The most famous Indian festivals are Diwali, Holi, Dussehra and Basant Panchami. There are certain religious customs which pertain to a particular religion only like mundan ceremony in Hindus and naming ceremony in Sikhs . There are certain customs regarding dresses and ornaments of women. The custom and traditions of India though varied has binding force which ultimately serves as a unifying factor of secular India.

## "CHARACTER IS DESTINY"

**Lt. (Dr.) Pravesh Kumar, Associate NCC Officer**

**SUO Siddhant Srivastav, NCC Cadet**

A fatalist believes in destiny. According to him fate is a pre-written thing, can't be change or make by the human being. Such people believe that a man's fate is pre ordained by God, and man has no power over his fate. To such people, destiny is a character. While many persons believe that man is the maker of his own destiny and fate. A man who wins, is the man,who things he can.

A man can change his fate , create his fortune, who believes in himself, has positive attitude, strong will power, firm determination, zeal to achieve the goals. Character is nothing ,but these qualities, which shapes the conduct of a person. So character is the real destiny and it is wrong to think that destiny is somewhat a pre-written thing. God also helps those who help themselves.



☞ "Act as if what you do makes a difference. It does." -William James

## Chemistry: A Catalyst for Progress in Science and Society

Mohd Kamil Hussain (Ph.D.)
Assistant Professor
Department of Chemistry,
Govt. Raza P.G. College, Rampur

Chemistry is often referred to as the central science because it acts as a bridge between different scientific disciplines such as physics, biology, medicine, and engineering. It plays a fundamental role in meeting our basic needs, impacting areas like clothing, food, shelter, energy, health, and environmental well-being. Chemical technologies contribute significantly to our quality of life by offering solutions to health, material, and energy-related challenges. A deep understanding of chemical processes helps us make sense of numerous physical and biological phenomena, providing a solid foundation for comprehending the world we inhabit. Moreover, studying chemistry opens doors to diverse career opportunities. A degree in chemistry equips individuals for roles in industry, education, and government, and can serve as a stepping stone for further specialization in related fields. Even in times of economic uncertainty, chemists remain in high demand, making it a versatile and rewarding field of study with applications across a wide range of sectors, ensuring a continued need for skilled professionals in various fascinating and impactful domains.

### 1. Career opportunities in chemistry

A degree in chemistry can also serve as a platform for further exploration in various related fields. Individuals who have studied chemistry have the potential to pursue a wide array of career options. Even during periods of high unemployment, chemists consistently remain among the most sought-after and employed scientists. Consequently, chemistry finds applications across a wide spectrum of industries, creating a substantial demand for competent professionals in numerous fascinating sectors.

### 1.1 Forensic expert

Forensic sciences hold global significance, serving to resolve civil disputes and ensure the just enforcement of criminal laws and government regulations. When impartial, scientific analysis is essential to uncover the truth and deliver justice, forensic scientists are called upon. Their role involves collecting, examining, and assessing potential evidence found at crime scenes. Such evidence can originate from various sources, including crime scenes,

accident investigations, and forensic toxicology assessments to determine intoxication or poisoning. DNA analysis from victims aids in identifying perpetrators in cases of physical or sexual assault and can lead to convictions or the exoneration of innocent individuals. In light of significant advancements in analytical chemistry and molecular biology, analytical science's role in forensic investigations has grown increasingly vital. Forensic scientists' expertise provides crucial scientific evidence linking suspects to crime scenes, ensuring the pursuit of justice and truth in legal proceedings.

**1.2 Chemical engineer**

Chemical engineers play a crucial role in designing new chemical processes and optimizing existing ones to turn raw materials into desired products efficiently. Their work combines chemical, mathematical, biological, physical, and statistical principles to enhance production methods. Typically, a bachelor's degree in chemical engineering or a related field is required, with real-world experience being valued. Chemical engineers find employment in industries such as biotechnology, energy, pharmaceuticals, food and drink, and more, where large-scale raw material transformation is essential for product manufacturing.

**1.3 Toxicologist**

Toxicology is a science that studies the harmful effects of chemicals, substances, and conditions on humans, animals, and the environment. It assesses potential adverse effects of materials, chemicals, medicines, natural elements, and radiation on health and the environment. Often called the "Science of Safety," toxicology has evolved from examining poisons to focusing on safety. Toxicologists specialize in various areas, including pharmaceuticals, forensics, and industrial applications, ensuring safety in diverse contexts, such as drug development and forensic investigations. They play a vital role in safeguarding human and environmental well-being.

**1.4 Certified Waste Management Professional (CWMP)**

Rapid urbanization has led to significant challenges in managing hazardous waste, which includes toxic substances like mercury, lead, arsenic, and cadmium. Improper disposal can result in severe health problems, such as cancer and organ damage. The Certified Waste Management Professional (CWMP) program certifies experts in waste reduction, pollution control, hazardous waste management standards, transportation, treatment, storage, disposal, and waste reporting. This certification ensures responsible management of hazardous and non-hazardous solid waste, addressing critical environmental and health concerns.

### 1.5 Quality control chemist

Quality control chemists play a crucial role in ensuring accuracy and compliance in various industries like pharmaceuticals and manufacturing. They use industry-specific standard methods to prepare, measure, and test samples, materials, and products, working within teams. Their responsibilities encompass testing raw materials, in-process samples, product stability, and cleaning validation samples. Quality control chemists require a deep understanding of chemistry and analytical techniques. They adhere to regulatory guidelines like Good Laboratory Practice (GLP) and Good Manufacturing Practice (cGMP) and possess analytical, critical thinking, problem-solving, and communication skills. They oversee junior staff and contribute to both individual and team success.

### 1.6 Biochemist

Biochemists explore the molecular behaviour of living organisms, studying the impact of pharmaceuticals, drugs, and food on biological functions. Their research spans medicine, agriculture, and environmental applications, aiming to enhance our quality of life. Biochemists typically work in well-equipped laboratories, with roles in research, teaching, and consulting. Career options for biochemistry graduates extend to forensic science, analytical chemistry, biomedical science, clinical research, and toxicology, offering diverse opportunities beyond traditional biochemist roles. Work environments primarily involve indoor laboratory settings, but may also include classrooms or consulting roles in hospitals.

### 1.7. Pharmacologist

Pharmacologists study medicine's effects on the body, researching new drugs and their chemical components. The pharmaceutical industry is a rapidly growing multibillion-dollar sector, expected to reach $1,700 billion by 2025, particularly fuelled by the COVID-19 pandemic. Increased funding for drug research and testing has boosted demand for pharmacologists. Biology and chemistry are essential subjects for a career in this field, and undergraduate pharmacy programs may have varying eligibility requirements.

### 1.8 Certified Professional - Food Safety (CP-FS)

CP-FS certification holders have diverse career opportunities in roles such as quality assurance or control manager, facility manager, food-safe chemical supplier, and regulatory inspector/investigator within retail food settings. They can evaluate facility plans, assess food safety programs, understand foodborne illness prevention, and apply sanitation procedures. These professionals also analyze food chemical properties, ensuring purity and safety for consumption through testing.

**1.9 Petroleum Chemist**

Petroleum chemists are responsible for researching and developing oil-based products such as fuel and polymers. They may be responsible for producing novel polymers for fibres and resins, as well as inventing catalysts for use in refining. Petroleum chemists are employed by a wide range of organisations that work to develop, produce, improve, or regulate petroleum products. They may be recruited by these firms for a variety of reasons, including corporate government relations, public outreach and risk messaging, refinery process improvement, petroleum product development and improvement, and other roles. Organizations that hire petroleum chemists typically include:

- ✓ Petroleum and petrochemical companies
- ✓ Processes development companies for the oil industry.
- ✓ Companies that supply chemicals for petroleum companies
- ✓ Research, development and quality control laboratories
- ✓ Environmental organizations

**1.9 Material Chemist**

Materials chemistry focuses on designing and creating materials with unique physical properties, like magnetism or catalysis. It also involves characterizing and understanding these substances at the molecular level. Materials chemists study various natural and synthetic materials such as glass, rubber, alloys, and polymers. They use this knowledge to enhance existing materials or develop entirely new ones for diverse applications. Professionals in this field find employment in biotech companies, government agencies, computer manufacturing, oil and gas industries, and academia.

**1.9 Academics**

Chemistry teachers aim to enhance student interest by making chemistry education more relevant. This article explores the importance of chemistry education and how teachers' perceptions of "chemical literacy" evolve. Real school practice influences these perceptions. A passion for academics could lead to a teaching career, with a doctoral degree preferred for university positions and a master's degree required for school-level teaching.

**2 Opportunities in Pharmaceutical Industry**

Natural product chemists extract medicinal compounds from plants and trees using methods like solute-solvent extraction and chromatography. These compounds, often in limited supply, undergo structural analysis with techniques like mass spectrometry and UV spectroscopy. Pharmaceutical industries scale up production, while synthetic chemists

create cost-effective synthetic routes with patents for protection. Research explores compound variations for new medicines. In-silico reactions assist in testing, making chemistry crucial in pharmaceuticals. Students aiming for this field must understand chemical bonds and life processes for drug development.

**2.1 Drug Discovery and Chemistry**

Drug discovery is a multi-stage process to create safe, effective drugs. Chemistry plays a central role in drug development, encompassing synthesis, medicinal principles, and formulation design. Understanding a drug's physical and physicochemical properties is essential for designing its dosage form. Beyond discovery, drugs undergo rigorous testing and regulatory approval before reaching the market. Chemistry underpins every aspect of this journey, from initial development to final approval in the pharmaceutical industry.

**2.2 Pharmaceutical Industry in India**

India is a major player in the pharmaceutical industry, contributing nearly 20% of global generics and exporting vaccines to 150 countries. It ranks third in volume and 14th in value. The Indian pharmaceutical market is poised for substantial growth, with over 10,500 manufacturing units and nearly 3,000 companies, offering ample placement opportunities for students. India's pharmaceutical sector benefits from a large pool of talented scientists and engineers. Moreover, Indian pharmaceutical firms supply over 80% of the global antiretroviral drugs for AIDS treatment, highlighting their significant global impact.

**2.3 Career Opportunities for Chemists in Pharmaceutical Industries**

The pharmaceutical industry offers diverse career opportunities for motivated undergraduates, postgraduates, and doctoral students with backgrounds in pharmaceutical and applied sciences, particularly those with chemistry as a core subject. The industry encompasses drug design, development, analysis, and testing. Adhering to international standards like ISO 9000, Good Manufacturing Practice (GMP), and Good Laboratory Practice (GLP) ensures high-quality products. Departments such as production and quality control (QC) focus on product quality and standards, while quality assurance (QA) oversees the entire manufacturing process. Chemistry graduates, equipped with skills in instrument handling, spectroscopy, chromatography, and more, find roles in QC, conducting tests to meet stringent standards.

# Identifying Barriers and Opportunities For G20 Countries to Accelerate the Deployment Of Renewable Energy Technologies.

**Dr. Rekha Kumari, Assistant Professor**
**Government Raza P.G. College, Rampur (U.P.)**

Governments have developed and executed a variety of public policies to promote the development and use of renewable energy globally in order to secure energy security and address global issues like climate change and environmental degradation. The topic of this article is potential methods for assessing and enhancing the global competitiveness of the G20's renewable energy sector. By creating a revised Diamond Model in relation to Porter's theory of industry competitive advantage, it offers an analytical framework for evaluating the national renewable energy competitiveness of the G20 members, conducts an extensive investigation into the primary driving forces for the renewable energy industry, and presents a reliable competitiveness assessment of the present and future of the G20's renewable energy industries, including solar, wind, hydropower, and biomass. The research also suggests a series of policy suggestions based on the G20's global analysis to assist decision-makers in the assessment and selection of methods for boosting their country's competitiveness in renewable energy. Our findings could better assist worldwide efforts to approach the sustainability of global energy use by providing a valuable reference for both policy makers and industrial end-users.

**Keywords**

Renewable energy, Industry competitiveness, Diamond Model, Composite index of renewable energy competitiveness (CIREC),Country-based analysis, Policy recommendation

# Expenditure Pattern of Students

**-A case study of University of Allahabad (Main Campus)**

Ameen Uddin Ansari
Assistant Professor, Economics

This was the case study relating to the expenditure pattern of students of University of Allahabad (Main Campus) and study was undertaken with a view to focus on the economic problems of delegacy students and the cost of studying in this university for some defined courses. The defined courses undertaken for the purpose of the study were of general in nature like Bachelor of Arts, Science and Commerce along with some Master courses like Master of Arts, Science and Commerce. These general courses are such that major portion of the students are the part of such courses in all the universities offering such courses. Another reason for selecting these courses for the purpose of the study was that the fee of these general courses was affordable in nature in almost all the central and state universities in India providing a level playing field to each and every section of the society.

From the students' view point, the expenditure of a student can be broadly classified into two categories. First, academic expenditure is the expenditure spent on course fee, library fee, books, copies, newspaper and stationary items etc. Second, non academic expenditure is the expenditure spent on the pursuance of course other than the academic expenditure like food expenditure, expenditure on room rent, mobile recharge, dressing, hair styling, entertainment, travel cost etc. In order to study the expenditure pattern of students, the data on monthly expenditure of a student were collected from 60 respondents through the well administered questionnaire method. The questions on monthly allowance from where they get (i.e. whether they get from parents or earn from offering tuition/doing part time job) and the amount of money spent on the above heads were asked in the questionnaire.

The study observed that the academic expenditure constituted a small part of the total monthly expenditure varying between the ranges of 10 percent to 15 percent of the total monthly expenditure while non academic expenditure constituted the rest part of the total monthly expenditure. In the non academic expenditure, room rent and food expenditure

were the major head of the total monthly non academic expenditure and these together constituted 75 percent of the total monthly non academic expenditure and 60 percent of the total monthly expenditure if they shared the room with a partner. The same facts and figures were observed when the data were annualized using the average method. As a generalization to these findings over the students' community, these findings were found to be compatible with the other universities of non metropolitan city.

During the survey, the most of the students were also asked, “How do they arrange money when they face shortage of money due to the gap between monthly allowance (income) received from their parent and the expenditure incurred by them.” As a result from the analysis of responses, It was observed that 70 percent of the total respondents often faced shortage of money and they used to borrow with their acquainted and a very few students were in favor of self earning and besides, they seldom used to ask extra money from their parent in order to fill the gap.

From the study, it can be concisely concluded that the major economic problem of a student is to meet expenditure on food and house rent with a given monthly allowance and borrow money in case of the shortage of money. As a solution to the above economic problems, the study suggests that a measure is needed to be put in place in order to make an effective control over the spiking room rent and a monthly house rent allowance can also be provided to them. The study further suggests that in order to lessen the burden of food expenditure of a student, a scheme of student ration card can be implemented under the national food security mission 2013. Last but not the least; the student credit card scheme can be launched in line with the Kisan credit card scheme (1999).

☞ "Discipline is the bridge between goals and accomplishment." -Jim Rohn

# From Financial Literacy to Financial Freedom

Dr. Meenu Chaudhary
Assistant Professor, Faculty of Commerce

Financial freedom is a dream that many young people in India aspire to achive. However, achieving financial freedom requires financial literacy. discipline, and planning. Unfortunately, financial literacy is not widely taught in schools or colleges in India, leaving many young people illequipped to manage their finances. In this article, we will throw some light on the importance of financial literacy of youth in India, and how it can lead to financial freedom.

Financial literacy is the ability to understand and manage personal finances effectively. It includes knowledge of basic financial concepts such as budgeting, saving, investing, and managing debt. Financial literacy is important for young people in India for several reasons, some of these are given below-

* **Empowerment :** Financial literacy empowers young people to make informed decisions about their money. It gives them the knowledge and skills to manage their finances effectively , avoid financial pitfalls, and achieve their financial goals.

* **Career Planning :** Financial literacy is also essential for career planning. Young people who understand how to manage their finances are better equipped to choose a career that aligns with their financial goals, rather than choosing a job based solely on salary.

* **Debt Management :** Debt is a major issue for young people in India. Financial literacy helps young people to manage debt effectively and avoid the debt traps that can lead to financial ruin.

* **Retirement Planning :** Retirement planning is often neglected by young people in India. Financial literacy can help young people understand the importance of planning for retirement early, and the various investment options available to them.

* **Entrepreneurship :** Financial literacy is also essential for young entrepreneurs.It gives them the knowledge and skills to manage their finances effectively and grow their businesses.

Financial lieteracy is becoming the need of the hour for youth. With the changing economic landscape, globalization, and technological advancements, financial literacy has become more important than ever before. Many young people today are burdened with student

loans, credit card debts, and other financial obligations. Additionally, they are facing a rapidly changing job market, where job security is low, and the competition is high. In such a scenario, financial lieteracy is essential to help them manage their finances, make informed decisions, and secure their financial future.

Further more, financial literacy is not just about managing personal finances. It also plays a vital role in driving economic growth and development. Young people who are financially literate are better equipped to become entrepreneurs, create jobs, and contribute to the overall economic progress of the society.

Following are some ways that can help youth to achieve financial freedom-

* **Set Financial Goals:** The first step towards achieving fincancial freedom is to set clear financial goals. These goals can include saving for a down payment on a house, paying off student loans, or building an emergency fund. Having clear goals will heop you to stay focused and motivated.

* **Create a Budged:** Creating a budget is essential for managing your finances effectively. Start by tracking your income and expenses for a month, and then create a budget that allocates your income towards your financial goals and expenses.

***Reduce Expenses:** One of the most effective ways to save money is to reduce expenses. Start by identifying areas where you can cut back on expenses, such as eating out less frequently or cancelling subscriptions that your don't use.

* **Save Regularly:** Saving regularly is essential for building wealth over time. Set up automatic transfers to your savings account each month to ensure that your're saving consistently .

* **Invest Wisely:** Investing is essential for growing your wealth over time. Educate yourself about different investment options and choose those that align with your financial goals and risk tolerance.

* **Manage Debt:** Debt can be a significant barrier for achieving financial freedom. Make a plan to pay off your debts, starting with those that have the highest interest rates.

* **Buld an Emergency Fund:** An emergency fund is essential for protecting your financial stability.Aim to save at least three to six months' worth of living expenses in an emergency fund.

***Live Below Your Means:** Living below your menas is essential for achieving financial

freedom. This means avoiding overspending and instead saving or investing the extra money.

*** Plan for Retirement:** Start planning for your retirement early by contributing to retirement accounts. Aim to save enough to live comfortably in retirement without having to rely on Social Security benefits alone.

*** Seek Professional Help:** If you're struggling to manage your finances or need help with investment decisions, consider seeking professional help from a financial advisor or planner.

It can be concluded that financial literacy is crucial for youth in today's world and investing in financial education and awareness for them will pay off in the long run. Achieving financial freedom requires discipline, planning and a commitment to financial literacy. By setting clear financial goals, creating a budget, reducing expenses, saving regularly, investing wisely, managing debt, building an emergency fund, living below your means, planning for retirement, and seeking professional help when needed, Indian youth can initiate their journey towards financial freedom.

## Women Empowerment

Maha Urooj
M.A. (English) II Year

Women empowerment is a widely discussed term in today's society and talks about the upliftment of the female gender. First, it is a long term and revolutionary protest against discrimination based on sex and gender. Women empowerment refers to educating woman and helping them to build identity of their own.

In our patriarchal society, women are expected to move themselves according to the wishes of the man who feed them. They are not allowed to have an individual opinion or an independent identity . Empowering women involves encouraging and socially independent. A woman must be entitled to pursue what she loves and develop into a fully functioning human. Her individuality must be nurtured and acknowledged women empowerment has led millions of woman across the globe to pursue their dreams. They are steadily moving forward in life with strong determination, respect and faith.

# Dreaming Big Enough

Mifra Khan
M.A. final English

Walking up dreaming about something you want very passionately is not a bad thing. One can dream about anything they want. Having dreams not simply means what you see while sleeping. It comes from within and you have to mold your thoughts accordingly. Dreams are not just the slideshow but the instance of your thoughts which you think all the time . Do you think such famous people became famous because they decide the one day they want to No, but they have dreams and they have followed their dreams which led them to follow the right path in their life which they ultimately want to become. All you need is a passsion. When we dream big, We see a higher level of connection and ascension. To consider a big dream is to consider and this is really a good thing.

Dreaming is a multi step process. Although coming up with the idea of how you are going to spend your rest of life is important but acting upon that idea is half the battle. Your dream has nothing to do with what other people think of you. Other people want to see you as a doctor but you might be dreaming about becoming a painter. This is totally not wrong because you have the right of dreaming about everything , what your heart desires.

We have found many people who limit their dreams. They dream according to the situations they are standing at the right moment. Then that is not dreaming big enough. For example: perhaps you would really choose the job that is most suitable to you rather than the career your actually want but that is beyond your grasp at the current moment. However big dream light years from where they stand!

A truely big dream is an ultimate manifestation. A big dream is your Soul's way of reaching the highest vibration from this place in universe. If you know you are truely dreaming big enough, then your soul will let you dream manifest and your heart sing.

So what do you think? Are you dreaming enough? Are your dream holds so much power that they can withstand any situation and will not be break by you? that's how your dreams should be. if so, well done!

It will take higher level of path of trust in oneself to consider possibilities like these. Many people even don't dare to dream.

If you think that your are not dreaming enough, then you have to move your training wheels bit speedily and stretch a little higher. Let your imagination runs into wild and see where it takes you!

"When you reach for the stars you may not quite get one but hour won't come up with a handful of mud either" Leo Burnett



☞ "Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise." -Benjamin Franklin

## EDUCATION

Munazir Pasha (M.A First Year)

Education has a very important role in our life. Education is the word that teaches a person to live life. Education is the basis of human life. Education should be for both men and women because both together make a healthy and educated society.

The first school of any person is his family and mother is said to be the first Guru. Education is that weapon with the help of which one can face the biggest difficulties. Without education we can not do any work well. Education is useful in every area of our life. Good education helps in removing it all the differences of the society . Uneducated person is treated like an animal.

Education is such a thing which removes the animality of man and teaches him to live life. The holistic development of the human mind is possible only through education. It improves our knowledge skills, confidence level and personality. Education does not mean bookish knowledge but an education that can really make a man human, identify his values. The message of love, the message of humanity can be spread in the society only through education. Education is very useful in everyone's life. Education is what sets us apart from other living beings on earth. It make man the smartest creature on earth. It empowers human being and prepares them to face the challenges of life.

## I Love Nature

Rahimeen
Class- M.A, Final Year (English)

I love Sound of birds
So early in the morning
I like the Sound of poppies
Soon after they are born.
I love the Smell of Flowers.
And the taste of Honey From bees
I love the Sound the Wind makes
When it's blowing through the trees.
I love the way the Sky looks.
On a bright and Sunny day.
And even when it's rainy
I love the Shades of the grey.
I love the smell of the Ocean
the Sound of waves upon the Sand.
I love the feel of sea Shell and
How they look in my hand.
And when the Sun in gone. I love the
Moon that Shines so bright.
I love the Sound of Crickets and other
Creatures of the night.
So when I lay me down to Sleep.
I thank the lord above.
For all the things of nature and more.
All the things I love.



☞ "Either I will find a way, or I will make one." -Philip Sidney

## I will fight for my dreams

Muskan Shahvez Khan
M.A. Final Year

Giving up that's not in my blood
And what does giving up minds
I don't know
Do you know?
It's time to sharpen the weapons
And this time I won't tell you how it is done
It's time to End this part
While full filling Our dream
It is the time to be a conquer
Of your dreams
It's time to make the blur vision
To the complete dream
The power of Self believe
To make things possible of what we dreamt of
you are the only inspiration for your dreams
Did you hear that
your dreams are saying something
They want to be completed by you
And I want to say is
That I am Seeing the magic happening
And your will make it possible
And one day your dream will be completed.

## This poem is dedicated to All the Teachers

Raja Hayat
B.Com (III Year)

Everyday you greet your students with a Smile,
no matter you are on 'Zoom' or on ' WhatsApp',
Children's are having a faith on you,
that is why you always stay true.....
We can't might see you face to face,
but your teachings always help us in our race,
You are a motivation to us,
to each child unique & special,
You are a beautiful , Talented Gem,
Some days of exams are really frustrating,
to those little faces,
their inspiration is your face.
There is a special pride for what you do,
there is a lot of love for you,
for those little faces,
You are GEM for all of us.

## Happiness

Hiba Khan
B.Com, Ist Year

I Asked an Artist
How do you make
such Beautiful
things from stone?
He Replied
Beauty is already Hidden there, I just
Remove the extra stone
Your happiness is hidden within You
Just REMOVE your worries!



☞ "Energy and persistence conquer all things." -Benjamin Franklin

# Beautiful Garden of Our Childhood is calling you.....

Sahiba Musarrat
M.A. (English)

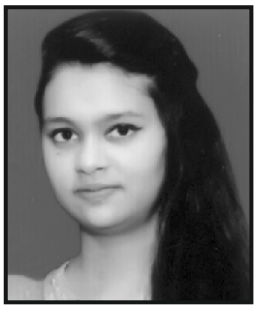

Nature is awesome.....
Love is in the air, O my heart, from somewhere
Go find my loved ones & bring them here....
Nature is awesome , love is in the air.....
The nostalgia thoughts of my childhood days
are infinite, which appears in my dreams every night
Tell them season is young, & I'm longing for them.
The dark clouds shade above, or tormenting this
lonely women, i'm affraid it 'll kill me
You can't trust the rains.....
Nature is awesome, love is in the air
where ever the Sun goes, May you all be protected from it's rays.
Beautiful garden of our childhood is calling you
come & I'll make for your, of canopy with my eyelids
of canopy with my eyelids, love is in the air.....
I'm wondering all alone in old memories....
can please someone take me back in my old days.....
After all now long can one, Bear the loneliness....
The days have became cruel, The nights are fatal
love is in the air.....
The nights & this science, these dreams like sceneries....
Are these fire fleees, or wave the stars descendid on earth
My eyes are dream less
My eyes are fear less
The world appears....
Love is in the air....
O my heart, from some where , Go first my loved ones
& bring them here....
Love is in the air....



☞ "Every goal can be achieved if you break it down into enough small parts." -Brian Tracy

## We and Trees

Sagar Raj
Class M.A. Final (English)

Here here here.
When ever I feel fear.
I go to the trees , talk to the leaves
Trying to take rest,
under the tree in the west
When the Sun light touches my body from.
my toes to my head
The peace I feel I can't express
Did't you ever went to a tree, talked to the leaves?
If you have never gone to the trees and talked to
a leaves. So , when ever you feel like me.
Go to the trees talk to the leaves and be fearless as me!!

## THE BEAUTY OF RAIN

Maryam Faizan Shamsi
B.Sc. II (Bio)

The voice of Nature is mesmerizing.....
With each drop of rain ; the inner joy is Rising.....
These rains make the flowers to Blossom.....
With the cool Breeze ; the weather become Awesome.....
The Burning Sun made the Earth lifeless....
But from the Heaven ; these Tiny pearls make it feel blessed.....
The crop in the fields began to Prosper.....
The Farmer's face ; with happiness ; Shine brighter.....
Also ; the little ones enjoy it to the fullest.....
Make the paper Boats and float them with Zest.....
The Rain brings smile to Everyone's face.....
No discrimination ; based on Age, colour or Race.....

## A Desire to Hear

Taruna Jogesh
B.com II Sem.

Oh dear! Hear the things, the ancient things you got.
People might live, but the things will not
The Beauty of History that will always want to talk
The unheard stories of love & war will give you a knock.
Alas! we almost lost them
Once the walls of castle were not less than a gem
Some stories might-tell you the sacrifice of queens.
Other will lead you to the tears of a soldier father's teen
The doors of the palace must have faced so many of gloomy days.
But the trees out there would have also danced in the blooming happy rays.
The oldest bricks dated in 80s and 90s are the living proof.
That once the people must have excitedly put on their roofs
What is 'JANE EYRE'!!......
Someday sit under the old trees,
They will narrate you the real royal
couples love stories.
Take a pause from ' The last Sacrifice' and
walk through these ancient tiles.
Then every stone of those streets will weep
about the grief once spread across miles .
Oh dear! hear the ancient things you got;
People might lie but those things will not.